मम्मी

सआदत हसन मण्टो

बम्बई बुक हाउस
महम्मदअली रोड,
बम्बई ३.

पहिली बार -- फरवरी १९५४

मूल्य २॥)

अनुवादक
मुगनी अमरोहवी

मुद्रक -- बम्बई प्रेस, बम्बई ३.

अनुक्रमणिका

मण्टो की कहानियाँ हिन्दुस्तान के मध्यम वर्ग के अपराधी अन्त:करण की पुकार है। इसी लिये मण्टो उर्दू का सबसे ज्यादा बदनाम कहानी लेखक हैं। और वह बदनामी जो मण्टो को मिली है वह लोक प्रियता और प्रसिद्धि की तरह केवल प्रयत्न करने से प्राप्त नही की जा सकती। इसके लिये कलाकार मे असली जौहर होना चाहिये और मण्टो का जौहर उसके क़लम की नोक पर नगीने की तरह चमकता है।

मण्टो ने उन चरित्रो का चित्रण किया हैं जिनसे पूँजीवादी प्रथा ने उनकी मनुष्यता छीन ली हैं। उन पर एक दृष्टि डालिये। उनमे एक टागे वाला है जो किसी टामी से बदला लेने की फिक्र मे हैं। एक चने वाला हैं जो अपने मकान मालिक सेठ की गाली सुन कर उसका खून पी जाना चाहता है लेकिन विवशता मे खुद भी सिर्फ गाली दे सकता है। एक दल्लाल है जिसकी मर्दानगी का एक रण्डी ने अपमान कर दिया है। एक

रण्डी है जिसके सीने में उसका औरतपन जाग उठा है और वह समाज से बदला लेने के लिये अपने कुत्ते के साथ सो जाती है। एक बच्चा है जो अपने बाप की मूर्खता पर विसूर रहा है और बाप उसके भोलेपन के सामने और भी मूर्ख मालूम होता है। एक अल्हड लडकी है जो जीवन के तौर तरीके सीख रही है और अपने दिल की अधूरी भावनाओ को पूर्ण बनाने के लिये बेचैन है। एक चलती फिरती औरत है जो गर्भवती औरतों के पेट पर तेल डाल कर पैदा होने वाले बच्चो के बारे मे भविष्यवाणी करती रहती है। एक थका मान्दा नवयुवक है जो अपने एकाकी जीवन की उदासीनता को दूर करने के लिये एक काल्पनिक प्रेमिका बनाकर उसके प्रेम मे मग्न रहता है ... यह एक अच्छी खासी पिक्चर-गैलरी है जिसमे हमारे मध्यमवर्ग के समाज के बिगड़े हुये चित्र लगे हुये है।

यह सब पहिले कभी इंसान थे या उनमें इंसान बनने की योग्यता थी, लेकिन इस समाज ने, जिसकी बुनियाद लूट खसोट पर है, इन सबको जानवर बना दिया है। वह जानवर जिन की सूरते इसानो की सी है, लेकिन वह फिर भी इसान नही है। मण्टो झुझलाता है। वह उनकी आत्मा के अन्दर झाककर देखता है और उसे यह देखकर आश्चर्य होता है कि उनके सीनो के अन्दर इन्सानी दिल धड़क रहे है....।

—सरदार जाफ़री

जानकी

पूना में रेसो, का मौसम शुरू होने वाला था कि पेशावर से अजीज ने लिखा कि मै अपनी जान पहचान की एक औरत 'जानकी' को तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। उसको या तो पूने मे या बम्बई की किसी फिल्म कम्पनी में नौकर रखा दो। तुम्हारी जान पहचान काफ़ी है। उम्मीद है तुम्हे ज़्यादा दिक्कत नही होगी।

दिक्कत का तो इतना ज्यादा सवाल नही था, लेकिन मुसीबत यह थी कि मैंनें ऐसा काम कभी किया ही नही था। फिल्म कम्पनियो मे अक्सर वही आदमी औरते लेकर आते है, जिन्हे उनकी कमाई खाना होती है। जाहिर है कि मैं बहुत घबराया, लेकिन फिर मैंने सोचा अजीज

इतना पुराना दोस्त है। जाने किस विश्वास के साथ उसने जानकी को मेरे पास भेजा है। उसको निराश नहीं करना चाहिये। यह सोच कर भी एक प्रकार का सन्तोष हुआ कि औरत के लिये अगर वह जवान हो, हर फिल्म कम्पनी के दरवाजे खुले है। इतनी चिन्ता की बात ही क्या है। मेरी मदद के बिना भी उसे किसी न किसी फिल्म कम्पनी मे जगह मिल जायगी।

खत मिलने के चौथे दिन वह पूना पहुँच गई। कितनी लम्बी यात्रा तय करके आई थी। पेशावर से बम्बई और बम्बई से पूना। प्लेटफ़ार्म पर चूंकि उसको मुझे पहचानना था, इस लिये गाडी आने पर मैंने एक सिरे से डब्बो के पास से गुजरना शुरू किया। मुझे ज्यादा दूर न चलना पड़ा, क्योकि सेकण्ड क्लास के डब्बे से एक मध्यम कद की औरत, जिसके हाथ मे मेरी तस्वीर थी, उतरी। मेरी तरफ़ पीठ करके वह खडी होगई और एडियाँ ऊँची करके भीड़ मे मुझे तलाश करने लगी। मैंने पास जा कर कहा— "जिसे आप ढूण्ड रही है, वह शायद मैं ही हूँ।"

वह पल्टी— "ओह आप!" एक नजर मेरी तस्वीर की तरफ देखा और बडे बेतकल्लुफ ढग से कहा— "सआदत साहब! सफर बहुत ही लम्बा था। बाम्बे मे फ्रण्टियर मेल से उतर कर इस गाडी के इन्तजार मे जो वक्त काटना पडा, उसने तबीयत साफ करदी।"

मैंने कहा— "सामान कहाँ हैं आपका?"

"लाती हूँ।" यह कह कर वह डब्बे के अन्दर दाखिल

हुई। दो सूट केस और एक बिस्तर निकाला। मैंने कुली बुलवाया। स्टेशन से बाहर निकलते हुये उसने मुझ से कहा– "मै होटल मे ठहरूँगी।"

मैने स्टेशन के सामने ही उसके लिये एक कमरे का बन्दोबस्त कर दिया। उसे नहा धोकर कपडे बदलने थे और आराम करना था, इस लिये मैंने उसे अपना एड्रेस दिया और यह कह कर कि सुबह दस बजे मुझसे मिले, होटल से चल दिया।

सुबह साढे दस बजे वह प्रभात नगर, जहाँ मैं एक दोस्त के यहाँ ठहरा हुआ था, आई। जगह तलाश करते हुये उसे देर हो गई थी। मेरा दोस्त उस छोटे से फ्लैट मे, जो नया नया बना था, मौजूद नही था। मै रात देर तक लिखने का काम करने के कारण सुबह देर में जागा था। इस लिये साढे दस बजे नहा धो कर चाय पी रहा था कि वह अचानक अन्दर दाखिल हुई।

प्लेटफार्म पर और होटल मे थकावट के बावजूद वह एक जानदार औरत थी। मगर ज्यो ही वह इस कमरे मे जहाँ मै सिर्फ बनियान और पाजामा पहिने चाय पी रहा था, दाखिल हुई तो उसकी तरफ देख कर मुझे ऐसा लगा जैसे कोई बहुत ही परेशान और खस्ता हाल औरत मुझ से मिलने आई है।

जब मैंने उसे प्लेटफार्म पर देखा था तो वह जिन्दगी से भरपूर थी। लेकिन जब प्रभात नगर के नम्बर ग्यारह फ्लैट मे आई तो मुझे महसूस हुआ कि या तो उसने

खैरात मे अपना दस पन्द्रह औंस खून दे दिया है या उसका गर्भ-पात हो गया है।

जैसा कि मै आप से कह चुका हूँ, घर मे और कोई मौजूद नही था, सिवाये एक मूर्ख नौकर के। मेरे दोस्त का घर जिसमे एक फिल्मी कहानी लिखने के लिये म ठहरा हुआ था, बिल्कुल सुनसान था। और मजीद एक ऐसा नौकर था जिसकी उपस्थिति वीरानी म वृद्धि करती थी।

मैंने चाय की एक प्याली बनाकर जानकी को दी और कहा-- "होटल से तो आप नाश्ता करके आई होगी, फिर भी शौक फरमाइये।"

उसने बेचैनी से अपने ओठ काटते हुये प्याली उठाई और चाय पीना शुरू की। उसकी दाहिनी टाग बड जोर से हिल रही थी। उसके ओठो की कपकपाहट से मुझे मालूम हुआ कि वह मुझसे कुछ कहना चाहती है। लेकिन हिचकिचाती है। मैंने सोचा शायद होटल मे रात को किसी मुसाफिर ने उसे छेडा है। चुनाचे मैंने कहा-- "आपको कोई तकलीफ तो नही हुई होटल मे?"

"जी? जी नही।"

मे यह सक्षिप्त जवाब सुनकर खामोश रहा। चाय खत्म हुई तो मैने सोचा, अब कोई बात करनी चाहिये। चुनाचे मैंने पूछा-- "अज़ीज साहब कैसे है?"

उसने मेरे सवाल का जवाब नही दिया। चाय की प्याली तिपाई पर रख कर उठ खडी हुई। और शब्दो को

जल्दी जल्दी अदा करके कहा– "मण्टो साहब, आप किसी अच्छे डाक्टर को जानते है?"

मैंने जवाब दिया-- "पूना मे तो मै किसी को नहीं जानता।"

"ओह!"

मैंने पूछा-- "क्यो? आप क्या बीमार है?"

"जी हाँ" वह कुर्सी पर बैठ गई।

मैंने मालूम किया– "क्या तकलीफ है?"

उसके तीखे ओठ जो मुस्कराते वक्त सिकुड जाते थे, या सिकोड लिये जाते थे, खुले। उसने कुछ कहना चाहा, लेकिन कह न सकी और उठ खडी हुई। फिर मेरा सिगरेट का डब्बा उठाया और एक सिगरेट सुलगा कर कहा– "माफ कीजियेगा, मैं सिगरेट पिया करती हूँ।"

मुझे बाद मे मालूम हुआ कि वह सिगरेट पिया ही नही करती बल्कि फूका करती थी। बिल्कुल मर्दो की तरह सिगरेट उगलियो मे दबाकर वह जोर जोर से कश लेती थी और एक दिन मे लगभग पच्छहत्तर सिगरटो का धुआ खेचती थी।

मैंने कहा– "आप कहती क्यो नही कि आपको तकलीफ क्या है?"

उसने कुवारी लड़कियो की तरह झुझला कर अपना एक पाव फर्श पर मारा-- "हाये अल्ला, मैं कैसे बताऊँ आपको।" यह कह कर वह मुस्कराई। मुस्कराते हुये तीखे ओठों की गोलाई मे से मुझे उसके दात नजर आये जो

असाधारण रूप मे साफ और चमकीले थे। वह बैठ गई और मेरी आखो मे अपनी डगमगाती आखो को न डालने की कोशिश करते हुये उसने कहा– "बात यह है कि पन्द्रह बीस दिन ऊपर हो गये है और मुझे डर है कि "

पहिले तो मै मतलब न समझा, लेकिन जब वह बोलते बोलते रुक गई तो मै कुछ कुछ समझ गया--"ऐसा अक्सर होता है?"

उसने जोर से कश लिया और मर्दो की तरह जोर से धुये को बाहर निकालते हुये कहा-- "नही! यहाँ मामला कुछ और है। मुझे डर है कि कही कुछ ठहर न गया हो।"

मैने कहा-- "ओह!"

उसने सिगरेट का आखरी कश लेकर उसकी गर्दन चाय की प्लेट मे दबाई-- "अगर ऐसा हो गया हैं तो बडी मुसीबत होगी। एक बार पेशावर मे ऐसी ही गड़बड हो गई थी, लेकिन अजीज साहब अपने एक हकीम दोस्त से ऐसी दवा लाये थे जिससे चन्द दिनो ही मे सब साफ हो गया था।"

मैंने पूछा-- "आपको बच्चें पसन्द नही?"

वह मुस्कराई– "पसन्द है-- लेकिन कौन पालता फिरे।"

मैंने कहा-- "आपको मालूम है, इस तरह बच्चे नष्ट करना जुर्म है।"

वह एक दम गम्भीर हो गई। फिर उसने आश्चर्य

भरे स्वर मे कहा– "मुझसे अजीज साहब ने भी यही कहा था। लेकिन सआदत साहब, मै पूछती हूँ, इसमें जुर्म की कोन सी बात है। अपनी ही तो चीज है। और इन कानून बनाने वालो को यह भी मालूम है कि बच्चा नष्ट कराते हुये तकलीफ कितनी होती है– बड़ा जुर्म है।"

मै एकदम हस पडा– "अजीबो गरीब औरत हो तुम जानकी।"

जानकी ने भी हसना शुरू किया– "अजीज साहब भी यही कहा करते है।"

हसते हुये उसकी आखो मे आँसू आ गये। मेरा अध्यन है, जो आदमी निष्ठावान हो, हसते हुये उसकी आखो मे जरूर आसू आ जाते है। उसने अपना बैग खोल कर रुमाल निकाला और आँखे पोछ कर भोले बच्चो की तरह पूछा– "सआदत साहब बताइये, क्या मेरी बाते दिलचस्प होती है?"

मैने कहा– "बहुत"

"झूट"

"इसका सुबूत?"

उसने सिगरेट सुलगाना शुरू कर दिया– "भई शायद ऐसा हो। मै तो इतना जानती हूँ कि कुछ कुछ बेवकूफ हूँ। ज्यादा खाती हूँ, ज्यादा बोलती हूँ, ज्यादा हसती हूँ। अब आपही देखिये न, ज्यादा खाने से मेरा पेट कितना बढ गया है। अजीज साहब हमेशा कहते रहे, जानकी कम खाया करो, पर मैने उनकी एक न सुनी। सआदत

साहब बात यह है, कि मै काम खाऊँ तो हर वक्त ऐसा लगता है कि मै किसी से कोई बात कहना भूलगई हूँ।"

उसने फिर हसना शुरू किया। मै भी उसके साथ शरीक हो गया।

उसकी हसी बिल्कुल अलग ढग की थी। बीच बीच मे घुघरू से बजते थे।

वह फिर गर्भ--पात् के सम्बन्ध मे बाते शुरू करने ही वाली थी कि मेरा दोस्त, जिसके यहाँ मै ठहरा हुआ था, आगया। मैने जानकी से उसका परिचय कराया और बताया कि वह फिलम लाइन मे आने का शौक रखती है। मेरा दोस्त उसे स्टूडियो ले गया क्योकि उसको यक़ीन था कि वह डायरेक्टर, जिसके साथ वह असिस्टैण्ट की हैसियत से काम कर रहा था, अपने नये फिल्म मे जानकी को एक खास रोल के लिये जरूर ले लेगा।

पूना मे जितने स्टूडियो थे, मैने भिन्न भिन्न लोगो के द्वारा जानकी के लिये कोशिश की। किसी ने उसका साउण्ड टेस्ट लिया, किसीने कॅमरा टेस्ट। एक फिलम कम्पनी मे उसको विभिन्न प्रकार के कपडे पहिना कर देखा गया मगर नतीजा कुछ न निकला। एक तो जानकी वैसे ही दिन 'ऊपर' हो जाने के कारण परेशान थी। चार पांच दिन लगातार जब उसे विभिन्न फिलम कम्पनियों के उकता देने वाले वातावरण मे निष्फल गुजारने पड़े तो वह और ज्यादा परेशान हो गई।

बच्चा गिराने के लिये वह रोज बीस बीस ग्रेन

कुनैन खाती थी। इससे भी उसकी तबीयत पर भार सा रहता था। अजीज साहब के दिन, पेशावर मे उसके बिना कैसे गुजर रहे होगे, इसके सम्बन्ध मे भी उसको हर वक्त फिक्र रहती थी। पूना पहुँचते ही उसने एक तार भेजा था। उसके बाद वह बिना नागा हर रोज एक खत लिख रही थी। हर खत मे यह ताकीद होती थी कि वह अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें और दवा नियमित रूप से पीते रहे।

अजीज साहब को क्या बीमारी थी इस का मुझे ज्ञान नही, लेकिन जानकी से मुझे इतना मालूम हुआ कि अजीज साहब को चूकि उससे मोहब्बत है, इस लिये वह फौरन उसका कहना मान लेते है। घर मे कई बार बीवी से उनका झगडा हुआ कि वह दवा नही पीते, लेकिन जानकी से इस मामले मे उन्होने कभी चू भी न की।

शुरू शुरू मे मेरा ख्याल था कि जानकी, अजीज के सम्बन्ध मे जो इतनी चिन्तित रहती है, केवल बकवास है, बनावट है। लेकिन धीरे धीरे मैंने उसकी बेतकल्लुफ बातो से अनुभव किया कि उसे वास्तव मे अजीज का ख्याल है। उसका जब भी खत आया जानकी पढ कर जरूर रोई।

फिल्म कम्पनियो के चक्कर का कोई नतीजा न निकला, लेकिन एक दिन जानकी को यह मालूम करके बहुत खुशी हुई कि उसका शक गलत निकला। दिन वास्तव मे ऊपर हो गये थे, लेकिन वह बात जिसका उसे

खटका था, न थी।

जानकी को पूना आये बीस दिन हो चले थे। अजीज को वह खत पर खत लिख रही थी। उसकी तरफ से भी लम्बे लम्बे मोहब्बत नामे आते थे। एक खत में अजीज ने मुझे लिखा था कि पूना में अगर जानकी के लिये कुछ नही होता तो मैं बाम्बे में कोशिश करूँ क्योंकि वहाँ अनेक स्टूडियो है। बात उचित थी मगर मैं सिनोरियो लिखने में सलग्न था, इस लिये जानकी के साथ मेरा बाम्बे जाना बहुत मुश्किल था। लेकिन मैंने पूना से अपने दोस्त सईद को, जो एक फिल्म मे हीरो का पार्ट कर रहा था, टेलीफोन किया। सयोगवश वह उस वक्त स्टूडियो मे मौजूद नही था। आफिस मे नारायण खडा था। उसे जब मालूम हुआ कि मै पूना से बोल रहा हूँ, तो टेलीफोन ले लिया और जोर से चिल्लाया– "हल्लो मण्टो! . नारायण स्पीकिग फ्रॉम दिस एण्ड... कहो क्या बात है? सईद इस वक्त स्टूडियो मे नही हैं। घर मे बैठा रजिया से आखरी हिसाब किताब कर रहा है।..

मैंने पूछा– "क्या मतलब?"

नारायण ने उधर से जवाब दिया– "खट पट हो गई हैं उनमे। रजिया ने एक और आदमी से टाका मिला लिया हैं।"

मैंने कहा– "लेकिन यह हिसाब किताब कैसा हो रहा है?"

नारायण बोला– "बडा कमीना है यार, सईद ·

उससे कपड़े ले रहा है। जो उसने खरीद कर दिये थे। खैर छोडो इसको, बताओ बात क्या है?"

मैंने उससे कहा-- "बात यह है कि पेशावर से मेरे एक अजीज ने एक औरत यहाँ भेजी है, जिसे फिल्मो मे काम करने का शौक है।"

जानकी मेरे पास ही खडी थी। मैंने अनुभव किया कि मैंने उचित शब्दो मे अपना उद्देश्य बयान नही किया। मै संशोधन करने ही वाला था कि नारायण की ऊँची आवाज कानो के अन्दर घुसी– "औरत? पेशावर की औरत? ···खू बेजो उसको जल्दी·· खू अम भी कसूर का पठान है।"

मैंने कहा-- "बकवास न करो, नारायण, सुनो। कल दकन क्वीन से मै उन्हे बाम्बे भेज रहा हूँ। सईद या तुम कोई भी उसे स्टेशन पर लेने के लिये आजाना···· कल दकन क्वीन से ··याद रहे।

नारायण की आवाज आई– "पर हम उसे पहिचानेंगे कैसे?"

मैंने जवाब दिया-- "वह खुद तुम्हे पहिचान लेगी··· लेकिन देखो, कोशिश करके उसे किसी न किसी जगह जरूर रखवा देना।"

तीन मिनिट गुजर गये। मैंने टेलीफोन बन्द किया और जानकी से कहा-- "कल दकन क्वीन से तुम बाम्बे चली जाना। सईद और नारायण दोनो की तस्वीरे मै दिखा देता हूँ। लम्बे तडगे खूबसूरत जवान है। तुम्हे

पहिचानने में दिक्कत नहीं होगी।'

मैंने एलबम मे जानकी को मईद और नारायण के विभिन्न फोटो दिखाये। देर तक वह उन्हे देखती रही। मैंने नोट किया कि मईद का फोटो उसने ज्यादा गौर मे देखा।

एलबम एक तरफ रख कर मेरी आखो मे आखे न डालने की डगमगाती कोशिश करते हुये उसने मुझ मे पूछा-- "दोनो कैसे आदमी है?"

"क्या मतलब?"

"मतलब यह कि दोनो कैसे आदमी है · मैंने सुना है कि फिल्मो मे अक्सर आदमी बुरे होते है।"

उसके स्वर मे एक टोह लेने वाली गम्भीरता थी'

मैंने कहा-- यह तो ठीक है, लेकिन फिल्मो मे नेक आदमियो की जरूरत कहाँ होती है।"

"क्यो?"

"दुनिया मे दो प्रकार के इसान है। एक प्रकार उन लोगो की है जो अपने जख्मो से दर्द का अन्दाजा करते है। दूसरी प्रकार उनकी है जो दूसरो के जख्म देख कर दर्द का अन्दाजा करते है। तुम्हारा क्या ख्याल है! कौन सी प्रकार के लोग जख्म के दर्द और उसकी जलन को सही रूपमे अनुभव करते है?" उसने कुछ देर सोचने के वाद जवाव दिया-- "वह जिन के जख्म लगे होते है।"

मैंने कहा-- "बिल्कुल ठीक। फिल्मो मे असल की

अच्छी नकल वही उतार सकता है जिसे असल की जानकारी हो। नाकाम मोहब्बत मे दिल कैसे टूटता है, यह नाकामे-मोहब्बत ही अच्छी तरह बता सकता है। वह औरत जो पाच वक्त जाय नमाज बिछा कर नमाज पढ़ती है और इश्क व मोहब्बत को सुअर के बराबर समझती है, कैमरे के सामने किसी मर्द के साथ इजहारे-मोहब्बत क्या खाक करेगी।

उसने फिर सोचा– "इसका मतलब यह हुआ कि फिल्म लाइन मे दाखिल होने से पहिले औरत को सब चीजे जाननी चाहिये।"

मैंने कहा– "यह जरूरी नही। फिल्म लाइन मे आकर भी वह ये चीजे जान सकती है।"

उसने मेरी बात पर गौर न किया, और जो पहिला सवाल किया था फिर उसे दोहराया– "सईद साहब और नारायण साहब कैसे आदमी है?"

"तुम विस्तार से पूछना चाहती हो?"

"विस्तार से आपका क्या मतलब है?"

"यह कि दोनो मे से आपके लिये कौन बेहतर रहेगा?"

जानकी को मेरी यह बात बुरी लगी।

"कैसी बाते करते है आप?"

"जैसी तुम चाहती हो!"

"हटाइये भी!" यह कह कर वह मुस्कराई-- मै अब आपसे कुछ नही पूछूगी।"

मैंने मुस्कराते हुये कहा-- "पूछोगी तो मैं नारायण

की सिफारिश करूँगा।"

"क्यो?"

"इस लिये कि वह सईद के मुकाबले मे बेहतर इसान है।"

मेरा अब भी यही ख्याल है। सईद एक शायर है। एक बहुत ही निर्दयी प्रकार का शायर। मुर्गी पकड़ेगा तो जिबह करने के बजाये उसकी गर्दन मरोडेगा। गर्दन मरोडकर उसके पर नोचेगा। पर नोचने के बाद उसकी यख़नी निकालेगा। यखनी पी कर और हड्डियाँ चबाकर वह बडे आराम और सन्तोप के साथ एक कोने मे बैठकर उसी मुर्गी की मौत पर एक कविता लिखेगा जो उसके आंसुओ में भीगी होगी।

शराब पियेगा तो कभी बहकेगा नही। मुझे इससे बड़ी तकलीफ होती है, क्यो कि शराब का मतलब ही मर जाता है। सुबह बहुत धीरे धीरे बिस्तर पर से उठेगा। नौकर चाय की प्याली बनाकर लायेगा। अगर रात की बची हुई रम सरहाने पड़ी होगी तो उसे चाय मे उढेल लेगा। और इस मिक्सचर को एक एक घूट करके ऐसे पियेगा जैसे उसमे स्वाद लेने जैसी कोई भावना ही नही।

शरीर पर कोई फोड़ा निकला है। भयानक रूप धारण कर गया है मगर मजाल है जो उसकी तरफ ध्यान दे। पीप निकल रही है। गल सड़ गया है। नासूर बन जाने का खतरा है, लेकिन सईद कभी किसी डाक्टर के पास नहीं जायगा। आप उससे कुछ कहेगें तो यह जवाब

मिलेगा– "कभी कभी बीमारियाँ इसान के शरीर का एक अग हो जाती है। जब मुझे यह जख्म कोई तकलीफ नही देता तो इलाज की क्या जरूरत है।" और यह कहते हुये वह जख्म की तरफ इस तरह देखेगा जैसे कोई बडी अच्छी कविता ध्यान मे आगई हो।

एक्टिग वह सारी उम्र नही कर सकेगा। इसलिये कि वह कोमल भावनाओ से करीब करीब तग है। मैंनें उसे एक फिल्म मे देखा जो हीरोइन के गानो के कारण बहुत लोक प्रिय हुआ था। एक जगह उसे अपनी महबूबा का हाथ अपने हाथ मे लेकर मोहब्बत का इजहार करना था। खुदा की कसम उसने हीरोइन का हाथ कुछ इस तरह अपनें हाथ मे लिया, जैसे कुत्ते का पजा पकडा जाता है। मै उससे कई बार कह चुका हूँ, एक्टर बननें का ख्याल अपने दिमाग से निकाल दो। अच्छे शायर हो। घरमे बैठो और नज्मे लिखा करो। मगर उसके दिमाग पर अभी तक एक्टिग की धुन सवार है।

, नारायण मुझे बहुत पसन्द हैं। स्टूडियो की जिन्दगी के जो उसूल उसने अपने लिये घड़ रखे है मुझे अच्छे लगते हैं।

(१) एक्टर जब तक एक्टर है उसे शादी नही करनी चाहिये। शादी करे तो फौरन फिल्म को तलाक दे कर दूध दही की दूकान खोल ले। अगर मशहूर एक्टर रहा हैं तो काफी आमदनी हो जाया करेगी।

(२) कोई एक्ट्रेस तुम्हे भैया या भाई साहब कहे तो तुम फौरन उसके कान मे कहो– "आपकी अंगिया का क्या साइज है ?"

(३) किसी एक्ट्रेस पर अगर तुम्हारी तबियत आगई है तो भूमिका बाधने मे समय बर्बाद न करो। उससे अकेले मे मिलो और कहो– "मै भी मुह मे जबान रखता हूँ।" उसको यकीन न आये तो पूरी जीभ बाहर निकाल कर दिखा दो।

(४) अगर कोई एक्ट्रेस तुम्हारे हिस्से मे आजाये तो उसकी आमदनी मे से एक पैसा भी न लो। एक्ट्रेसो के शौहरो और भाइयो के लिये यह पैसा हलाल है।

(५) इस बात का ख्याल रखना कि एक्ट्रेस के पेट से तुम्हारी कोई सतान न हो। स्वराज्य मिलने के बाद अलबत्ता तुम ऐसी सन्तान पैदा कर सकते हो।

(६) याद रखो, एक्टर का भी भविष्य होता है। उसे रेजर और कघी से सवारने के बजाये कभी कभी असभ्या तरीके से भी सवारने की कोशिश किया करो। मिसाल के तौर पर कोई नेक काम करके।

(७) स्टूडियो मे सबसे ज्यादा आदर पठान चौकीदार का करो। सुबह स्टूडियो मे

आते वक्त उसे सलाम करने से तुम्हे फायदा होगा। यहां नही तो दूसरी दुनिया मे जहाँ फिल्म कम्पनियां नही होंगी।

(८) शराब और एक्ट्रेस की आदत हरगिज न डालो। बहुत मुमकिन है किसी दिन कांग्रेस सरकार लहर मे आकर इन दोनों चीजों पर पाबन्दी लगा दे।

(९) सौदागर, मुसलमान सौदागर हो सकता है, लेकिन एक्टर, हिन्दू एक्टर या मुस्लिम एक्टर नही हो सकता।

(१०) झूठ न बोलो।

यह सब बाते "नारायण के दस अहकाम" शीर्षक के नीचे उसने अपनी एक नोटबुक में लिख रखी है, जिन से उसके कॅरेक्टर का अच्छी तरह अन्दाजा हो सकता है। लोग कहते है कि वह इन सब पर अमल नही करता। मुमकिन है सच हो। लेकिन वह इनमे से अक्सर पर अमल करता है, यह एक वास्तविकता है।

सईद और नारायण के सम्बन्ध मे मेरे जो विचार थे, मैंने जानकी के पूछे बिना इशारतन बता दिये और आखिर मे उससे साफ शब्दो मे कह दिया– "अगर तुम इस लाइन मे आगई तो किसी न किसी मर्द का सहारा तुम्हे लेना ही पडेगा। नारायण के सम्बन्ध मे मेरा ख्याल है कि अच्छा दोस्त साबित होगा।

मेरा मशवरा उसने सुन लिया और बम्बई चली

गई। दूसरे दिन खुश खुश वापिस आई। क्योकि नारायण ने अपने स्टूडियो मे एक साल के लिये पाच सौ रुपये माहवार पर उसे नौकर करा दिया था। यह नौकरी उसे कैसे मिली! देर तक इसके सम्बन्ध मे बाते हुई। जब और कुछ सुनने को न रहा तो मैंने उससे पूछा– "सईद और नारायण दोनो से तुम्हारी मुलाकात हुई। इनमे से किसको तुमने ज्यादा पसन्द किया?"

जानकी के ओठो पर हल्की मुस्कराहट पैदा हुई। लगरिश भरी निगाहो से मुझे देखते हुये उसने कहा– "सईद साहब को।" यह कह कर वह एक दम गम्भीर हो गई। "सआदत साहब आपने क्यो इतने पुल बाधे थे नारायन की तारीफो के?"

मैंने पूछा– "क्यो"?

"बडा ही वाहियात आदमी है। शाम को बाहर कुर्सियाँ बिछा कर सईद साहब और वह शराब पीने के लिये बैठे तो बातो मे मैंने उसको नारायण भैया कहा। अपना मुह मेरे कान के पास लाकर उसने मुझसे पूछा तुम्हारी अंगिया का क्या साइज है! भगवान जानता है मेरे तन बदन में आग ही तो लग गई। कैसा लचर आदमी है।" जानकी के माथे पर पसीना आ गया।

मैं जोर जोर से हसने लगा।

उसने तेजी से कहा– "आप क्यो हस रहे है?"

"उसकी बेवकूफी पर।" यह कह कर मैंने हसना बन्द कर दिया।

थोड़ी देर नारायण को बुरा भला कहने के बाद जानकी ने अजीज के सम्बन्ध मे चिन्तित स्वर मे बाते शुरू करदी। कई दिनो से उसका खत नही आया था। इस लिये तरह तरह के ख्याल उसे सता रहे थे। कही उन्हे फिर जुकाम न हो गया हो। अधाधुन्द सायकिल चलाते है। कही कोई दुर्घटना ही न हो गई हो। पूना ही न आ रहे हो, क्यों कि जानकी को रुखसत करते वक्त उन्होने कहा था– एक दिन मैं चुपचाप तुम्हारे पास चला आऊँगा।

बाते करने के बाद जब उसकी चिन्ता कुछ कम हुई तो उसने अजीज की तारीफे शुरू कर दी। घर में बच्चो का बहुत ख्याल रखते है। हररोज सुबह उनको कसरत कराते है और नहला धुलाकर स्कूल छोडने जाते है। बीवी बिल्कुल फूहड है, इस लिये रिश्तेदारो से सारा रख रखाव खुद उन्हे ही करना पड़ता हैं। एक बार जानकी को टाईफाइड हो गया था तो बीस दिन तक लगातार नर्सों की तरह उसकी तीमारदारी करते रहे, वगैरा वगैरा।

दूसरे दिन उचित और योग्य शब्दो में मेरा शुक्रिया अदा करने के बाद, वह बम्बई चली गई जहाँ उसके लिये एक नई और चमकीली दुनिया के दरवाजे खुल गये थे।

पूना में मुझे लगभग दो महीने कहानी का सिनीरियो तैयार करने मे लग गये। अपना मेहनताना वसूल करके मैंने बम्बई का रुख किया, जहाँ मुझे एक नया कण्ट्रेक्ट मिल रहा था।

मैं सुबह पाच बजें के करीब अंधेरी पहुँचा, जहाँ एक मामूली बगले मे सईद और नारायण दोनो इकट्ठे रहते थे। बरामदे मे दाखिल हुआ तो दरवाजा बन्द पाया। मैंने सोचा सो रहे होगे। तकलीफ नही देना चाहिये। पिछली तरफ एक दरवाजा है जो नौकर के लिये अक्सर खुला रहता हैं। मैं उसमे से अन्दर दाखिल हुआ बावर्चीखाना और साथ वाला कमरा, जिसमे खाना खाया जाता था, सदैव की भाति बहुत ही गन्दा था। सामने वाला कमरा मेहमानो के लिये था। मैंने उसका दरवाजा खोला और अन्दर दाखिल हुआ। कमरे मे दो पलग थे। एक पर सईद और उसके साथ कोई और लिहाफ ओढे सो रहा था।

मुझे सख्त नीन्द आ रही थी। दूसरे पलग पर मै कपडे उतारे बगैर लेट गया। पायती पर कबल पडा था। वह मैंने टागो पर डाल लिया। सोने का इरादा ही कर रहा था कि सईद के पीछे से एक चूडियो वाला बाजू निकला और पलग के पास रखी हुई कुर्सी की तरफ बढने लगा। कुर्सी पर लट्ठे की सफेद शलवार लटक रही थी।

मै उठकर बैठ गया। सईद के साथ जानकी लेटी थी। मैंने कुर्सी पर से शलवार उठाई और उसकी तरफ फेंक दी।

नारायण के कमरे मे जा कर मैंने उसे जगाया। रात के दो बजे उसकी शूटिग खत्म हुई थी। मुझे अफसोस हुआ कि व्यर्थ मे उस गरीब को जगाया। लेकिन

वह मुझसे बातें करना चाहता था। किसी खास विषय पर नहीं। मुझे अचानक देख कर, उसी के शब्दों में, वह कुछ बेहूदा बकवास करना चाहता था। चुनाचे सुबह नौ बजे तक हम बेहूदा बकवास करते रहे, जिसमें बार बार जानकी का भी जिक्र आया।

जब मैंने अंगिया वाली बात छेडी तो नारायण बहुत हंसा। हंसते हंसते उसने कहा– "सबसे मजेदार बात तो यह है कि जब मैंने उसके कान के पास मुँह ले जाकर पूछा– तुम्हारी अंगिया का क्या साइज है तो उसने बता दिया। कहा– चौबीस। उसके बाद अचानक उसे मेरे सवाल की बेहूदगी का ख्याल आया और मुझे कोसना शुरू कर दिया। बिल्कुल बच्ची है। अब जब कभी मुझ से मुटभेड़ होती है, तो सीने पर डुपट्टा सरका लेती है– लेकिन मण्टो! बड़ी वफादार औरत है।"

मैं ने पूछा– "यह तुमने कैसे जाना?"

नारायण मुस्कराया– "औरत जो एक बिल्कुल अजनबी आदमी को अपनी अगिया का सही साइज बता दे, धोकेबाज हरगिज नहीं हो सकती।"

अजीबो–गरीब मंतिक थी, लेकिन नारायण ने मुझे बडी गम्भीरता से विश्वास दिलाया कि जानकी बडी निष्ठावान औरत हैं। उसने कहा– "मण्टो तुम्हे मालूम नहीं, सईद की यह कितनी सेवा कर रही है। ऐसे इसान की ख़बर गीरी जो परले दर्जे का बेपरवाह हो, आसान काम नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ कि जानकी इस मुश्किल काम को बड़ी

आसानी से कर रही है। औरत होने के साथ साथ वह एक निष्ठावान और ईमानदार आया भी है। सुवह उठकर उस खर-जात को जगाने मे आधा घण्टा नष्ट करती है। उसके दात साफ कराती है, कपडे पहिनाती है, नाश्ता कराती हैं। और रात को जव वह रम पी कर विस्तरे पर लेटता है तो सब दरवाजे बन्द करके उसके साथ लेट जाती है। ·· और जब स्टूडियो मे किसी से मिलती है तो सिर्फ सईद की वाते करती है। · सईद साहब वडे अच्छे आदमी है, सईद साहव वहुत अच्छा गाते है, सईद साहब का वजन बढ़ गया है, सईद साहब का पुल-ओवर तैयार हो गया है, सईद साहब के लिये पेशावर से पीठोहारी सेण्डल मगवाई है, सईद साहव के सर मे आज हल्का हल्का दर्द है, एस्प्रो लिये जा रही हूँ, सईद साहब ने आज मुझ पर एक शेर कहा " और जब मुझसे मुठ भेड होती है तो अगिया वाली वात याद करके त्योरी चढा लेती है।"

मै लगभग दस दिन सईद और नारायण का मेहमान रहा। इस दौरान मे सईद ने जानकी के सम्बन्ध मे मुझसे कोई बात नही की। शायद इस लिये कि उनका मामला काफी पुराना हो चुका था। जानकी से अलबत्ता काफी वाते हुई। वह सईद से वहुत खुश थी, लेकिन उसे उसकी वेपरवाह तबीयत से बड़ी शिकायत थी- "सआदत साहव, अपनी सेहत का बिल्कुल ख्याल नही रखते। बहुत वेपरवाह है। हर वक्त सोचना जो हुआ। इस लिये

किसी बात का ख्याल ही नही रहता। आप हसेंगे, लेकिन मुझे हर रोज उनसे पूछना पड़ता है कि आप सन्डास गये थे' या नही ?"

नारायण ने मुझसे जो कुछ कहा था ठीक निकला। जानकी हर वक्त सईद की खबरगीरी मे सलग्न रहती थी। मै दस दिन अधेरी के बगले मे रहा। इन दस दिनो मे जानकी की निर्लोभ सेवा का मुझ पर बहुत असर पडा। लेकिन यह विचार बार बार आता रहा कि अजीज का क्या हुआ । जानकी को उसका भी तो बहुत ख्याल रहता थ।। क्या सईद को पा कर वह उसको भूल चुकी थी ?

मैंने इस सवाल का जवाब जानकी ही से पूछ लिया होता, अगर मै कुछ दिन और वहाँ ठहरता। जिस कम्पनी से मेरा कण्ट्रेक्ट होने वाला था, उसके मालिक से मेरी किसी बात पर चख हो गई और मै मानसिक असतोप दूर करने के लिये पूना चला गया।

दो ही दिन गुजरे होगे कि बम्बई से अजीज का तार आया कि मै आ रहा हूँ । पाच छ घण्टे के बाद वह मेरे पास था। और दूसरे दिन सुबह सवेरे जानकी मेरे कमरे पर दस्तक दे रही थी।

अजीज और जानकी जब एक दूसरे से मिले, तो उन्होने देर से बिछुडे हुये प्रेमी– प्रेमिका की सी सर गरमी प्रकट न की। मेरे और अजीज के ताल्लुकात शुरु से गम्भीर रहे है, शायद इसी कारण दोनो मोतदिल रहे।

अजीज का ख्याल था होटल मे उठ जाये लेकिन मेरा दोस्त, जिसके यहाँ मै ठहरा था, आउट डोर शूटिंग के लिये कोल्हापूर गया था। इस लिये मैंने अजीज और जानकी को अपने पास ही रखा। तीन कमरे थे। एक में जानकी सो सकती थी, दूसरे मे अजीज। यो तो मुझे उन दोनो को एक ही कमरा देना चाहिये था, लेकिन अजीज से मेरी इतनी वेतकल्लुफी नही थी। इसके अलावा उसने जानकी से अपने सम्वन्ध को मुझ पर प्रकट भी नही किया था।

रात को दोनो सीनेमा देखने चले गये। मै साथ न गया, इस लिये कि मै फिल्म के लिये एक नई कहानी शुरू करना चाहता था। दो बजे तक मे जागता रहा। उसके बाद सो गया। एक चाबी मैने अजीज को दे दी थी, इस लिये मुझे उनकी तरफ से इतमेमान था।

रात को मै चाहे वहुत देर तक काम करूँ, साढे तीन और चार बजे के बीच एक वार जरूर जागता हूँ और उठकर पानी पीता हूँ। आदत के अनुसार इस रात को भी मै पानी पीने के लिये उठा। सयोग से जो कमरा मेरा था, यानी जिसमे मैने अपना बिस्तर जमाया हुआ था, अजीज के पास था और उसमे मेरी सुराही पडी थी।

अगर मुझे कडी प्यास न लगी होती तो अजीज को तकलीफ न देता, लेकिन अधिक व्हिस्की पीने के कारण मेरा कण्ठ बिल्कुल सूख गया था, इस लिये

मुझे दस्तक देनी ही पडी। थोडी देर के बाद दरवाजा खुला। जानकी ने आखे मलते मलते दरवाजा खोला और कहा-- "सईद साहब!" और जब मुझे देखा तो एक हल्की सी "ओह" उसके मुह से निकल गई।

अन्दर पलंग पर अजीज सो रहा था। मै बेइख्तयार मुस्करा दिया। जानकी भी मुस्कराई और उसके तीखे ओठ एक कोने की तरफ सिकुड गये। मैनें पानी की सुराही ली और चला आया।

सुबह उठा तो कमरे मे धुआँ भरा था। बावर्चीखाने मे जा कर देखा तो जानकी कागज जला जला कर अजीज के नहाने के लिये पानी गरम कर रही थी। आखो से पानी बह रहा था। मुझे देख कर मुस्कराई और अगीठी मे फूके मारते हुये कहने लगी– "अजीज साहब ठण्डे पानी से नहाये तो उन्हे जुकाम हो जाता है ··। मैं नही थी पेशावर मे तो एक महीना बीमार रहे और रहते भी क्यो नहीं जब दवा पीनी ही छोड दी थी · आपने देखा नही कितने दुबले हो गये है।"

और अजीज नहा धोकर जब किसी काम से बाहर गया तो जानकी ने मुझसे सईद के नाम तार लिखने के लिये कहा– "मुझे कल यहाँ पहुँचते ही उन्हे तार भेजना चाहिये था। कितनी गलती हुई मुझसे। उन्हे बहुत बेचेंनी हो रही होगी।"

उसने मुझसे तार का मजमून बनवाया जिसमे अपने कुशल पूर्वक पहुँचने की सूचना तो थी ही, लेकिन सईद

की कुशल मालूम करने की बेचैनी ज्यादा थी। इजनजान लगवाने की ताकीद भी थी।

चार दिन गुजर गये। सईद को जानकी ने पांच तार रवाना किये पर उसकी तरफ से कोई जवाब न आया। बम्बई जाने का इरादा कर रही थी कि अचानक शाम को अजीज की तबीयत खराब हो गई। मुझसे सईद के नाम एक और तार लिखवा कर वह सारी रात अजीज की देख भाल मे सलग्न रही। मामूली बुखार था, लेकिन जानकी बेहद परेशान थी। मेरा ख्याल है इस परेशानी मे सईद की खामोशी से उत्पन्न विकलता भी शामिल थी। वह मुझसे इस दौरान मे कई बार कह चुकी थी– "सआदत साहब मेरा ख्याल है, सईद साहब जरूर बीमार है वरना वह मुझे मेरे तारो और खतो का जवाब जरूर लिखते।'

पाचवे दिन शाम को अजीज की मौजूदगी मे सईद का तार आया जिसमे लिखा था, मै बहुत बीमार हूँ फौरन चली आओ। तार आनेसे पहिले जानकी मेरी किसी बात पर बेतहाशा हस रही थी, लेकिन जब उसने सईद की बीमारी की खबर सुनी तो एकदम खामोश हो गई। अजीज को यह खामोशी बहुत बुरी लगी क्योकि जब उसने जानकी को सम्बोधित किया तो उसके स्वर मे तीव्रता थी। मै उठकर चला गया।

शाम को जब वापस आया तो जानकी और अजीज कुछ इस तरह अलग अलग बैठे थे जैसे उनमे काफी झगड़ा हो चुका है। जानकी के गालो पर आसुओं का

मैल था। जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो इधर उधर की बातों के बाद जानकी ने अपना हैण्डबैग उठाया और अज़ीज से कहा— "मैं जाती हूँ लेकिन बहुत जल्द वापस आ जाऊगी।" फिर मुझसे सम्बोधित हुई— "सआदत साहब! इनका ख्याल रखियगा, अभी तक बुखार दूर नही हुआ है।"

मैं स्टेशन तक उसके साथ गया। ब्लेक–मार्केट से टिकिट खरीद कर उसे गाडी मे बिठाया और घर चला आया। अजीज को हल्का हल्का बुखार था। हम दोनो देर तक बाते करते रहे लेकिन जानकी का जिक्र न आया।

तीसरे दिन सुबह साढे पाच बजे के करीब मुझे बाहर का दरवाजा खुलने की आवाज आई। उसके बाद जानकी की। जल्दी जल्दी शब्दो को ऊपर नीचे करती हुई वह अजीज से पूछ रही थी कि उस की तबीयत अब कैसी है। ग्रौर उसकी अनुपस्थिति मे उसने नियमित रूपसे दवा पी थी या नही। अजीज की आवाज मेरे कानो तक न पहुँची। लेकिन आधे घण्टे के बाद जब कि नीन्द से मेरी आखे मुद रही थी अजीज की रुष्टता भरी बातो का दबा दबा शोर सुनाई दिया। समझ मे तो कुछ न आया, लेकिन इतना पता चल गया कि वह जानकी से अपनी अप्रसन्नता प्रकट कर रहा है।

सुबह दस बजे अजीज ने ठण्डे पानी से स्नान किया और जानकी का गरम किया हुआ पानी वैसे ही गुसलखाने मे पडा रहा। जब मैंने जानकी से इस बात का जिक्र

किया तो उसकी आखो मे आसू आ गये।

नहा धो कर अजीज बाहर चला गया। जानकी कमरे मे पलग पर लेटी रही। तीसरे पहर तीन बजे के करीब जब में उसके पास गया तो मालूम हुआ कि उसे बहुत तेज बुखार है। डाक्टर बुलाने के लिये बाहर निकला तो अजीज तागे मे अपना सामान रखवा रहा था।

मैंने पूछा– "कहा जा रहे हो?" तो उसने मुझसे हाथ मिलाया और कहा– "बम्बई– इंशाअल्लाह फिर मुलाकात होगी।"

यह कह कर वह इक्के मे बैठा और चला गया। मुझे यह बताने का मौका ही न मिला कि जानकी को बहुत तेज बुखार है।

डाक्टर ने जानकी को अच्छी तरह देखा और मुझे बताया कि उसे ब्रोंकाइट्स है। अगर ध्यान न दिया गया तो निमोनिया होने का भय है। डाक्टर दवा लिख कर चला गया तो जानकी ने अजीज के बारे मे पूछा। पहिले तो मैंने सोचा उसे न बताऊँ, लेकिन छुपाने से कोई फायदा नहीं था इस लिये मैंने कह दिया कि चला गया है। यह सुनकर उसे बहुत दुख हुआ। देर तक वह तकिये में सिर दे कर रोती रही।

दूसरे दिन सुबह ग्यारह बजे के लगभग, जबकि जानकी का बुखार एक डिगरी हल्का था, और तबीयत भी कुछ ठीक थी, बम्बई से सईद का तार आया जिसमे बडे कडे शब्दो मे यह लिखा था– "याद रहे तुमने अपना वादा

पूरा नही किया।"

मैं वहुत मना करना रहा लेकिन वह तेज बुखार में ही पूना एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हो गई।

पाच छ. दिन के बाद नारायण का तार आया—"एक जरूरी काम है। फौरन बम्बई चले आओ।" मेरा ख्याल था किसी प्रोडयूसर से उसने मेरे कण्ट्रैक्ट की बात की होगी। लेकिन बम्बई पहुँच कर मालूम हुआ कि जानकी की हालत बहुत नाजुक है। ब्रोकाइट्स बिगड़ कर निमोनिया में बदल गया है। इसके आलावा जब वह पूना से बम्बई पहुँची थी तो अधेरी जाने के लिये चलती ट्रेन में चढ़ने की कोशिश करते हुये गिर पडी थी जिसके कारण उसकी दोनो राने बहुत बुरी तरह छिल गई थी।

जानकी ने इस शारीरिक कष्ट को बडी बहादुरी से सहन किया। लेकिन जब वह अधेरी पहुँची और सईद ने उसके बधे हुये सामान की तरफ इशारा करके कहा—"मेहरबानी करके यहाँ से चली जाओ?" तो उसे बहुत दुख हुआ। नारायण ने मुझे बताया—"सईद के मुह से यह बर्फ जैसे ठण्डे शब्द सुन कर वह एक क्षण के लिये बिल्कुल पत्थर हो गई। मेरा ख्याल है उसने थोडी देर के बाद यह जरूर सोचा होगा कि मै गाडी के नीचे आकर क्यो न मर गई सआदत तुम कुछ भी कहो मगर सईद औरतो के साथ जैसा व्यवहार करता है बहुत ही नामर्दाना है बेचारी को बुखार था, चलती रेल से गिर पडी थी और वह भी उसी खरजात के पास

जल्दी पहुँचने के लिये ·· लेकिन उसने इन बातों का ख्याल ही न किया और एक बार फिर उससे कहा कि मेहरबानी करके यहाँ से चली जाओ ···। उसके स्वरमें, मण्टा कोई भावना न थी। बस ऐसा था जैसे किसी टाइप मशीन से एक लाइन ढल कर निकल आये · · मुझे बहुत दुख हुआ चुनाचे मैं वहाँ से उठ कर चला गया। शाम को जब वापस आया तो जानकी मौजूद नहीं थी, लेकिन सईद पलंग पर बैठा रम का गिलास सामने रखे, एक कविता लिखने में सलग्न था। ·· मैंने उससे कोई बात न की और अपने कमरे में चला गया। दूसरे दिन स्टूडियो से मालूम हुआ कि जानकी एक एक्स्ट्रा लड़की के घर खतरनाक हालत में पड़ी है। मैंने स्टूडियो के मालिक से बात की और उसे हस्पताल पहुँचा दिया · कल से वहीं हैं। बताओ अब क्या किया जाय? मैं तो उसे देखने जा नहीं सकता, इस लिये कि वह मुझसे नफरत करती है · तुम जाओ और देख कर आओ किस हालत में है।"

मैं हस्पताल गया तो उसने सबसे पहिले अजीज और सईद के सम्बन्ध में पूछा। जो व्यवहार इन दोनों ने उसके साथ किया था उसके बाद उसके निष्ठा से ओत-प्रोत प्रश्न ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

उसकी हालत नाजुक थी। डाक्टर ने मुझे बताया कि उसके दोनों फेफड़ों पर वरम हैं और जान का खतरा है। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि जानकी इतना बड़ा कष्ट

मर्दानावार सहन कर रही थी।

हस्पताल से लौटा और स्टूडियो में नारायण को तालाश किया तो मालूम हुआ कि वह सुबह ही से कही गायब है। शाम को जब वह घर वापस आया तो उसनें मुझे तीन छोटी छोटी शीशियाँ दिखाई जिनका मुह रबड से बन्द था– "जानते हो यह क्या है?"

मैंने कहा– "मालूम नही। इजक्शन से लगते है।"

नारायण मुस्कराया– "इजक्शन ही है, लेकिन पेनसिलीन के।"

मुझे सख्त हैरत हुई। क्योकि पेनसिलीन उस वक्त बहुत ही कम प्रमाण मे तैयार होती थी। अमरीका और इगलिस्तान मे जितनी बनती थी, थोडी थोड़ी मिलिट्री हस्पतालो मे बाट दी जाती थी। चुनाचे मैनें नारायण से पूछा– "यह तो बिल्कुल नायाब चीज है। तुम्हे कैसे मिल गई?"

उसने मुस्करा कर जवाब दिया– "बचपन में घर की तिजोरी खोल कर रुपये चुराना मेरे बाये हाथ का काम था ·· आज दाये हाथ से मिलिट्री हस्पताल का रेफ्रीजरेटर खोलकर मैनें यह तीन बल्ब चुराये है। चलो जल्दी करो, जानकी को हस्पताल से होटल मे ले चले।"

टैक्सी लेकर मै हस्पताल गया और जानकी को उस होटल मे ले गया जिसमे नारायण दो कमरो का पहिले ही से प्रबन्ध कर चुका था।

जानकी ने कई बार मुझसे कमजोर आवाज मे पूछा

कि मे उसे होटल मे क्यो लाया हूँ। हर वार मैंने यही जवाव दिया– "तुम्हे मालूम हो जायगा।"

और जब उसे मालूम हुआ यानी जव नारायण सिरिज हाथ मे लिये उसे टीका लगाने के लिये उसके कमरे ने आया तो उसने नफरत से एक तरफ मुह फेर लिया और मुझ से कहा– "सआदत साहव! इससे कहिये चला जाय यहाँ से।"

जानकी को क्रोध आ गया। निर्वलता के वावजूद उठ कर वैठ गई– "सआदत साहव मैं जाती हूँ यहाँ से या आप इस हरामजादे को निकालिये वाहर।"

नारायण ने धक्का देकर उसे लिटा दिया और मुस्कराते हुये कहा--

"यह हरामजादा तुम्हे इजक्शन लगा कर ही रहेगा खबरदार जो तुमने आपत्ति की।"

यह कह कर उसने एक हाथ से "मजबूती के साथ जानकी का बाजू पकडा। सिरिज मुझे देकर उसने स्प्रिट मे रूई भिगोई और उसका बाजू साफ किया। उसके वाद रूई मुझे देकर उसने सिरिज की सुई उसके वाजू की मच्छली मे दाखिल करदी। वह चीखी लेकिन पेनसिलीन उसके शरीर मे जा चुकी थी।

जव नारायण ने जानकी का बाजू अपनी मजबूत पकड़ से छोडा तो उसने रोना शुरू कर दिया। नारायण ने उसकी विल्कुल परवाह न की और स्प्रिट लगी रूई से इजक्शन वाला भाग पोछ कर दूसरे कमरे मे चला गया।

पहिला इंजक्शन रात के नौ बजे दिया था। दूसरा तीन घण्टे के वाद देना था। नारायण ने मुझे बताया कि यदि तीन के साढे तीन घण्टे हो गये तो पेनसिलीन का असर विल्कुल गायब हो जायगा इस लिये वह जागता रहा। लगभग साढे ग्यारह बजे उसने स्टोव जलाया। सिरिज उवाली और उसमे दवा भरी।

जानकी खर खराहट भरे सास ले रही थी। आखे बन्द थीं। नारायण ने दूसरे बाजू को स्प्रिट से साफ किया और सिरिज की सुई अन्दर खुबोदी। जानकी के ओठो से हल्की सी चीख निकली। नारायण ने शरीर के अन्दर दवा भेजकर सुई बाहर निकाली और स्प्रिट से इजक्शन वाली जगह साफ करते हुये मुझसे कहा-- "अब तीसरा तीन बजे।"

मुझे मालूम नही उसनें तीसरा और चौथा इजक्शन कब दियां, लेकिन जब आख खुली तो स्टोव जलने की आवाज आ रही थी। और नारायण होटल के बैरे से बर्फ के लिये कह रहा था। क्योकि उसे पेनसिलीन को ठण्डा रखना था।

नौ बजे पाचवॉ इजक्शन देने के लिये जब हम दोनो जानकी के कमरे मे गये तो वह आखे खोले लेटी थी। उसने नफरत भरी निगाहो से नारायण की तरफ देखा लेकिन मुह से कुछ न कहा। नारायण मुस्कराया– "क्यो जानेंमन क्या हाल है?"

जानकी खामोश रही।

नारायण उसके पास खडा हो गया-- "यह इंजक्शन जो मै तुम्हे दे रहा हूँ, इश्क के इंजक्शन नही, तुम्हारा निमोनिया दूर करने के इजक्शन है। जो मैंने मिलिट्री हास्पिटल से वडी सफाई के साथ चुराये है। ... लो अव जरा उल्टी लेट जाओ और कूल्हे पर से शलवार को जरा नीचे खिसका दो .. कभी लिया है यहाँ इंजक्शन ?"

यह कह कर उसने जानकी के कूल्हे पर एक जगह गोश्त के अन्दर उंगली खुबोई। जानकी की आंखो मे प्रभावित होने वाली नफ़रत पैदा हुई।

जव उसने करवट वदली तो नारायण ने कहा-- "शावाश।"

पूर्व इसके कि जानकी कोई आपत्ति करे, नारायण ने एक हाथ से उसकी शलवार नीचे खिसकाई और मुझसे कहा-- "स्प्रिट लगाओ।"

जानकी ने टागे चलाना शुरू की तो नारायण ने कहा-- "जानकी टागे वागे मत चलाओ ... मैं इंजक्शन लगा कर रहूँगा।"

मतलव यह कि पाँचवा इजक्शन दे दिया गया। पद्रह और वाकी थे। जो नारायण को हर तीन घण्टे के वाद देने थे। और यह पैंतालीस घण्टे का काम था।

पाँच इजक्शनो से यद्यपि जानकी को प्रकट रूप से कोई खास फायदा नही पहुँचा था लेकिन नारायण को पेनसिलीन के चमत्कार का विश्वास था, और उसे पूरी पूरी उम्मीद थी कि वह वच जायगी। हम दोनो बहुत

देर तक इस नई दवा के सम्बन्ध मे बाते करते रहे। ग्यारह बजे के करीब नारायण का नौकर मेरे नाम एक तार लेकर आया जो पूना से था। एक फिल्म कम्पनी ने मुझे बुलाया था इस लिये मुझे जाना पडा।

दस पद्रह दिन के बाद मै कम्पनी ही के काम से बम्बई आया। काम खत्म करके जब मै अधेरी पहुँचा तो सईद से मालूम हुआ कि नारायण अभी तक होटल ही मे है। होटल बहुत दूर शहर मे था। इस लिये रात मैं वही अधेरी मे रहा।

सुबह आठ बजे वहाँ पहुँचा तो नारायण के कमरे का दरवाजा खुला था। अन्दर दाखिल हुआ तो कमरा खाली पाया। दूसरे का दरवाजा खोला तो एक दम आखो के सामने कुछ हुआ। जानकी मुझे देखते ही लिहाफ के अन्दर घुस गई और नारायण ने, जो उस के साथ लेटा था मुझे वापस जाते देख कर कहा– "आओ मण्टो, आओ। मै हमेशा दरवाजा बन्द करना भूल जाता हूँ ... आओ, यार आओ . बैठो इस कुर्सी पर . लेकिन यह जरा जानकी की शलवार दे देना ..।"

शारदा

नजीर ब्लेक–मार्किट से व्हिस्की की बोतल लाने गया। बडे डाकखाने से कुछ आगे, बन्दरगाह के फाटक से कुछ इधर, सिगरेट वाले की दूकान से उसको स्कॉच मुनासिब दामो पर मिल जाती थी। जब उसने पैंतीस रुपये अदा करके कागज मे लिपटी हुई बोतल ली तो उस वक्त ग्यारह बजे थें, दिन के। यो तो वह रात को पीने का आदी था मगर उस रोज मौसम खुशगवार होने के कारण वह चाहता था कि सुबह ही से शुरू करदे और रात तक पीता रहे।

बोतल हाथ मे पकडे, वह खुश खुश घर की तरफ रवाना हुआ। उसका इरादा था कि बोरी बन्दर के स्टैण्ड से टैक्सी लेगा। एक पैग उसमे बैंठ कर पियेगा और

हल्के हल्के सुरूर मे घर पहुँच जायगा। वीवी मना करेगी तो वह उमसे कहेगा-- "मौसम देख कितना अच्छा है।" फिर वह उसे वह भौडा सा शेर सुनायेगा--

की फरिश्तो की राह अब्र ने वन्द,
जो गुनाह कीजिये सवाव है आज।

वह कुछ देर जरूर चख करेगी। लेकिन अन्त में खामोश हो जायगी और उसके कहने पर कीमे के पराठे वनाना शुरू कर देगी।

दुकान से वह वीस पच्चीस गज दूर गया होगा कि एक आदमी ने उसे सलाम किया। नजीर की स्मरण शक्ति कमजोर थी। उसने सलाम करने वाले आदमी को न पहचाना। लेकिन उस पर यह प्रकट न किया कि वह उमको नही जानता। इस लिये बडे अखलाक से कहा-- "क्यो भई कहाँ होते हो? कभी नजर हीं नही आते।"

उस आदमी ने मुस्करा कर कहा-- "हुजूर, मै तो यही होता हूँ। आपही कभी तशरीफ नही लाये।"

नजीर ने उसको फिर भी न पहिचाना-- "मै अव जो तशरीफ ले आया हूँ।"

"तो चलिये मेरे साथ।"

नजीर उस वक्त बडे अच्छे मूड मे था। "चलो।"

उस आदमी ने नजीर के हाथ मे बोतल देखी और अर्थ भर तरीके पर मुस्कराया। "बाकी सामान तो अपके पास मौजूद है।"

यह वाक्य सुनकर नजीर ने फौरन ही सोचा कि वह

दल्लाल है-- "तुम्हारा नाम क्या है?"

"करीम-- आप भूल गये थे।"

नजीर को याद आ गया कि शादी से पहिले एक करीम उसके लिये अच्छी अच्छी लड़कियाँ लाया करता था। बड़ा ईमानदार दल्लाल था। उसको गौर से देखा तो सूरत जानी पहचानी मालूम हुई। फिर पिछली तमाम घटनाये उसके जहन मे उभर आई। करीम से उसनें क्षमा चाही। "यार मैंने तुम्हे पहिचाना ही नही था। मेरा ख्याल है शायद छ वर्ष होगये है तुमसे मिले हुये।"

"जी हाँ।"

"तुम्हारा अड्डा तो पहिले ग्राण्ट रोड का नाका हुआ करता था?"

करीम ने बीडी सुलगाई और जरा गर्व से कहा– "वह मैंने छोड दिया। आपकी दुआ से अब यहाँ एक होटल मे धन्दा शुरू कर रखा है।"

नजीर ने उसको दाद दी– "यह बहुत अच्छा किया है तुमने।"

करीम ने और ज्यादा गर्व भरे स्वर मे कहा "दस छोकरियाँ है-- एक बिल्कुल नई है।"

नजीर ने उसको छेडने के अन्दाज मे कहा-- "तुम लोग यही कहा करते हो।"

करीम को बुरा लगा-- "क़सम कुरान की, मैंने कभी झूठ नही बोला। सुअर खाऊँ अगर वह छोकरी बिल्कुल नई न हो।" फिर उसने अपनी आवाज धीमी की और

नजीर के कान के साथ मुँह लगा कर कहा-- "आठ दिन हुये हैं जब पहिला पैसेंजर आया था। झूठ बोलू तो मेरा मुह काला हो।"

नजीर ने पूछा-- "कुवारी थी?"

"जी हाँ-- दो सौ रुपये लिये थे उस पैंसेजर से।"

नजीर ने करीम की पसलियो मे एक ठोका दिया-- "लो यही भाव पक्का करने लगे।"

करीम को नजीर की यह बात फिर बुरी लगी-- "कसम कुरान की, सुअर हो जो आप से भाव करे। आप तशरीफ ले चलिये। आप जो भी देगे मुझे कुबूल होगा। करीम ने आपका बहुत नमक खाया हैं।"

नजीर की जेब मे इस वक्त साढ़े चार सौ रुपये थे। मौसम अच्छा था। मूड भी अच्छा था। वह छः वरस पीछे के जमाने मे चला गया। बिना पिये मसरूर था। "चलो यार आज तमाम अय्याशियाँ रहे-- एक बोतल का और बन्दोवस्त हो जाना चाहिये।"

करीम ने पूछा-- "आप कितने मे लाये है यह बोतल?"

"पैंतीस रुपये मे।"

"कौनसा ब्राण्ड है?"

"जानी वाकर।"

करीम ने छाती पर हाथ मार कर कहा-- "मै आपको तीस मे ला दूंगा।"

नजीर ने दस दस के तीन नोट निकाले और करीम के हाथ मे दे दिये।

"नेकी और पूछ पूछ– यह लो। मुझे वहाँ बिठाकर तुम पहला काम यही करना। तुम जानते हो, मै ऐसे मौको पर अकेला नही पिया करता।"

करीम मुस्कराया। "और आपको याद होगा, मै डेढ पेग से ज्यादा नही पिया करता।"

नजीर को याद आ गया कि करीम वाक़ई आज से छ. बरस पहिले सिर्फ डेढ पेग लिया करता था। यह याद करके नजीर भी मुस्कराया। "आज दो रहे।"

"जी नही डढ से ज्यादा एक बून्द भी नही।"

करीम एक थर्ड क्लास बिल्डिग के पास ठहर गया। जिसके एक कोने मे छोटे से मैंले बोर्ड पर "मेरीना होटल" लिखा था। नाम तो खूबसूरत था। मगर इमारत निहायत गन्दी थी। सीढियाँ टूटी हुई। नीचे सूदख्वार पठान बड़ी बडी शलवारे पहिने खाटो पर लेटे हुये थे। पहिली मजिल पर क्रिश्चियन आवाद थें। दूसरी मजिल पर जहाज के अनगिनत खलासी। तीसरी मजिल होटल के मालिक के पास थी। चौथी मजिल पर कोने का एक कमरा करीम के पास था, जिसमे कई लड़कियाँ मुर्गियो की तरह अपने दड़बे मे बैठी थी।

करीम ने होटल के मालिक से चाबी मगवाई। एक बड़ा लेकिन बेंढब सा कमरा खोला, जिसमे लोहे की एक चारपाई, एक कुर्सी और एक तिपाई पड़ी थी। तीन तरफ से यह कमरा खुला था। यानी अनेको खिडकियाँ थी जिनके शीशे टूटे हुये थे। और कुछ नही लेकिन हवा

की बहुत अधिकता थी।

करीम ने आराम कुर्सी, जो कि बेहद मैली थी, एक उससे भी ज्यादा मेले कपडे से साफ की और नजीर से कहा– "तशरीफ रखिये, लेकिन मै यह अर्ज कर दू, इस कमरे का किराया दस रुपये होगा।"

नजीर ने कमरे को अब जरा गौर से देखा– "दस रुपये ज्यादा है यार?"

करीम ने कहा– "बहुत ज्यादा है, लेकिन क्या किया जाय। साला होटल का मालिक ही बनिया है। एक पैसा कम नही करता। और नजीर साहब मौज शौक करने वाले आदमी भी ज्यादा की परवाह नही करते।"

नजीर ने कुछ सोच कर कहा– "तुम ठीक कहते हो। ·· किराया पेशगी दे दू?"

"जी नही– आप पहिले छोकरी तो देखिये।" यह कह कर वह अपने दडबे मे चला गया।

थोडी देर के बाद वापिस आया तो उसके साथ एक निहायत ही शर्मीली लडकी थी। घरेलू किस्म की हिन्दू लड़की, सफेद धोती बाधे थी। उम्र लगभग चौदह वर्ष होगी। सुन्दर तो नही थी, लेकिन भोलीभाली जरूर थी।

करीम ने उससे कहा– "बैठ जाओ। यह साहब मेरे दोस्त है। बिलकुल अपने आदमी है।"

लड़की नीची नजरे किये लोहे की चारपाई पर बैठ गई। करीम यह कह कर चला गया– "अपना इत्मेनान कर लीजिये नजीर साहब– मै गिलास और

सोडा लाता हूँ।"

नजीर आराम कुर्सी पर मे उट कर लड़की के पास बैठ गया। वह सिमट कर एक तरफ हट गई। नजीर ने उससे छः बरस पहिले के अन्दाज मे पूछा-- आपका नाम?"

लड़की ने कोई जवाव न दिया। नजीर ने आगे सरक कर उसके हाथ पकड़े और फिर पूछा- "आपका नाम क्या है जनाव?"

लड़की ने हाथ छुडा कर कहा-- "शकुन्तला" और नजीर को शकुन्तला याद आ गई। जिस पर राजा दुश्यन्त आशिक हुआ था- "मेरा नाम दुश्यन्त है।"

नज़ीर मुकम्मल अय्याशी पर तुला हुआ था। लड़की ने उसकी बात सुनी और मुस्करा दी। इतने मे करीम आगया। उसने नजीर को सोडे की चार बोतले दिखाई जो ठण्डी होने के कारण पसीना छोड रही थी। "मुझे याद है कि आपको रॉजर का सोडा पसन्द हैं। बरफ मे लगा हुआ लेकर आया हूँ।"

नजीर बहुत खुश हुआ- "तुम कमाल करते हो।" फिर वह लड़की से सम्वोधित हुआ- "जनाब आप भी शौक फरमायेगी?"

लडकी ने कुछ न कहा। करीम ने जवाब दिया- "नजीर साहब, यह नहीं पीती। आठ दिन तो हुये है इस को यहाँ आये हुये।"

यह सुन कर नजीर को अफसोस सा हुआ। यह तो बहुत बुरी बात है।

करीम ने व्हिस्की की बोतल खोल कर नजीर के लिये एक बड़ा पेग बनाया और उसको आख मार कर कहा– "आप राजी कर लीजिये इसे।"

नजीर ने एक ही बार मे गिलास खत्म किया। करीम ने आधा पेग पिया। फौरन ही उसकी आवाज़ नशा आलूद हो गई। जरा झूमकर उसने नजीर से पूछा– "छोकरी पसन्द है न आपको?"

नजीर ने सोचा कि लड़की उसे पसन्द है कि नही, लेकिन वह कोई फैसला न कर सका। उसने शकुन्तला की तरफ गौर से देखा। अगर उसका नाम शकुन्तला न होता तो बहुत मुमकिन है वह उसे पसन्द कर लेता। वह शकुन्तला जिस पर राजा दुश्यन्त शिकार खेलते खेलते आशिक हुआ था, बहुत ही खूबसूरत थी। कम से कम किताबो मे तो यही लिखा था कि वह चन्द्रमुखी थी। मृगनयनी। नजीर ने एक बार फिर अपनी शकुन्तला की तरफ देखा। उसकी आंखे बुरी नही थी। मृगनयनी तो नही थी, लेकिन उसकी आखे उसकी अपनी आंखे थी। काली और बड़ी बडी। उसने और कुछ न सोचा और करीम से कहा– "ठीक है यार– बोलो मामला कहाँ तय होता है?"

करीम ने आधा पेग अपने लिये और उण्डेला और कहा– "सौ रुपये!"

नजीर ने सोचना बन्द कर दिया था– "ठीक है।"

करीम अपना दूसरा आधा पेग पी कर चला गया।

नजीर ने उठकर दरवाजा बन्द कर दिया। शकुन्तला के पास बैठा तो वह घबरा सी गई। नजीर ने उसका प्यार लेना चाहा तो वह उठ कर खडी हो गई। नजीर को उसकी यह हरकत नागवार महसूस हुई। लेकिन उसने फिर कोशिश की। बाजू से पकड कर उसको अपने पास बिठाया। जबरदस्ती उसको चूमा। वहुत ही बेकैफ सिलसिला था। अलबत्ता व्हिस्की का नशा अच्छा था। वह अबतक छः पेग पी चुका था। और उसको अफसोस था कि इतनी महगी चीज विल्कुल बेकार गई है। इस लिये कि शकुन्तला बिल्कुल अल्हड थी। उसको ऐसे मामलो के आदावकी कोई जानकारी ही नही थी। नजीर एक अनाडी तैराक के साथ इधर उधर वेकार हाथ पाव मारता रहा। आखिर उकता गया। दरवाजा खोल कर उसने करीम को आवाज दी, जो अपने दडबे मे मुर्गियो के साथ बैटा था। आवाज सुनकर दौडा आया– "क्या बात हैं नजीर साहब ?"

नजीर ने बडी निराशा से कहा– "कुछ नही यार। यह अपने काम की नही है।"

"क्यो ?"

"कुछ समझती ही नही।"

करीम ने शकुन्तला को अलग ले जाकर बहुत समझाया, मगर वह न समझ सकी। शर्माई, लजाई, धोती सम्भालती कमरे से वाहर निकल गई। करीम ने इस पर कहा–"मै अभी हाजिर करता हूँ।"

नजीर ने उसको रोका। "जानेदो। कोई और ले आओ।" लेकिन उसने फौरन ही इरादा बदल दिया– "वह जो तुम्हे रुपये दिये थे, उसकी बोतल ले आओ और शकुन्तला के सिवाय जितनी लडकियाँ इस वक्त मौजूद है, उन्हे यहाँ भेज दो मेरा मतलब है जो पीती है। आज और कोई सिलसिला नही होगा। उनके साथ बैठ कर बाते करूँगा और बस।"

करीम, नजीर को अच्छी तरह समझता था। उसने चार लड़कियाँ उसके कमरे में भेजदी। नजीर ने उन सब को सरसरी नजर से देखा, क्यो कि वह अपने दिल में फैसला कर चुका था कि प्रोग्राम सिर्फ पीने का होगा। चुनाचे उसने उन लडकियो के लिये गिलास मगवाये और उनके साथ पीना शुरू कर दी। दो पहर का खाना होटल से मंगवा कर खाया, और शाम के छ बजे तक उन लडकियो से बाते करता रहा। बडी फिजूल क़िस्म की बाते, लेकिन नजीर खुश था। जो कोफ्त शकुन्तला ने पैंदा की थी, वह दूर हो गई थी।

आधी बोतल बाकी थी, वह साथ लेकर घर चला गया। पन्द्रह दिन के बाद फिर मौसम के कारण उसका जी चाहा कि सारा दिन पी जाय। सिगरेट वाले की दूकान से खरीदने के बजाये उसने सोचा क्यो न करीम से मिलू, वह तीस रुपयें मे ले देगा। चुनाचे वह उसके होटल मे पहुँचा। इतेफाक से करीम मिल गया। उसने मिलते ही बहुत धीरे से कहा– "नजीर साहब, शकुन्तला

की बडी बहन आई हुई है। आज सुबह की गाड़ी से पहुँची है। वहुत हठीली हें। मगर आप उसको जरूर राजी कर लेगे।"

नजीर कुछ सोच न सका। उसने अपने दिल मे इतना कहा-- "चलो देख लेते है।" लेकिन उसने करीम से कहा-- "तुम पहिले यार व्हिस्की ले आओ।" यह कह कर उसने तीस रुपये जेब से निकाल कर करीम को दिये।

करीम ने नोट ले कर नजीर से कहा-- "मै ले आता हूँ। आप अन्दर कमरे मे बैठिये।"

नजीर के पास सिर्फ दस रुपये थे, लेकिन वह कमरे का दरवाजा खुलवा कर बैठ गया। उसने सोचा था कि व्हिस्की की बोतल लेकर, एक नजर शकुन्तला की बहन को देख कर चल देगा। जाते वक्त दो रुपये करीम को दे देगा।

तीन तरफ से खुले हुये हवादार कमरे मे बहुत ही मैली कुर्सी पर बैठ कर उसने सिगरेट सुलगाया और अपनी टागे मेज पर रखदी। थोड़ी ही देर के बाद आहट हुई। करीम दाखिल हुआ। उसने नजीर के कान के साथ मुह लगा कर धीरे से कहा-- "नजीर साहब, आ रही हैं। लेकिन आप ही राम कीजियेगा उसे।"

यह कह कर वह चला गया। पाच मिनिट के बाद एक लडकी जिसकी शक्ल व सूरत करीब करीब शकुन्तला से मिलती थी, त्योरी चढाये, शकुन्तला के से

अन्दाज मे सफेद धोती पहिने कमरे मे दाखिल हुई। बडी वेपवाही से उसने माथे के करीव हाथ ले जा कर "आदाव" कहा और लोहे के पलग पर बैठ गई। नजीर ने यो अनुभव किया कि वह उससे लड़ने आई है। छः वर्ष पीछे के जमाने मे डुवकी लगा कर वह उससे सम्वोधित हुआ-- "आप शकुन्तला की वहन है।"

उसने वडे तीखे और क्रोध भरे स्वर मे कहा-- "जी हाँ।"

नजीर थोडी देर के लिये खामोश हो गया। उसके बाद उस लडकी को जिसकी उम्र शकुन्तला से शायद तीन वर्ष वडी थी, बड़े गौर से देखा। नजीर की यह हरकत उसको वहुत नागवार महसूस हुई। वह बड़े जोर से टाँग हिला कर उससे सम्बोधित हुई-- "आप मुझ से क्या केहना चाहते है?"

नजीर के ओठो पर छः वर्ष पहिले की मुस्कराहट नमूदार हुई-- "जनाब आप इतनी नाराज क्यो है?"

वह वरस पडी-- "मै नाराज क्यो हूँ- यह आपका करीम मेरी बहन को जयपुर से उडालाया है। वताइये आप, मेरा खून नही खौलेगा? मुझे मालूम हुआ है कि आपको भी वह पेश की गई थी।"

नजीर की जिन्दगी मे ऐसा मामला कभी नही आया था। कुछ देर सोचकर उसने उस लडकी से वडे खुलूस के साथ कहा- "शकुन्तला को देखते ही मैने फैसला कर लिया था, कि यह लड़की मेरे काम की नही। बहुत

अल्हड़ है। मुझे ऐसी लड़कियाँ बिल्कुल पसन्द नही। आप शायद बुरा माने, लेकिन यह हकीकत है कि मै उन औरतो को बहुत ज्यादा पसन्द करता हूँ जो मर्द की आवश्यकताओ को समझती हो।"

उसने कुछ न कहा। नजीर ने उससे मालूम किया— "आपका नाम?"

शकुन्तला की बहिन ने सक्षेप मे कहा– "शारदा!"

नजीर ने फिर उससे पूछा– "आपका वतन?"

"जयपुर" उसका स्वर बहुत तीखा और खफगी आलूद था।

नजीर ने मुस्करा कर उससे कहा– "देखिये, आपको मुझसे नाराज होने का कोई हक नही– करीम ने अगर कोई ज्यादती की हैं तो आप उसको सजा दे सकती है, लेकिन मेरा कोई अपराध नही।" यह कह कर वह उठा और उसको अचानक अपने बाजुओ मे समेट कर उसके ओठो का चूम लिया। वह कुछ कहने भी न पाई थी कि नजीर उससे सम्बोधित हुआ-- "यह अपराध अलबत्ता मेरा है। इसकी सजा मै भुगतने के लिये तैयार हूँ।"

लड़की के माथे पर अनगिनत परिवर्तन प्रकट हुये। उसने तीन चार बार जमीन पर थूका। शायद गालिया देने वाली थी, लेकिन चुप हो गई। उठ खडी हुई थी, लेकिन फौरन ही बैठ गई। नजीर ने चाहा कि वह कुछ कहे। "बताइये आप मुझे क्या सजा देना चाहती है?"

वह कुछ कहना चाहती थी कि दड़बे से किसी बच्चे

के रोने की आवाज आई। लड़की उठी, नजीर ने उसे रोका– "कहाँ जा रही हैं आप?"

वह एकदम मा बनगई– "मुन्नी रो रही है, दूध के लिये।" यह कह कर वह चली गई।

नजीर नें उसके बारे मे सोचने की कोशिश की मगर कुछ सोच न सका। इतने मे करीम व्हिस्की की बोतल और सोडे ले कर आ गया। उसने नजीर के लिये छोटा डाला, अपना गिलास खत्म किया और नजीर से राजदाराना अन्दाज मे पूछा-- "कुछ बाते हुई शारदा से, मैंने तो समझा था कि आपने पटा लिया होगा।"

नजीर ने मुस्करा कर जवाब दिया– "बडी गुस्सैली औरत है।"

"जा हाँ! सुबह आई है, मेरी जान खा गई है। आप जरा उसको राम करे·· शकुन्तला खुद यहाँ आई थी। इस लिये कि उसका बाप उसकी माँ को छोड चुका हैं, और इस शारदा का मामला भी ऐसा ही हैं। इसका पति शादी के फ़ौरन वाद ही इसको छोड़ कर खुदा मालूम कहाँ चला गया था·· अब अकेली अपनी बच्ची के साथ, माँ के पास रहती है आप मना लीजिये ना इसको।"

नजीर ने उससे कहा– "मनाने की क्या वात हैं?"

करीम ने उसको आख मारी- "साली मुझसे तो मानती नही। जब से आई है डाण्ट रही हैं।"

इतने मे शारदा अपनी एक साल की बच्ची को

गोद में उठायें अन्दर कमरे में आई। करीम को उसने गुस्से से देखा। उसने आधा पेग पिया और बाहर चला गया।

मुन्नी को बहुत जुकाम था। नाक बहुत बुरी तरह बह रही थी। नजीर ने करीम को बुलाया और उसको पाँच का नोट दे कर कहा– "जाओ, एक व्हिक्स की बोतल ले आओ।"

करीम न पूछा– "वह क्या होती है।"

नजीर ने उससे कहा– "जुकाम की दवा है।" यह कह कर उसने एक कागज के टुकडे पर उस दवा का नाम लिख दिया– "किसी भी स्टोर से मिल जायगी।"

"जी अच्छा।" कह कर करीम चला गया।

नजीर मुन्नी की तरफ देखने लगा। उसे बच्चे बहुत अच्छे लगते थे। मुन्नी सुन्दर नही थी। लेकिन उम्र कम होने के कारण नजीर के लिये मनमोहक थी। उसने उसको गोद मे लिया। माँ से सो नही रही थी। सिर मे धीरे धीरे उंगलियाँ फेर कर उसको सुला दिया और शारदा से कहा– "इसकी माँ तो मैं हूँ।"

शारदा मुस्कराई– "लाइये मै इसको अन्दर छोड आऊँ।"

शारदा उसको अन्दर लेगई और कुछ मिनिट के बाद वापिस आगई। अब उसके चेहरे पर गुस्से के आसार नही थे। नजीर उसके पास बैठ गया। थोडी देर वह खामोश रहा। उसके बाद उसने शारदा से पूछा– "क्या

आप मुझे अपना पति बनने की इजाजत दे सकती है?"
और उसके जवाब का इन्तजार किये वग़ैर उसको अपने सीने के साथ लगा लिया। शारदा ने गुस्से का इजहार नही किया-- "जवाब दीजिये जनाब!"

शारदा खामोश रही। नजीर ने उठकर एक पेग पिया तो शारदा ने नाक सिकोड़ कर उससे कहा-- "मुझे इस चीज से नफरत है।"

नजीर ने एक पेग गिलास मे डाला। उसमे सोडा मिला कर उठाया और शारदा के पास बैठ गया- "आपको इससे नफरत है? क्यो?"

शारदा ने सक्षिप्त सा जवाव दिया- "वस है"

"तो आज से नही रहेगी- यह लीजिये" यह कह उसने गिलास शारदा की तरफ वढा दिया।

"मै हरगिज नही पिऊँगी।"

"मै कहता हूँ, तुम हरगिज इन्कार नही करोगी।"

शारदा ने गिलास पकड़ लिया। थोडी देर तक उसको अजीब निगाहो से देखती रही। फिर नजीर की तरफ मजलूमाना निगाहो से देखा और नाक उगलियो से वन्द करके सारा गिलास गटागट पी गई। उल्टी आने को थी मगर उसने रोकली। धोती के पल्लू से अपने आसू पोछ कर उसने नजीर से कहा- "यह पहिली और आखरी वार है, लेकिन मैने क्यो पी?"

नजीर ने उसके गीले ओठ चूमे और कहा- "यह मत पूछो।" यह कह कर उसने दरवाजा बन्द कर दिया।

शाम को सात बजे उसने दरवाजा खोला। करीम आया तो शारदा नजरें झुकाये बाहर चली गई। करीम बहुत खुश था। उसने नजीर से कहा– "आपने तो कमाल कर दिया– आपसे सौ तो नही मागता, पचास दे दीजिये।"

नजीर, शारदा से बहुत सन्तुष्ट था। इतना सन्तुष्ट कि वह पिछली सब औरतो को भूल चुका था। वह उसके जिन्सी सवालात का सौ फीसदी सही जवाब थी। उसने करीम से कहा-- "मै कल अदा कर दूगा– होटल का किराया भी कल चुकाऊँगा। आज मेरे पास व्हिस्की मगाने के बाद सिर्फ दस रुपये बाकी थे।"

करीम ने कहा– "कोई वान्दा नही है। मै तो इस बात से बहुत खुश हूँ कि आपने शारदा से मामला तय कर लिया। हुजूर मेरी जान खा गई थी। अब शकुन्तला से वह कुछ नही कह सकती।"

करीम चला गया। शारदा आई। उसकी गोद मे मुन्नी थी। नजीर ने उसको पांच रुपये दिये, लेकिन शारदा ने इन्कार कर दिया। इस पर नजीर ने उससे मुस्करा कर कहा–"मै इसका बाप हूँ। तुम यह क्या कर रही हो?"

शारदा ने रुपये ले लिये। बडी खामोशी के साथ। शुरू शुरू मे वह बहुत बातूनी मालूम होती थी। ऐसा लगता था कि बातो के दरिया बहा देगी। मगर अब वह बात करनें से बचती थी। नजीर ने उसकी बच्ची को

गोद में लेकर प्यार किया और जाते वक्त शारदा से कहा-- "लो भई शारदा, मैं चला! कल नहीं तो परसों जरूर आऊँगा।"

लेकिन नजीर दूसरे रोज ही आगया। शारदा के जिस्मानी खुलूस ने उस पर जादू सा कर दिया था। उसने करीम को पिछले रुपये अदा किये। एक बोतल मगवाई और शारदा के साथ बैठ गया। उससे पीने के लिये कहा तो वह बोली-- "मैंने कह दिया था कि यह पहिला और आखरी गिलास है।"

नजीर अकेला पीता रहा। सुबह ग्यारह बजे से वह शाम के सात बजे तक होटल के इस कमरे मे शारदा के साथ रहा। जब घर लौटा तो वह बेहद सन्तुष्ट था। पहिले दिन से भी अधिक सन्तुष्ट। शारदा अपनी वाजबी शक्ल व सूरत और कमगोई के बावजूद उसके विलासी हवास पर छा गई थी। नज़ीर बार बार सोचता-- "यह कैसी औरत है' मैंने अपनी ज़िन्दगी मे ऐसी खामोश मगर जिस्मानी तौर पर ऐसी पुरगो औरत नही देखी।"

नजीर ने हर दूसरे दिन शारदा के पास जाना शुरू कर दिया। उसको रुपये पैसे से कोई दिलचस्पी नही थी। नजीर साठ रुपये करीम को देता था। दस रुपये होटल वाला ले जाता था। बाकी पचास में से तकरीबन तेरह रुपये करीम अपने कमीशन के कम कर लेता था। मगर शारदा ने इसके सम्बन्ध मे नजीर से कभी ज़िक्र नही किया था।

दो महीने गुजर गये। नजीर के बजट नें जवाब दे दिया। इसके अलावा उसने बडी तीव्रता से अनुभव किया कि शारदा उसकी विवाहित जिन्दगी मे बहुत बुरी तरह हायल हो रही है। बीवी के साथ सोता हैं तो उसको एक कमी महसूस होती है। वह चाहता है कि उसके बजाये शारदा हो। यह बहुत बुरी बात थी। नजीर को चूंकि इस का अहसास था इस लिये उसने कोशिश की कि शारदा का सिलसिला किसी न किसी तरह् ख़त्म हो जाये। चुनाचे उसने शारदा ही से कहा-- "शारदा मै शादीशुदा आदमी हूँ। मेरी जितनी जमा पूजी थी वह ख़त्म हो गई है। समझ मे नही आता मै क्या करूँ। तुम्हे छोड भी नही सकता, यद्यपि चाहता हूँ कि इधर का कभी रुख न करूँ।"

शारदा ने यह सुना तो खामोश हो गई। फिर थोड़ी देर के बाद कहा– "जितने रुपये मेरे पास हैं आप ले सकते है। सिर्फ मुझे जयपुर का किराया दे दीजिये, ताकि मै शकुन्तला को ले कर वापिस चली जाऊँ।"

नजीर ने उसका प्यार लिया और कहा– "बकवास न करो– तुम मेरा मतलब नहीं समझी। बात यह हैं कि मेरा रुपया बहुत खर्च हो गया है। बल्कि यो कहो कि खत्म हो गया है। मै यह सोचता हूँ कि तुम्हारे पास कैसे आ सकूगा ?"

शारदा ने कोई जवाब न दिया। नजीर एक दोस्त से कर्ज लेकर जब दूसरे दिन होटल मे पहुँचा तो करीम

ने वताया कि वह जयपुर जाने के लिये तैयार बैठी है। नजीर ने उसको बुलाया। मगर वह न आई। करीम के हाथ उसने बहुत से नोट भिजवाये और कहलाया "आप यह रुपये ले लीजिये और मुझे अपना एड्रेस दे दीजिये।"

नजीर ने करीम को अपना एड्रेस लिख कर दे दिया, और रुपये वापिस कर दिये। शादरा आई। गोद में मुन्नी थी। उसने आदाब अर्ज किया, और कहा-- मैं आज शाम को जयपुर जा रही हूँ।"

नजीर ने पूछा-- "क्यो ?"

शारदा ने सक्षिप्त सा जवाब दिया-- "मुझे मालूम नहीं।" और यह कह कर वह चली गई।

नजीर ने करीम से कहा कि उसे बुला कर लाये। मगह वह न आई। नजीर चला गया। उसको यो महसूस हुआ कि उसके शरीर की गर्मी चली गई। उसके सवाल का जवाब चला गया।

वह चली गई। वाकई चली गई। करीम को इसका वहुत अफसोस था। उसने नजीर से शिकायत के तौर पर कहा-- "नजीर साहब आपने क्यो उसको जाने दिया?"

नजीर ने उससे कहा-- "भाई, मैं कोई सेठ तो हूँ नही ' हर दूसरे रोज पचास एक, दस होटल के, तीस बोनल के, और ऊपर का खर्च अलग। मेरा तो दिवाला पिट गया है-- खुदा की क़सम कर्जदार हो गया हूँ।"

यह सुनकर करीम खामोश हो गया। नजीर ने उससे कहा-- "भई मैं मजबूर था। कहाँ तक यह किस्सा

चलाता ?"

करीम ने कहा– "नजीर साहब, उसको आप से मोहब्बत थी।"

नजीर को मालूम नही था कि मोहब्बत क्या होती है। वह सिर्फ इतना जानता था कि शारदा मे जिस्मानी खुलूस हैं। वह उसके मर्दाना सवालात का बिल्कुल सही जवाब है। इसके अलावा वह शारदा के सम्बन्ध मे और कुछ नही जानता था। अलबत्ता उसने संक्षिप्त शब्दो मे उससे यह जरूर कहा था कि उसका पति अय्याश था। और उसको सिर्फ इस लिये छोड गया था कि दो वर्ष तक उसके यहाँ कोई सन्तान नही हुई थी। लेकिन जब वह उससे अलग हुआ तो नौ महीने के बाद मुन्नी पैदा हुई जो बिल्कुल अपने बाप पर है।

शकुन्तला को वह अपने साथ ले गई। वह उसका ब्याह करना चाहती थी। उसकी इच्छा थी कि वह शरीफ़ाना जिन्दगी बसर करे। करीम ने नजीर को बताया था कि वह उससे बहुत मोहब्बत करती है। करीम ने बहुत कोशिश की थी कि वह उससे पेशा कराये। कई पैसेंजर आये थे। एक रात के दो दो सौ रुपये देने के लिये तैयार थे। मगर शारदा नही मानती थी। करीम से लडना शुरू कर देती थी। करीम उससे कहता था– "तुम क्या कर रही हो?" वह जवाब देती– "अगर तुम बीच मे न होते तो मैं ऐसा कभी न करती। नजीर साहब का एक पैसा खर्च न होने देती।"

शारदा ने नजीर से एक बार उसका फोटो मागा था जो उसने घर से लाकर उसको दे दिया। यह वह अपने साथ जयपुर ले गई थी। उसने नजीर से कभी मोहब्बत का इज्हार नहीं किया। जब दोनो बिस्तर पर लेटे होते तो वह बिल्कुल खामोश रहती। नजीर उसको बोलने पर उकसाता मगर वह कुछ न कहती। लेकिन नजीर उसके जिस्मानी खुलूस का कायल था। जहाँ तक इस बात का सम्बन्ध था वह अखलास की मूर्ति थी।

वह चली गई। नजीर के सीने का बोझ हल्का हो गया। क्योकि वह उसकी घरेलू जिन्दगी मे बहुत बुरी तरह हायल हो गई थी। अगर वह कुछ देर और रहती तो बहुत मुमकिन था कि नजीर अपनी बीवी से बिल्कुल गाफिल हो जाता। कुछ दिन गुजरे तो वह अपनी असली हालत पर आने लगा। शारदा की शारीरिक स्पर्श उसके शरीर से धीरे धीरे दूर होने लगा।

ठीक पन्द्रह दिन के बाद जबकि नजीर घर मे बैठा दफ्तर का काम कर रहा था, उसकी बीवी ने सुबह की डाक लाकर उसे दी। सारे खत वही खोला करती थी। एक खत उसने खोला और देख कर नजीर से कहा--
"मालूम नहीं गुजराती है या हिन्दी।" नजीर ने खत लेकर देखा। उसको मालूम न हो सका कि गुजराती है या हिन्दी। अलग ट्रे मे रख दिया और अपने काम मे मशगूल हो गया। थोडी देर बाद नजीर की बीवी ने अपनी छोटी बहन नईमा को आवाज दी। वह आई तो

वह ख़त उठा कर उसे दिया– "जरा पढो तो क्या लिखा है! तुम तो हिन्दी और गुजराती पढ सकती हो।"

नईमा ने खत देखा और कहा-- "हिन्दी है।" और यह कह कर पढना शुरू किया। "जयपुर, प्रिय नज़ीर साहब! "इतना पढ कर वह रुक गई। नजीर चौका। नईमा ने एक लाइन और पढी। "आदाब! आपतो मुझे भूल चुके होगे। मगर जब से मै यहाँ आई हूँ, आपको याद करती हूँ।" नईमा का रग सुर्ख हो गया। उसने कागज को पलट कर दूसरी तरफ देखा– "कोई शारदा है।"

नजीर उठा। जल्दी से उसने नईमा के हाथ से खत लिया और अपनी बीवी से कहा-- "खुदा मालूम कौन है ... मै बाहर जा रहा हूँ। उसको पढवा कर उर्दू मे लिखवा लाऊँगा।" उसने बीवी को कुछ कहने का मौका ही न दिया और चला गया। एक दोस्त के पास जा कर उसने शारदा के ख़त जैसे कागज मगवाये और हिन्दी मे वैसी ही स्याही से एक खत लिखवाया। पहिले वाक्य वही रखे। मजमून यह था कि बॉम्बे सेण्ट्रल पर शारदा उससे मिली थी। उसको इतने बडे चित्रकार से मिलकर बडी खुशी हुई थी। वग़ैरा वग़ैरा ।

शाम को घर आया तो उसने नया ख़त अपनी बीवी को दिया और उर्दू की नकल पढ कर सुनादी। बीवी ने शारदा के सम्बन्ध मे उससे पूछा तो उसने कहा– "बहुत दिन हुये मै एक दोस्त को छोड़ने गया था। शारदा को यह दोस्त जानता था। वहाँ प्लेटफार्म पर मेरा परिचय

हुआ। चित्रकारी का उसे भी शौक था।"

बात आई गई हो गई। लेकिन दूसरे दिन शारदा का एक और खत आगया। उसको भी नजीर ने उसी तरीके से गोल किया। और फौरन शारदा को तार दिया कि वह खत लिखना बन्द कर दे। और उसके नये पते का इन्तजार करे। डाकखाने जा कर उसने सम्बन्धित पोस्टमेन को ताकीद करदी कि जयपुर का ख़त वह अपने पास रखें। सुबह आकर वह उससे पूछ लिया करेगा। तीन खत उसने इस तरह वसूल किये। उसके बाद शारदा उसको उसके दोस्त के पते से खत भेजने लगी।

शारदा बहुत कम बोलने वाली थी, लेकिन खत बहुत लम्बे लिखती थी। उसने नजीर के सामने कभी अपनी मोहब्बत का इजहार नही किया था, लेकिन खत इजहार से पुर होते थे। गिलें, शिकवे, विरह, प्रतीक्षा इस प्रकार की आम बाते जो प्रेम पत्रो मे होती है। नजीर को शारदा से वह मोहब्बत नही थी जिसका जिक्र कहानियो और उपन्यासो मे होता हैं। इस लिये उसकी समझ मे नही आता था कि वह जवाब मे क्या लिखे। इस लिये यह काम उसका दोस्त ही करता था। हिन्दी मे जवाब लिख कर वह नजीर को सुना देता था, और नजीर कह देता था– "ठीक है।"

शारदा बम्बई आने के लिये बेकरार थी। लेकिन वह करीम के पास नही ठहरना चाहती थी। नजीर

उसके रहने का और कहीं बन्दोबस्त नही कर सकता था। क्योकि मकान उन दिनो मिलते ही नही थे। उसने होटल का सोचा। मगर ख्याल आया, कही ऐसा न हो कि भाडा फूट जाय। चुनाचे उसने शारदा को लिखवाया कि वह अभी कुछ देर इन्तजार करे।

इतने मे साम्प्रदायिक दगे शुरू हो गये। बटवारे से पहिले अजीब अफरा तफरी मची थी। उसकी बीवी ने कहा कि वह लाहौर जाना चाहती है। "मै कुछ दिन वहा रहूँगी। अगर हालात ठीक हो गये तो वापिस आजाऊँगी, वरना आप भी वही चलें आइयेगा।"

नजीर ने कुछ दिन उसे रोका, मगर जब उसका भाई लाहौर जाने के लिये तैयार हुआ तो वह और उसकी बहन, उसके साथ चली गई और वह अकेला रह गया। उसने शारदा को सरसरी तौर पर लिखा कि वह अब अकेला है· जवाब में उसका तार आया कि वह आ रही है। उस तार के मजमून के मुताबिक वह जयपुर से चल पडी थी। नजीर बहुत सिटपिटाया। मगर उसका शरीर बहुत खुश था। वह शारदा के शरीर का खुलूस चाहता था। वे दिन फिर से माँगता था जब वह शारदा के साथ चिम्टा होता था। सुबह ग्यारा बजे से लेकर शाम के सात बजे तक। अब रुपये के खर्च का सवाल नही था। करीम भी नही था। होटल भी नही था। उसने सोचा- "मै अपने नौकर को राजदार बनालूगा। सब ठीक हो जायगा। दस पन्द्रह रुपये उसका मुह बन्द

कर देगे। मेरी बीवी वापिस आई तो वह उससे कुछ नही कहेगा।"

दूसरे दिन वह स्टेशन पहुँचा। फ्रंटियर-मेल आई मगर शारदा, तलाश के बावजूद उसे न मिली। उसने सोचा, शायद किसी वजह से रुक गई है। दूसरा तार भजेगी।

उससे अगले रोज वह सदैव की भाति सुबह की ट्रेन से अपने दफ्तर रवाना हुआ। वह महालक्ष्मी उतरता था। गाडी वहाँ रुकी तो उसने देखा कि प्लटफार्म पर शारदा खडी है। उसने जोर से पुकारा– "शारदा!"

शारदा ने चौक कर उसकी तरफ देखा– "नजीर साहब!"

"तुम यहाँ कहाँ?"

शारदा ने शिकायतन कहा– आप मुझे लेने न आये तो मै यहाँ आपके दफ्तर पहुँची। पता चला कि आप अभी तक नही आये। यहाँ प्लेटफार्म पर अब आपका इन्तजार कर रही थी।"

नजीर ने कुछ देर सोच कर उससे कहा– "तुम यहाँ ठहरो। मै दफ्तर से छुट्टी लेकर अभी आता हूँ।"

शारदा को बेच पर बिठा कर, नजीर जल्दी जल्दी दफ्तर गया। एक अर्जी लिख कर वहाँ चपडासी को दे आया, और शारदा को अपने घर ले गया। रास्ते मे दोनो ने कोई बात न की, लेकिन उनके शरीर आपस मे वात्तचीत करते रहे। एक दूसरे की तरफ खिचते रहे।

घर पहुँच कर नजीर ने शारदा से कहा– "तुम

नहा लो, मै नाश्ते का बन्दोबस्त करता हूँ।"

शारदा नहाने लगी। नजीर ने नौकर से कहा कि उसके एक दोस्त की बीवी आई है। जल्दी से नाश्ता तैयार करदे। उससे यह कह कर नजीर ने अलमारी से बोतल निकाली। एक पेग जो दो के बराबर था गिलास मे उण्डेला और पानी मे मिला कर पी गया। वह उसी होटल वाले ढगसे शारदा से मिलना चाहता था।

शारदा नहा धोकर बाहर निकली और नाश्ता करने लगी। उसने इधर उधर की बेशुमार बाते की। नजीर ने महसूस किया जैसे वह बदल गई है। वह पहिल बहुत कम गो थी। अक्सर खामोश रहती थी। मगर अब वह बात बात पर अपनी मोहब्बत का इजहार करती थी। नजीर ने सोचा-- "यह मोहब्बत क्या है? अगर यह इसका इजहार न करे तो कितना अच्छा है। मुझे इसकी खामोशी ज़्यादा पसन्द थी। उसके द्वारा मुझ तक बहुत सी बाते पहुँच जाती थी, मगर अब इसको न जाने क्या हो गया है। बाते करती है तो ऐसा मालूम होता है, अपने इश्किया खत पढ़ कर सुना रही है।"

नाश्ता खत्म हुआ तो नजीर ने एक पेग तैयार किया और शारदा को पेश किया, लेकिन उसने इन्कार कर दिया। नजीर ने इसरार किया तो शारदा ने उसको खुश करने की खातिर नाक बन्द करके वह पेग पी लिया। बुरा सा मुह बनाया। पानी लेकर कुल्ली की। नजीर को अफसोस सा हुआ कि शारदा ने क्यो पी। उसके

इसरार पर भी इकार किया होता तो ज्यादा अच्छा था। मगर उसने इसके बारे मे ज्यादा गौर न किया। नौकर को बहुत दूर एक काम पर भेजा। दरवाजा बन्द किया, और शारदा के साथ बिस्तर पर लेट गया। "तुमने लिखा था कि वह दिन फिर कब आयेगे। लो आगये है फिर वही दिन, बल्कि राते भी। उन दिनों राते नही होती थी। सिर्फ दिन होते थे। होटल के मैले कुचैल दिन। यहाँ हर चीज उजली है। हर चीज साफ़ है। होटल का किराया भी नही। करीम भी नही। यहाँ हम अपने मालिक आप है।"

शारदा ने अपने विरह की बाते शुरु कर दी। यह जमाना उसने कैसे काटा। वही किताबो और अफसानो वाली व्यर्थ सी बाते। गिले, शिकवे, आहे, राते तारे गिन गिन कर काटना। नजीर ने एक और पेग पिया और सोचा-- कौन तारे गिनता है। गिन कैसे सकता है, इतने सारे तारो को– बिल्कुल फिजूल है, बेहूदा बकवास है।"

यह सोचते हुये उसने शारदा को अपने साथ लगा लिया। बिस्तर साफ था। शारदा साफ थी। वह खुद साफ था। कमरे का वातावरण भी साफ था। लेकिन क्या वजह थी, नज़ीर के दिल व दिमाग पर वह कैफियत तारी नही होती थी, जो उस गन्दे होटल मे, लोहे की चारपाई पर शारदा के स्पर्श मे होती थी।

नजीर ने सोचा, शायद उसने कम पी है। उठकर उसने एक पेग बनाया और एक ही सास मे खत्म करके

शारदा के साथ लेट गया। शादरा ने फिर वही लाख बार कही हुई बाते शुरू कर दी। वही विरह और इन्तजार की बाते। वही गिले, शिकवे। नजीर उकता गया, और इस उकताहट ने उसके शरीर को ठण्डा कर दिया। उसको अनुभव होने लगा कि शारदा की धार घिसकर बेकार हो गई है। उसके शरीर की भावनाये अब वह तेज नही कर सकती। लेकिन वह फिर भी उसके साथ देर तक लेटा रहा।

फारीग हुआ तो उसका जी चाहा कि टैक्सी पकडे और अपने घर चला जाये, अपनी बीवी के पास, मगर जब उसने सोचा कि वह तो अपने घर मे है, और उसकी बीवी लाहौर मे तो दिल ही दिल मे बहुत झुझलाया। उसको यह ख्वाहिश हुई कि उसका घर होटल बन जाये। वह दस रुपये किराये के दे। करीम को पचास रुपये अदा करे और चला जाय।

शारदा के शरीर की निष्ठा बदस्तूर बरकरार थी। मगर वह फिजा नही थी। वह सौदे बाजी नही थी। इस हाथ दे, उस हाथ ले, वाली बात नहीं थी। होटल की वह गन्दगी नही थी। यह सब चीजे मिलमिला कर जो एक बातावरण बनाती थी, वह नही था। नजीर अपने घर मे था। उस बिस्तर पर था जिस पर उसकी सीधी सादी बीवी उसके साथ सोती थी। यह भावना उसकी अचेत बुद्धि मे थी। इसी लिये वह समझ न सकता था कि मामला क्या है। कभी वह यह सोचता था

कि व्हिस्की खराब है। कभी यह सोचता था कि शारदा ने अनुराग नही बरता। और कभी यह ख्याल करता था कि वह खामोश रहती तो सब ठीक होता। फिर वह यह सोचता– इतने दिनो के बाद मिली है, दिल की भड़ास तो निकालना थी बेचारी को। एक दो दिन में ठीक हो जायगी। वही पुरानी शारदा बन जायगी।

पन्द्रह दिन गुजर गये, मगर नजीर को शारदा, वह पुरानी होटल वाली शारदा महसूस न हुई। उसकी बच्ची जयपुर मे थी। होटल मे वह उसके साथ होती थी। नजीर उसके जुकाम के लिये, उसकी फुसियो के लिये, उसके गले के लिये दवाइयाँ मगवाया करता था। अब ये चीजे नही थी। वह बिल्कुल अकेली थी। नजीर उसको और उसकी मुन्नी को बिल्कुल एक समझता था।

एक बार शारदा की दूध से भरी हुई छातियों पर दबाव डालने के कारण नजीर के बालो भरे सीने पर दूध की कई बूदे चिमट गई थी। और उसने एक अजीब प्रकार का आनन्द अनुभव किया था। उसने सोचा था, "माँ बनना कितना अच्छा है। और यह दूध! मर्दो मे यह कितनी बडी कमी हैं कि वह खा पी कर सब हजम कर जाते है। औरते खाती है और खिलाती भी है। किसी को पालना अपने बच्चे ही को सही कितनी शानदार चीज हैं।"

अब मुन्नी, शारदा के साथ नही थी। वह अपूर्ण थी। उसकी छातियाँ भी अपूर्ण थी। अब उनमे दूध

नहीं था। वह सफेद सफेद अमृत। नजीर अब उसको अपने सीने के साथ भींचता था तो वह उसको मना नहीं करती थी। शारदा, अब वह शारदा नहीं थी, लेकिन हकीकत यह है कि शारदा वही शारदा थी, बल्कि उससे कुछ ज्यादा थी। यानी इतने दिन अलग रहने के बाद उसकी शारीरिक निष्ठा तेज हो गई थी। वह आत्मिक रूप से भी नजीर को चाहती थी। लेकिन नजीर को ऐसा अनुभव होता था कि शारदा में अब वह पहिले जैसा आकर्षण या जो भी कुछ था नहीं रहा।

पन्द्रह दिन लगातार उसके साथ गुजारने पर वह इसी नतीजे पर पहुँचा था। पन्द्रह दिन दफ्तर से गैर हाजिरी बहुत काफी थी। उसने अब दफ्तर जाना शुरू कर दिया। सुबह उठकर दफ्तर जाता और शाम को लौटता। शारदा ने बिल्कुल बीवियों की तरह उसकी सेवा शुरू कर दी। बाजार से ऊन खरीद कर उसके लिये एक स्वेटर बुन दिया। शाम को दफ्तर से आता तो उसके लिये सोडे मंगवा कर रखे होते। बर्फ थर्मोस में डाली हुई होती। सुबह उठकर उसका शेव का सामान मेज पर रखती। पानी गरम कराके उसको देती। वह शेव कर चुकता तो सारा सामान साफ करती। घर की सफ़ाई कराती। खुद झाड़ू देती। नजीर और भी ज्यादा उकता गया।

रात को वह इकट्ठे सोते थे। मगर अब उसने यह बहाना किया कि वह कुछ सोच रहा है, इस लिये अकेला

सोना चाहता है। शारदा दूसरे पलग पर सोने लगी। मगर यह नजीर के लिये एक और उलझन हो गई। वह गहरी नींद सोती होतीं और वह जागता रहता। और सोचता रहता कि आखिर यह सब कुछ है क्या? यह शारदा यहाँ क्यो है? करीम के होटल मे उसने उसके साथ चन्द दिन बड़े अच्छे गुजारे थे। मगर यह उसके साथ क्यो चिमट गई है। आखिर इसका अजाम क्या होगा? मोहब्बत वगैरा सब बकवास है। जो एक छोटी सी बात थी वह अब नही रही। उसको वापिस जयपुर जाना चाहिये।

कुछ दिनो के बाद उसने यह अनुभव करना शुरू कर दिया कि वह गुनाह कर रहा है। वह करीम के होटल मे भी यही करता था। उसने शादी से पहिले भी ऐसे अनेक गुनाह किये थे, मगर उनका उसको अहसास ही नहीं था। लेकिन अब उसने बडी तेजी से अनुभव करना शुरू किया था कि वह अपनी बीवी से बेवफाई कर रहा है। अपनी सीधी सादी बीवी से, जिसको उसने कई बार शारदा के पत्रो के सिलसिले मे चकमा दिया था। शारदा अब और भी ज्यादा अनाकर्षक हो गई। वह उससे रूखा बरताव करने लगा। मगर उसके अनुराग मे कोई अन्तर न आया। वह इतना जानती थी कि आर्टिस्ट लोग मौजी होते है। इसी लिये वह उससे उसकी उदासीनता की शिकायत नहीं करती थी।

पूरा एक महीना हो गया। जब नजीर ने दिन गिने

तो उसको बहुत उलझन हुई। "यह औरत क्या पूरा एक महीना यहां रही है मैं कितना नीच आदमी हूँ और इधर हर रोज मैं अपनी बीवी को खत लिखता हूँ, जैसे बड़ा वफादार शौहर हूं जैसे मुझे उसका बहुत ख्याल है। जैसे उसके बगैर मेरी जिन्दगी अजीरण है। मैं कितना बड़ा फ्राड हूँ। उधर अपनी बीवी से गद्दारी कर रहा हूँ, इधर शारदा से। मैं क्यो इससे साफ साफ नही कह देता कि भई अब मुझे तुम से लगाव नहीं रहा। लेकिन सवाल यह है कि मुझे लगाव नही रहा या शारदा में वह पहिले जैसी बात नही रही?"

वह इस सम्बन्ध मे सोचता मगर उसे कोई जवाब न मिलता। उसके मस्तिष्क मे अजीब अफरातफरी फैली थी। वह अब नैतिकता के बारे मे सोचता था। बीवी से जो वह गद्दारी कर रहा था, उसका एहसास हर वक्त उस पर छाया रहता था। कुछ दिन और गुजरे तो यह एहसास और भी ज्यादा तीव्र हो गया। और नजीर को खुद से नफरत होने लगी। "मै बहुत नीच हूँ। यह औरत मेरी दूसरी बीवी क्यो बन गई है? मुझे इसकी कब जरूरत थी? यह क्यो मेरे साथ चिपक गई है? मैं ने क्यो इसको यहाँ आने की इजाजत दी? जब उसने तार भेजा था... लेकिन वह तार ऐसे वक्त पर मिला था कि मैं उसको रोक ही नही सकता था।"

फिर वह सोचता कि शारदा जो कुछ करती है, बनावट है। वह उसको इस बनावट के द्वारा अपनी बीवी

से जुदा करना चाहती है। इससे उसकी नजरो मे शारदा और भी गिर गई। उससे नजीर का व्यवहार और भी रूखा हो गया। इस रूखेपन को देख कर शारदा बहुत ज़्यादा नम्र हो गई। उसने नजीर के आराम व आसाइश का ज्यादा ख्याल रखना शुरू कर दिया लेकिन नजीर को उसके इस रवैयें से बहुत उलझन हुई। वह उससे बेहद नफरत करने लगा।

एक दिन उसकी जेब ख़ाली थी। बैंक से रुपये निकालने उसे याद नही रहे थे। दफ्तर बहुत देर से गया, इस लिये कि उसकी तबीयत ठीक नहीं थी। जाते वक्त शारदा ने उससे कुछ कहा तो वह उस पर बरस पडा-- "बकवास न करो। मै ठीक हूँ। बैंक से रुपये निकलवाना भूल गया हूँ और सिगरेट मेरे सारे खत्म है।"

दफ्तर के पास की दूकान से उसको गोल्ड फ्लेक का डब्बा मिला। ये सिगरेट उसको नापसन्द थे। मगर उधार मिल गये थे इसलिये दो तीन मजबूरन पीने पडे। शाम को घर आया तो देखा, तिपाई पर उसका मनभाता सिगरेट का डब्बा पडा है। ख्याल किया खाली है। फिर सोचा, शायद एक दो इसमे पडे हो। खोल कर देखा तो भरा हुआ था। शारदा से पूछा-- "यह डब्बा कहाँ से आया?"

शारदा ने मुस्करा कर जवाब दिया-- "अन्दर अलमारी मे पडा था।"

नजीर ने कुछ न कहा। उसने सोचा, शायद मैंने

खोल कर अन्दर अलमारी मे रख दिया था, और भूल गया। लेकिन दूसरे दिन फिर तिपाई पर पूरा डब्बा मौजूद था। नजीर ने जब शारदा से उसकी बाबत पूछा ता उसने मुस्करा कर वही जवाब दिया– "अन्दर अलमारी मे पड़ा था।"

नजीर ने बडे गुस्से के साथ कहा– "शारदा तुम बकवास करती हो। तुम्हारी यह हरकत मुझे पसन्द नहीं। मैं अपनी चीजें खुद ख़रीद सकता हूँ। मै भिखारी नही हूँ जो तुम मेरे लिये हर रोज सिगरेट खरीदा करो।"

शारदा ने बडे प्यार से कहा– "आप भूल जाते है, इसी लिये मैने दो बार गुस्ताखी की।

नजीर ने बिना कारण और ज्यादा गुस्से से कहा– "मेरा दिमाग ख़राब हैं ··· लेकिन मुझे यह गुस्ताख़ी हरगिज पसन्द नही।"

शारदा का स्वर बहुत ही नम्र हो गया-- "मै आप से माफी मागती हूँ।"

नजीर ने एक क्षण के लिये विचार किया कि शारदा की कोई ग़लती नही। उसे आगे बढकर उसका मुँह चूम लेना चाहिये। इसलिये कि वह उसका इतना ख्याल रखती थी। मगर फौरन ही उसको अपनी बीवी का ख्याल आया, कि वह गद्दारी कर रहा हैं। चुनाचे उसने शारदा से बड़े नफरत भरे स्वर मे कहा– "बकवास न करो। मेरा ख्याल है कि तुम्हे कल यहाँ से ख़ाना कर दूगा। कल सुबह, तुम्हे जितने रुपये की जरूरत होगी

दे दूगा।"

लेकिन यह कह कर नजीर ने अनुभव किया जैसे वह वडा कमीना और नीच है।

शारदा ने कुछ न कहा। रात को वह नजीर के साथ सोई। सारी रात उससे प्यार करती रही। नजीर को उससे उलझन होती रही, मगर उसने शारदा पर उसको प्रकट न किया। सुवह उठा तो नाश्ते पर अनेक स्वादिष्ट चीजे थी। फिर भी उसने शारदा से कोई बात न की। निवृत्त हो कर वह साधा बैंक गया। जाने से पहिले उसने शारदा से सिर्फ इतना कहा– "मै बैंक जा रहा हूँ। अभी वापिस आता हूँ।"

बैंक की वह ब्राच, जिसमे नजीर का रुपया जमा था, बिल्कुल पास थी। वह दो सौ रुपये निकलवा कर फौरन ही वापिस आगया। उसका इरादा था कि वह सब रुपये शारदा के हवाले कर देगा और टिकिट वगैरा दिलवाकर उसको रवाना कर देगा। मगर वह जब घर पहुँचा तो उसके नौकर ने बताया कि वह चली गई है।

उसने पूछा– "कहाँ?"

नौकर ने बताया– "जी मुझसे उन्होने कुछ नही कहा अपना ट्रण्क और बिस्तर साथ ले गई है।"

नज़ीर अन्दर कमरे मे आया तो उसने देखा कि तिपाई पर उसके पसन्दीदा सिगरेटो का डव्वा पडा है। भरा हुआ।

मस्मी

नाम उसका मिसेज स्टैला जैक्सन था मगर सब उसे मम्मी कहते थे। दरमियाने कद की अधेड़ उम्र की औरत थी। उसका पति जैक्सन पिछले से पिछले महा-युद्ध मे मारा गया था। उसकी पेशन स्टैला को लगभग दस वर्ष से मिल रही थी।

वह पूना मे कैसे आई, कब से वहाँ थी, इस सम्बन्ध मे मुझे कुछ नही मालूम। दरअसल मैंने उसके बारे मे जानने की कभी कोशिश ही नही की थी। वह इतनी दिलचस्प औरत थी कि उससे मिल कर सिवाये उसके व्यक्तित्व के और किसी चीज़ से दिलचस्पी नही रहती थी। उससे किसका सम्बन्ध है, इसके बारे मे कुछ जानने की

जरूरत ही महसूस नही होती थी। इस लिये कि वह पूना के हर कण से सम्बन्धित थी। हो सकता है यह एक हद तक अतिश्योक्ति हो मगर पूना मेरे लिये वही पूना है और उसके वही कण, उसके तमाम कण है जिनके साथ मेरी चन्द यादे नत्थी है। और मम्मी का अजीब व गरीब व्यक्तित्व उनमे से हर एक मे मौजूद है।

उससे मेरी पहिली मुलाकात पूना मे ही हुई। .... मै निहायत आलसी व्यक्ति हूँ। यो तो सैर सपाटे को बड़ी वडी उमगे मेरे दिल मे मौजूद है। आप मेरी बाते सुने तो आप समझियेगा कि मै निकट भविष्य मे किनचिन चिगा या हिमालय की इसी प्रकार के नामकी किसी और चोटी को सर करने के लिये निकल जाने वाला हूँ। ऐसा हो सकता है मगर यह ज्यादा सम्भव है कि मै यह चोटी सर करके वही का हो रहूँ।

खुदा मालूम कितने वर्ष से बम्बई मे था। आप इससे अन्दाजा लगा सकते है कि जब पूने गया तो बीवी मेरे साथ थी। एक लडका होकर उसको मरे लगभग चार वर्ष हो चुके थे। इस दौरान मे ठहरिये मै हिसाब लगा लू आप यह समझ लीजिये कि आठ वर्ष से बम्बई मे था। मगर इस दौरान मे मुझे वहाँ का विक्टोरिया गार्डन्ज और म्यूजियम देखने का भी अवसर प्राप्त नही हुआ था। यह तो केवल सयोग था कि मै एकदम पूना जाने के लिये तैयार हो गया। जिस फिल्म कम्पनी मे नौकर था उसके मालिको से एक निकम्मी सी

बात पर दिल में नाराजी पैदा हुई और मैंने सोचा कि यह उलझन दूर करने के लिये पूना हो आऊँ। वह भी इसलिये कि पास था और वहाँ मेरे चन्द दोस्त रहते थे।

मुझे प्रभात नगर जाना था। जहाँ मेरा फिल्मो का एक पुराना साथी रहता था। स्टेशन के बाहर मालूम हुआ कि यह जगह काफी दूर है। मगर उस वक्त हम टागा ले चुके थे। धीरे धीरे चलने वाली चीजो से मेरी तबीयत बहुत घबराती है। मगर मै अपने दिल से उलझन दूर करने के लिये आया था इस लिये मुझे प्रभात नगर पहुँचने की कोई जल्दी नही थी। तांगा बहुत वाहियात किस्म का था। अलीगढ़ के इक्को से भी ज़्यादा वाहियात। हर वक्त गिरने का खतरा रहता है। घोडा आगे चलता है और सवारियाँ पीछे। एक दो धूल से भरे हुये बाजार जैसे तैसे पार किये तो मेरी तबियत घबरा गई। मैंने अपनी बीवी से मशवरा किया और पूछा कि ऐसी सूरत मे क्या करना चाहिये। उसने कहा कि धूप तेज है। मैंने जो और तागे देखे है वह भी इसी प्रकार के है। अगर इसे छोड़ दिया तो पैदल चलना होगा। जो जाहिर है कि इस सवारी से ज़्यादा कष्ट दायक है। मैंने उस से विरोध उचित न समझा धूप वास्तव मे तेज थी।

घोडा एक फर्लांग आगे बढ़ा होगा कि पास से उसी हवन्नक टाइप का एक टागा गुजरा। मैंने सरसरी तौर पर देखा। एकदम कोई चीखा– "उये मण्टो के घोडे!"

मैं चौंक पडा। चड्ढा था। एक घिसी हुई मेम के साथ। दोनो साथ साथ जुड के बैठे थे। मेरी पहिली प्रतिक्रिया बडी दुखदायी थी कि चड्ढे का सौन्दर्य-प्रेम कहाँ गया जो ऐसी लाल लगामी के साथ बैठा है। उम्र का ठीक अन्दाजा तो मैंने उस समय नहो किया था मगर उस औरत की झुर्रियां, पाउडर और रोज की तहो मे से भी साफ नजर आ रही थी। इतना भडकोला मेकअप था कि देख कर सख्त कोफ्त होती थी।

चड्ढे को बहुत दिन के बाद मैंने देखा था। वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था। "उये, मण्टो के घोड़े" के जवाब मे यकीनन मैंने भी कुछ इसी प्रकार का नारा लगाया होता, मगर उस औरत को उसके साथ देख कर मेरी सारी बेतकल्लुफी झिरियाँ झिरियाँ हो गई।

मैंने अपना तागा रुकवा लिया। चड्ढे नें भी अपने कोचवान से कहा कि ठहर जाये। फिर उसने उस औरत से अग्रेजी मे कहा— "मम्मी ! जस्ट ए मिनिट" तागे से कूद कर वह मेरी तरफ अपना हाथ बढाते हुये चीखा— "तुम? तुम यहाँ कैसे आये?" फिर अपना बढा हुआ हाथ बड़ी बेतकल्लुफी से मेरी पुर तकल्लुफ बीवी से मिलाते हुये कहा— "भाभी जान— आपने कमाल कर दिया— इस गुल महम्मद को आखिर आप खीचकर यहाँ ले ही आई।"

मैंने उससे पूछा— "तुम कहाँ जा रहे हो?"

चड्ढे ने ऊँचे स्वर में कहा— "एक काम से जा रहा

हूँ। ·· तुम ऐसा करो, सीधे ··" वह एक दम पलट कर मेरे तागे वाले से सम्बोधित हुआ-- "देखो, साहब को हमारे घर ले जाओ ··· कराया वराया मत लेना इनसे।" उधर से फौरन ही निपट कर उसने निपटने के ढग से मुझसे कहा-- "तुम जाओ। नौकर वहाँ होगा ··· बाकी तुम देख लेना।"

और वह फुदक कर अपने टागे मे उस बूढी मेम के साथ बैठ गया, जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे कुछ सन्तोष हुआ था। बल्कि यो कहिये कि वह बोझ जो एकदम दोनो को साथ साथ देख कर मेरे सीने पर आपडा था काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तांगा चल पडा।' मैने अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार फर्लांग चल कर वह एक डाक बगला नुमा किस्म की इमारत के पास रुका और नीचे उतर गया-- "चलिये साहब ...."

मैने पूछा-- "कहाँ?"

उसने जवाब दिया-- "चड्डा साहब का मकान यही है।"

"ओह!" मैनें सवालिया नजरो से अपनी बीवी की तरफ देखा। उसके तेवरो ने मुझे बताया कि वह चड्डे के मकान के हक मे नही थी। सच पूछियें तो वह पूना के ही हक मे नही थी। उसे विश्वास था कि मुझे वहाँ पीने पिलाने वाले दोस्त मिल जायेगे। परेशानी दूर करने का बहाना पहिले ही से मौजूद हैं। इस लिये दिन रात

उडेगी ... मैं तांगे से उतर गया। छोटा सा अटैची केस था वह मैंने उठा लिया और अपनी बीवी से कहा "चलो।"

वह शायद मेरे तेवरो से पहिचान गई थी कि उसे हर हालत मे मेरा फैसला मानना पडेगा। चुनांचे उसने आना कानी नहीं की और खामोश मेरे साथ चल दी।

बहुत मामूली सा मकान था। ऐसा मालूम होता था कि मिलिट्री वालो ने अस्थायी रूपसे एक छोटा सा बगला बनाया था। कुछ दिन उसका उपयोग किया और फिर छोड कर चलते बने। चूने का काम, बडा कच्चा था। जगह जगह से प्लास्टर उखड़ा हुआ था। और घर का भीतरी भाग ऐसा ही था जैसा एक बेपरवाह कुवारे के मकान का हो सकता है। जो फिल्मो का हीरो हो और ऐसी कम्पनी मे काम करता हो जहॉ मासिक पगार तीसरे महीने मिलती हो और वह भी कई किस्तो मे।

मुझे इसका पूरा अहसास था कि वह औरत जो बीवी हो, ऐसे गजे वातावरण मे यकीनन परेशानी और घुटन अनुभव करेगी। मगर मैंने यह सोचा था कि चड्डा आजाये तो उसके साथ ही प्रभात नगर चलेगे। वहॉ जो मेरा फिल्मो का पुराना साथी रहता था, उसकी बीवी और बच्चे भी थे। वहॉ के माहौल मे मेरी बीवी जैसे तैसे दो तीन दिन गुजार सकती है।

नौकर भी अजीब फक्कड आदमी था। जब हम घर मे दाखिल हुये तो सब दरवाजे खुले थे, मगर वह मौजूद

नही था। जब आया तो उसने हमारी मौजूदगी का कोई नोटिस न लिया। जैसे हम वर्षो से वही बैठे थे। और इसी तरह बैठने का इरादा रखते थे।

जब वह कमरे मे दाखिल हो कर हमे देखे बगैर पास से गुजर गया तो मै समझा कि शायद कोई मामूली एक्टर है, जो चडा के साथ रहता है। लेकिन जब मैंने उससे नौकर के बारे मे पूछा तो मालूम हुआ कि वही सज्जन चडा साहब के चहीते नौकर थे।

मुझे और मेरी बीवी, दोनो को प्यास लग रही थी। उससे पानी लाने को कहा तो वह गिलास ढूढने लगा। बड़ी देर के बाद उसने एक टूटा हुआ मग अलमारी के नीचे से निकाला और बडबड़ाया— "रात एक दर्जन गिलास साहब ने मगवाये थे, मालूम नही किधर गये।"

मैंने उसके हाथ मे पकडे हुये टूटे मग की तरफ इशारा किया-- "क्या आप इसमे तेल लेने जा रहे है?"

तेल लेने जाना बम्बई का एक खास मुहावरा है। मेरी बीवी इसका मतलब न समझी, मगर हस पड़ी। नौकर कुछ बौखला गया-- "नही साहब .... मै .... तपास कर रहा था कि गिलास कहॉ है?"

मेरी बीवी ने उसको पानी लाने से इन्कार कर दिया। उसने वह टूटा हुआ मग अलमारी के नीचे इस ढग से से रखा जैसे वही इसकी जगह थी। अगर इसे कही और रख दिया जाता तो यकीनन घर का सारा विधान नष्ट भ्रष्ट हो जाता। इसके बाद वह कमरे से ऐसे बाहर

निकला जैसे उसको मालूम था कि हमारे मुह मे कितने दांत है।

मै पलग पर बैठा था जो शायद चड्डे का था। उससे कुछ दूर हटकर दो आराम कुर्सियां थी। इनमें से एक पर मेरी बीवी बैठी पहलू बदल रही थी। काफी देर तक हम दोनो खामोश रहे। इतने मे चडा आ गया। वह अकेला था। उसको इस बात का बिल्कुल ध्यान नही था कि हम उसके मेहमान है। और इस लिये हमारा स्वागत सत्कार उसका कर्तव्य था। कमरे के अन्दर दाखिल होते ही उसने मुझसे कहा-- "दैट इज दैट-- तो तुम आगये ओल्ड ब्वाय-- चलो जरा स्टूडियो तक हो आये। तुम साथ होगे तो एडवांस मिलने मे आसानी हो जायगी .... आज शाम को ....।" मेरी बीवी पर उसकी नजर पडी, तो वह रुक गया और खिलखिला कर हंसने लगा-- "भाभी जान, कही आपने इसे मौलवी तो नही बना दिया।" फिर और जोर से हसा-- "मौलवियो की ऐसी तैसी, उठो मण्टो, भाभी जान यहा बैठती है। हम अभी आ जायेगे।"

मेरी बीवी जलकर पहिले कोयला थी तो अब बिल्कुल राख हो गई थी। मै उठा और चडा के साथ हो लिया। मुझे मालूम था कि थोडी देर पेचो-ताव खा कर वह सो जायगी। और यही हुआ। स्टूडियो पास ही था। जल्दी जल्दी मे मेहता जी के सर चढ़ कर चडे ने दो सौ रुपये वसूल किये। और हम पौन घण्टे मे जब

वापिस आये तो देखा कि वह आराम कुर्सी पर बड़े आराम से सो रही थी। हमने उसे बेआराम करना उचित न समझा और दूसरे कमरे मे चले गये जो कबाड़ खाने से मिलता जुलता था। इस मे जो चीज थी आश्चर्य जनक ढग से टूटी हुई थी और सब मिलकर एक पूर्णता मे बदल गई थी।

हर चीज धूल धूसरित थी और ऐसा मालूम होता था कि यह आवश्यक है। जैसे इसका अस्तित्व इस कमरे के वातावरण को वनाने मे आवश्यक हो। चडे ने फौरन ही अपने नौकर को ढूंढ निकाला और उसे सौ रुपये का नोट देकर कहा– "चीन के शाहजादे, दो बोतले थर्ड क्लास 'रम' की ले आओ– मेरा मतलब है 'थ्री एक्स' रम की और आधा दर्जन गिलास।"

मुझे वाद मे मालूम हुआ कि उसका नौकर सिर्फ चीन ही का नही, दुनिया के हर बड़े देश का शाहजादा था। चडे की जबान पर जिस देश का नाम आजाता, वह उसी का शहजादा बन जाता था। उस समय का चीन का शहजादा सौ रुपये का नोट उंगलियो से खड़ खड़ाता चला गया।

चडे ने टूटे हुये स्प्रिंगो वाले पलग पर बैठ कर अपने ओठ थ्री एक्स रम के स्वागत मे चटखारते हुये कहा– "दैट इज दैट– तो आफ्टर आल तुम इधर आ ही निकले–" फिर एक दम चिन्तित हो गया–"यार, भाभी का क्या हो ··· वह तो घबरा जायगी।"

चडा विना बीवी के था, मगर उसे दूसरों की बीवियों का बहुत ख्याल रहता था। वह उनका इतना सम्मान करता था कि सारी उम्र कुवारा ही रहना चाहता था। वह कहा करता था-- "यह अहसासे-- कमतरी है, जिसने अभी तक इस न्यामत से महरूम रखा है। जब शादी का ख्याल आता है तो फौरन तैयार हो जाता हूँ, लेकिन बाद मे यह सोचकर कि मै बीवी के काबिल नही हूँ, सारी तैयारी कोल्ड स्टोरेज मे डाल देता हूँ।"

रम फौरन ही आ गई, और गिलास भी। चडे ने छः मगवाये थे और चीन का शहजादा तीन लाया था। बाकी के तीन रास्ते मे टूट गये थे। चडे ने इनकी कोई परवाह न की, और खुदा का शुक्र अदा किया कि बोतले सलामत रही। एक बोतल जल्दी से खोलकर उसने कुवारे गिलासों मे रम डाली और कहा– "तुम्हारे पूने आने की खुशी मे।"

हम दोनो ने लम्बे लम्बे घूट भरे और गिलास खाली कर दिये।

दूसरा दौर शुरू करके चडा उटा और दूसरे कमरे मे देख कर आया कि मेरी बीवी अभी तक सो रही है। उसको वहुत तरस आया, और कहने लगा– "मै शोर करता हूँ जिससे उनकी नीन्द खुल जायगी। .... फिर ऐसा करेंगे .... ठहरो पहिले मै चाय मंगवाता हूँ" यह कहकर उसने रम का एक छोटा सा घूण्ट लिया और नौकर को आवाज दी– "जमेका के शहजादे।"

जमैका का शहजादा फौरन ही आगया। चड्डु ने उससे कहा-- "देखो, मम्मी से कहो एक दम फर्स्ट क्लास चाय तैयार करके भेजदे एक दम!"

नौकर चला गया। चड्डु ने अपना गिलास खाली किया और शरीफाना पेग डालकर कहा-- "मैं फिलहाल ज्यादा नही पिऊँगा। पहिले चार पेग मुझे बहुत भावुक बना देते है। मुझे भाभी को छोडने तुम्हारे साथ प्रभात-नगर जाना है।"

आधा घण्टे के बाद चाय आ गई। बहुत साफ बर्तन थे और ढग से ट्रे मे चुने हुये थे। चड्डु ने टी कोज़ी उठाकर चाय की खुशबू सूघी और खुशी से उछल पड़ा। "मम्मी इज ए ज्वेल ...।" फिर उसने इथोपिया के शहजादे पर बरसना शुरू कर दिया। इतना शोर मचाया कि मेरे कान झनझना उठे। इसके बाद उसने ट्रे उठाई और मुझसे कहा- "आओ!"

मेरी बीवी जाग रही थी। चड्डु ने ट्रे बडी सफाई से टूटी हुई तिपाई पर रखी और आदर पूर्वक कहा- "हाजिर है बेगम साहब।"

मेरी बीवी को यह मजाक पसन्द न आया, लेकिन चाय का सामान चूकि साफ सुथरा था इस लिये उसने इकार न किया और दो प्यालियाँ पी ली। इनसे उसको कुछ सन्तोष हुआ और उसने हम दोनो से अर्थ भरे स्वर मे कहा- "आप अपनी चाय तो पहिले ही पी चुके है!"

मैंने जवाब न दिया मगर चड्डु ने झुक कर बडे ईमानदाराना ढग से कहा- "जी हाँ यह गलती हम से

हो चुकी हैं, लेकिन हमे विश्वास था कि आप जरूर माफ कर देगी।"

मेरी बीवी मुस्कराई तो वह खिल खिलाकर हसा—"हम दोनो बहुत ऊँची नसल के सुअर है ·· जिन पर हर हराम चीज हलाल हैं। चलिये अब हम आप को मस्जिद तक छोड़ आये।"

मेरी बीवी को फिर चड्ढे का यह मजाक पसन्द न आया। दर असल उसको चड्ढे ही से नफरत थी। बल्कि यों कहिये कि मेरे हर दोस्त से नफरत थी और चड्ढा खास तौर पर उसे बहुत खलता था। इस लिये कि वह कभी कभी बेतकल्लुफी की सीमा को भी लाघ जाता था। मगर चड्ढे को इसकी कोई परवाह न थी। मेरा ख्याल है उसने कभी इसके बारे मे सोचा ही नही था। वह ऐसी फिजूल बातो मे दिमाग खर्च करना एक ऐसी 'इन डोर गेम' समझता था जो लोडो से कई गुना लायानी है। उसने मेरी बीवी के जलते भुनते तेवरो को बडी प्रसन्न आखो से देखा और नौकर को आवाज दी—"कबाबिस्तान के शहजादे! एक अदद टागा लाओ, रोल्स रायलस की किस्म का।"

कबाबिस्तान का शहजादा चला गया और साथ ही चड्ढा। वह शायद दूसरे कमरे मे गया था। एकान्त मिला तो मैंने अपनी बीवी को समझाया कि कबाब होने की कोई जरूरत नही। इसान की जिन्दगी मे ऐसे क्षण आही जाया करते है जिनकी उसने कभी कल्पना भी नही की

थी। उनको व्यतीत करने के लिये सब से अच्छा तरीका यही है कि उनको गुजर जाने दिया जाय। लेकिन सदैव के अनुसार उसने मेरे इन मार्मिक उपदेशो को नही माना और बडबडाती रही। इतने मे कब्राविस्तान का शहजादा रोल्स रायल्स किस्म का ताँगा लेकर आगया। हम प्रभात नगर रवाना हो गये।

बहुत ही अच्छा हुआ कि मेरा फिल्मो का पुराना साथी घर मे मौजूद नही था। उसकी बीवी थी। चडे ने मेरी बीवी उसके सुपुर्द की और कहा– "खरबूजा, खरबूजे को देखकर रग पकडता है। बीवी, बीवी को देखकर रग पकडती है। यह हम अभी हाजिर हो कर देखेगे।" फिर वह मुझसे मुखातिब हुआ-- "चलो मण्टो स्टूडियो मे तुम्हारे दोस्त को पकडे।"

चड्ढा कुछ ऐसी अफरा तफरी मचा दिया करता था कि विरोधी शक्तियो को सोचने समझने का बहुत कम मौका मिलता था। उसने मेरा बाजू पकडा और बाहर ले गया और मेरी बीवी सोचती ही रह गई। टागे मे सवार होकर चड्डे ने अब कुछ सोचने के अन्दाज मे कहा– "यह तो हो गया! अब क्या प्रोग्राम है?" फिर खिल-खिला कर हंसा – "मम्मी -- ग्रेट मम्मी!"

मै उससे पूछने ही वाला था यह मम्मी किस बखचोच की औलाद है, कि चड्डे ने बातो का कुछ ऐसा सिलसिला शुरू कर दिया कि मेरा विचार बेमौत मर गया।

तागा वापिस उस डाक बगला नुमा कोठी पर पहुँचा,

जिसका नाम सईदा काटेज था, मगर चड्डा उसको रजीदा काटेज कहता था। इस लिये कि उसमें रहने वाले सबके सब रजीदा रहते है। हालांकि यह गलत था, जैसा कि मुझे बाद मे मालूम हुआ।

इस काटेज मे काफी आदमी रहते थे, हालांकि बाहर से देखने मे यह जगह बिल्कुल वीरान मालूम होती थी। सब के सब उसी फिलम कम्पनी मे नौकर थे, जो महीने की तनख्वाह हर तिमाही के बाद देती थी, और वह भी कई क़िस्तो मे। एक एक करके जब वहां के निवासियों से मेरा परिचय हुआ तो पता चला कि सब असिस्टैण्ट डायरेक्टर थे। कोई चीफ असिस्टैण्ट डायरेक्टर, कोई उसका नायब, कोई नायब दर नायब। हर दूसरा, किसी पहिले का असिस्टैण्ट था और अपनी निजी फिल्म कम्पनी की बुनयादे अनुकूल करने के लिये धन एकत्रित कर रहा था। कपडो और बाहरी रूप रग से हर एक हीरो मालूम होता था। कण्ट्रोल का जमाना था मगर किसी के पास राशन कार्ड नही था। वह चीजे भी जो थोडी सी तकलीफ के बाद आसानी से कम क़ीमत पर मिल सकती थी, ये लोग ब्लेक मार्किट से खरीदते थे। पिक्चर जरूर देखते थे। रेस का मौसम हो तो रेस खेलते थे वरना सट्टा। जीतते कभी कभी ही थे मगर हारते हर रोज थे।

सईदा काटेज की आबादी घनी थी। जगह कम थी इस लिये मोटर गराज भी रहने के लिये इस्तेमाल होता

था। इसमे एक फेमिली रहती थी। शीरी नाम की एक औरत थी जिसका पति शायद, समानता तोडने के लिये असिस्टैण्ट डायरेक्टर नही था। वह इसी फिलम कम्पनी मे नौकर था मगर मोटर ड्रायवर था। मालूम नही वह कब आता था और कब जाता था। क्योकि मैने उस शरीफ आदमी को वहाँ कभी नही देखा। शीरी के पेट से एक छोटा सा लडका था जिसको सईदा काटेज के सब निवासी फुर्सत के समय प्यार करते थे। शीरी जो कुबूल सूरत थी अपना अधिकाश समय गराज के अन्दर गुजारती थी।

काटेज का प्रतिष्ठित भाग चड्ढे और उसके दो साथियो के पास था। ये दोनो भी एक्टर थे, मगर हीरो नही थे। एक सईद था जिसका फिलमी नाम रजीत कुमार था। चड्ढा कहा करता था– "सईदा काटेज इसी खर जात के नाम के कारण प्रसिद्ध है। वरना इसका नाम रजीदा काटेज ही था। सुन्दर था और बहुत कम बोलने वाला। चड्ढा कभी कभी उसे कछुआ कहा करता था, इस लिये कि वह हर काम बहुत धीरे धीरे करता था।

दूसरे एक्टर का नाम, मालूम नही क्या था। मगर सब उसे गरीबनवाज कहते थे। हैदराबाद के एक खाते पीते घराने से सम्बन्ध रखता था। एक्टिग के शौक मे यहाँ चला आया था। तख्वाह अढाई सौ रुपये माहवार निश्चित थी। एक वर्ष होगया था, नौकर हुये मगर इस दौरान मे उसने सिर्फ एक बार अढाई सौ रुपये एडवास के रूप मे लिये थे। वह भी चड्ढे के लिये, क्योकि उसे

एक बड़े खूंखार पठान का कर्जा चुकाना था। गद्य काव्य की भाषा मे फिल्मी कहानियां लिखना उसका शगल था। कभी कभी कविता भी लिख लेता था। काटेज का हर व्यक्ति उसका कर्जदार था।

शकील और अकील दो भाई थे। दोनों किसी असिस्टैण्ट डायरेक्टर के असिस्टैण्ट थे। और 'आंख के अंधे नाम नैन सुख' की कहावत को झुठलाने का प्रयत्न कर रहे थे।

बड़े तीन, यानी चड्डा, सईद और गरीब नवाज शीरी का बहुत ख्याल रखते थे। लेकिन तीनो इकट्ठे गराज मे नही जाते थे। कुशल क्षेम पूछने का कोई वक़्त भी निश्चित नही था। तीनो जब काटेज के बड़े कमरे मे इकट्ठे होते तो उनमे से एक उठकर गराज म चला जाता और कुछ देर वहाँ बैठ कर शीरी से घरेलू मामलो पर बात चीत करता रहता। बाकी दो अपने काम मे लगे रहते।

जो असिस्टैंण्ट किस्म के लोग थे, वह शीरी का हाथ बटाया करते थे। कभी बाजार से उसको सौदा सामान ला दिया। कभी लाण्ड्री मे उसके कपड़े धुलने दे आये और कभी उसके रोते बच्चे को बहला दिया।

इनमे से दुखी हृदय कोई भी न था। सब के सब प्रसन्न थे। शायद अपने दुख पर। वह अपने हालात की प्रतिकूलता का जिक्र भी करते थे तो बड़े खुश होकर। इसमे कोई शक नही कि उनकी जिन्दगी बड़ी दिलचस्प थी।

हम काटेज के गेट मे दाखिल होने वाले थे कि ग़रीब

नवाज साहब बाहर आ रहे थे। चड्डे ने उनकी तरफ गौर से देखा और अपनी जेब मे हाथ डाल कर नोट निकाले। बिना गिने उसने कुछ गरीबनवाज को दिये और कहा– "चार बोतले स्कॉच की चाहिये। कमी आप पूरी कर दीजियेगा। ज्यादा हो तो वह मुझे वापिस मिल जाय।"

गरीब नवाज के हैदराबादी ओठो पर गहरी सावली मुस्कराहट नमूदार हुई। चड्डा खिलखिला कर हसा और मेरी तरफ देख कर उसने गरीब नवाज से कहा– "ये मिस्टर वन टू है .... लेकिन इनसे विस्तृत मुलाकात की इजाज़त इस वक्त नही मिल सकती। ये रम पिये है। शाम को स्कॉच आ जाय तो . लेकिन आप जाइये।"

गरीब नवाज चला गया। हम अन्दर दाखिल हुये। चड्डे ने एक ज़ोर की जमाई ली और रम की बोतल उठाई जो आधी से ज्यादा खाली थी। उसने रोशनी मे मिकदार का सही अन्दाजा किया और नौकर को आवाज दी– "कजाकिस्तान के शहजादे!" जब वह न आया तो उसने अपने गिलास मे एक बडा पेग डालते हुये कहा– "ज्यादा पी गया है कम्बख्त!"

यह गिलास खत्म करके वह कुछ चिन्तित हो गया– "यार भाभी को तुम व्यर्थ मे यहाँ लाये। खुदा की कसम मुझे अपने सीने पर एक बोझ सा महसूस हो रहा है।" फिर उसने खुद ही स्वँय को सन्तोष दिलाया-- "मेरा ख्याल है कि बोर नही होगी वहाँ।"

मैंने कहा-- "हाँ, वहाँ [illegible] [illegible] यह मेरे [illegible] [illegible] शीघ्र ही इरादा नही [illegible] [illegible]।" और मैंने अपने गिलास मे रम डाली जिसका स्वाद [illegible] हुये [illegible] की तरह था।

जिस कबाड खाने मे हम लोग बैठे थे, उसमे [illegible] वाली दो खिडकियाँ थी जिनसे बाहर का गैरआबाद हिस्सा नजर आता था। इधर से किसीने जोर से चड्ढे का नाम लेकर पुकारा। मैं चौंक पडा। देखा कि म्यूजिक डायरेक्टर वनकुतरे हैं। समझ में नही आता था कि वह किस नसल का हैं। मगोली है, हब्शी है, आर्य है या क्या बला है। कभी कभी उसके किसी अंग की आकृति को देखकर आदमी किसी नतीजे पर पहुँचने ही वाला होता था कि उसके विरुद्ध कोई ऐसी आकृति नजर आजाती थी कि फौरन ही नये सिरे से गौर करना पड जाता था। वैसे वह मराठा था। मगर शिवाजी की तीखी नाक के बजाये उसके चेहरे पर बडे आश्चर्य जनक रूप से मुडी हुई चपटी नाक थी, जो उसके ख्याल के अनुसार उन सुरो के लिये बहुत ही जरूरी थी जिनका सम्बन्ध सीधा नाक मे होता है। उसने मुझे देखा तो चिल्लाया- "मण्टो" -- मण्टो सेठ?"

चड्ढे ने उससे ज्यादा ऊँची आवाज मे कहा- "सेठ की ऐसी तैसी ' चल अन्दर आ।"

वह फौरन अन्दर आगया। अपनी जेब से उसने हसते हुये रम की एक बोतल निकाली और तिपाई पर रखदी-- "मै साला उधर

जमैका का शहजादा फौरन ही आगया। चड्डु ने उससे कहा-- "देखो, मम्मी से कहो एक दम फर्स्ट क्लास चाय तैयार करके भेजदे एक दम।"

नौकर चला गया। चड्डु ने अपना गिलास खाली किया और गरीफाना पेग डालकर कहा-- "मैं फिलहाल ज़्यादा नही पिऊँगा। पहिले चार पेग मुझे बहुत भावुक बना देते है। मुझे भाभी को छोडने तुम्हारे साथ प्रभात-नगर जाना है।"

आधा घण्टे के बाद चाय आ गई। बहुत साफ बर्तन थे और ढग से ट्रे मे चुने हुये थे। चड्डु ने टी कोज़ी उठाकर चाय की खुशबू सूघी और खुशी से उछल पड़ा। "मम्मी इज ए ज्वेल।" फिर उसने इथोपिया के शहजादे पर बरसना शुरू कर दिया। इतना शोर मचाया कि मेरे कान झनझना उठे। इसके बाद उसने ट्रे उठाई और मुझसे कहा- "आओ।"

मेरी बीवी जाग रही थी। चड्डु ने ट्रे बडी सफाई से टूटी हुई तिपाई पर रखी और आदर पूर्वक कहा- "हाजिर है बेगम साहब।"

मेरी बीवी को यह मजाक पसन्द न आया, लेकिन चाय का सामान चूकि साफ सुथरा था इस लिये उसने इकार न किया और दो प्यालियाँ पी ली। इनसे उसको कुछ सन्तोष हुआ और उसने हम दोनो से अर्थ भरे स्वर मे कहा- "आप अपनी चाय तो पहिले ही पी चुके है!"

मैंने जवाब न दिया मगर चड्डु ने झुक कर बडे ईमानदाराना ढग से कहा- "जी हाँ यह गलती हम से

हो चुकी है, लेकिन हमे विश्वास था कि आप जरूर माफ कर देंगी।"

मेरी बीवी मुस्कराई तो वह खिल खिलाकर हंसा– "हम दोनो बहुत ऊँची नसल के सुअर है ... जिन पर हर हराम चीज हलाल हैं। चलिये अब हम आप को मस्जिद तक छोड आये।"

मेरी बीवी को फिर चड्डे का यह मजाक पसन्द न आया। दर असल उसको चड्डे ही से नफरत थी। बल्कि यो कहिये कि मेरे हर दोस्त से नफरत थी और चड्डा खास तौर पर उसे बहुत खलता था। इस लिये कि वह कभी कभी बेतकल्लुफी की सीमा को भी लाघ जाता था। मगर चड्डे को इसकी कोई परवाह न थी। मेरा ख्याल है उसने कभी इसके बारे मे सोचा ही नही था। वह ऐसी फिजूल बातो में दिमाग खर्च करना एक ऐसी 'इन डोर गेम' समझता था जो लोडो से कई गुना लायानी है। उसने मेरी बीवी के जलते भुनते तेवरो को बड़ी प्रसन्न आंखो से देखा और नौकर को आवाज दी-- "कबाबिस्तान के शहजादे! एक अदद टागा लाओ, रोल्स रायलस की किस्म का।"

कबाबिस्तान का शहजादा चला गया और साथ ही चड्डा। वह शायद दूसरे कमरे मे गया था। एकान्त मिला तो मैंने अपनी बीवी को समझाया कि कबाब होने की कोई जरूरत नही। इसान की जिन्दगी मे ऐसे क्षण आही जाया करते है जिनकी उसने कभी कल्पना भी नही की

थी। उनको व्यतीत करने के लिये सब से अच्छा तरीका यही है कि उनको गुजर जाने दिया जाय। लेकिन सदैव के अनुसार उसने मेरे इन मार्मिक उपदेशो को नही माना और बडबडाती रही। इतने मे कबाबिस्तान का शहजादा रोल्स रायल्स किस्म का ताँगा लेकर आगया। हम प्रभात नगर खाना हो गये।

बहुत ही अच्छा हुआ कि मेरा फिल्मो का पुराना साथी घर मे मौजूद नही था। उसकी बीवी थी। चड्डे ने मेरी बीवी उसके सुपुर्द की और कहा— "खरबूजा, खरबूजे को देखकर रग पकडता है। बीवी, बीवी को देखकर रग पकडती है। यह हम अभी हाजिर हो कर देखेगे।" फिर वह मुझसे मुखातिब हुआ-- "चलो मण्टो स्टूडियो मे तुम्हारे दोस्त को पकडे।"

चड्डा कुछ ऐसी अफरा तफरी मचा दिया करता था कि विरोधी शक्तियो को सोचने समझने का बहुत कम मौका मिलता था। उसने मेरा बाजू पकडा और बाहर ले गया और मेरी बीवी सोचती ही रह गई। टागे मे सवार होकर चड्डे ने अब कुछ सोचने के अन्दाज मे कहा— "यह तो हो गया! अब क्या प्रोग्राम है?" फिर खिल-खिला कर हसा — "मम्मी -- ग्रेट मम्मी!"

मै उससे पूछने ही वाला था यह मम्मी किस बखचोंच की औलाद है, कि चड्डे ने बातो का कुछ ऐसा सिलसिला शुरू कर दिया कि मेरा विचार बेमौत मर गया।

तांगा वापिस उस डाक बगला नुमा कोठी पर पहुँचा,

जिसका नाम सईदा काटेज था, मगर चड्डा उसको रंजीदा काटेज कहता था। इस लिये कि उसमे रहने वाले सबके सब रजीदा रहते है। हालॉकि यह गलत था, जैसा कि मुझे वाद मे मालूम हुआ।

इस काटेज मे काफी आदमी रहते थे, हालाकि वाहर से देखने मे यह जगह बिल्कुल वीरान मालूम होती थी। सब के सब उसी फिल्म कम्पनी मे नौकर थे, जो महीने की तख्वाह हर तिमाही के बाद देती थी, और वह भी कई किस्तो मे। एक एक करके जब वहॉ के निवासियो से मेरा परिचय हुआ तो पता चला कि सब असिस्टैण्ट डायरेक्टर थे। कोई चीफ असिस्टैण्ट डायरेक्टर, कोई उसका नायब, कोई नायब दर नायब। हर दूसरा, किसी पहिले का असिस्टैण्ट था और अपनी निजी फिल्म कम्पनी की वुनयादे अनुकूल करने के लिये धन एकत्रित कर रहा था। कपडो और वाहरी रूप रग से हर एक हीरो मालूम होता था। कण्ट्रोल का जमाना था मगर किसी के पास राशन कार्ड नही था। वह चीजे भी जो थोडी सी तकलीफ के वाद आसानी से कम कीमत पर मिल सकती थी, ये लोग ब्लेक मार्किट से खरीदते थे। पिक्चर जरूर देखते थे। रेस का मौसम हो तो रेस खेलते थे वरना सट्टा। जीतते कभी कभी ही थे मगर हारते हर रोज थे।

सईदा काटेज की आवादी घनी थी। जगह कम थी इस लिये मोटर गराज भी रहने के लिये इस्तेमाल होता

था। इसमे एक फेमिल्ली रहती थी। शीरी नाम की एक औरत थी जिसका पति शायद, समानता तोडने के लिये असिस्टैंण्ट डायरेक्टर नही था। वह इसी फिलम कम्पनी मे नौकर था मगर मोटर ड्रायवर था। मालूम नही वह कब आता था और कब जाता था। क्योकि मैने उस शरीफ आदमी को वहाँ कभी नही देखा। शीरी के पेट से एक छोटा सा लडका था जिसको सईदा काटेज के सब निवासी फुर्सत के समय प्यार करते थे। शीरी जो क़ुबूल सूरत थी अपना अधिकाश समय गराज के अन्दर गुजारती थी।

काटेज का प्रतिष्ठित भाग चड्डे और उसके दो साथियो के पास था। ये दोनो भी एक्टर थे, मगर हीरो नही थे। एक सईद था जिसका फिलमी नाम रजीत कुमार था। चड्डा कहा करता था– "सईदा काटेज इसी खर जात के नाम के कारण प्रसिद्ध है। वरना इसका नाम रजीदा काटेज ही था। सुन्दर था और बहुत कम बोलने वाला। चड्डा कभी कभी उसे कछुआ कहा करता था, इस लिये कि वह हर काम बहुत धीरे धीरे करता था।

दूसरे एक्टर का नाम, मालूम नही क्या था। मगर सब उसे गरीबनवाज कहते थे। हैदराबाद के एक खाते पीते घराने से सम्बन्ध रखता था। एक्टिग के शौक मे यहाँ चला आया था। तख्वाह अढाई सौ रुपये माहवार निश्चित थी। एक वर्ष होगया था, नौकर हुये मगर इस दौरान मे उसने सिर्फ एक बार अढाई सौ रुपये एडवास के रूप मे लिये थे। वह भी चड्डे के लिये, क्योकि उसे

एक बड़े खूखार पठान का कर्जा चुकाना था। गद्य काव्य की भाषा मे फिल्मी कहानियाँ लिखना उसका शगल था। कभी कभी कविता भी लिख लेता था। काटेज का हर व्यक्ति उसका कर्जदार था।

शकील और अकील दो भाई थे। दोनों किसी असिस्टैण्ट डायरेक्टर के असिस्टैण्ट थे। और 'आख के अधे नाम नैन सुख' की कहावत को झुठलाने का प्रयत्न कर रहे थे।

बड़े तीन, यानी चड्ढा, सईद और गरीब नवाज शीरी का बहुत ख्याल रखते थे। लेकिन तीनो इकट्ठे गराज मे नही जाते थे। कुशल क्षेम पूछने का कोई वक्त भी निश्चित नही था। तीनो जब काटेज के बड़े कमरे मे इकट्ठे होते तो उनमे से एक उठकर गराज म चला जाता और कुछ देर वहाँ बैठ कर शीरी से घरेलू मामलों पर बात चीत करता रहता। बाकी दो अपने काम मे लगे रहते।

जो असिस्टैण्ट किस्म के लोग थे, वह शीरी का हाथ बटाया करते थे। कभी बाजार से उसको सौदा सामान ला दिया। कभी लाण्ड्री मे उसके कपड़े धुलने दे आये और कभी उसके रोते बच्चे को बहला दिया।

इनमे से दुखी हृदय कोई भी न था। सब के सब प्रसन्न थे। शायद अपने दुख पर। वह अपने हालात की प्रतिकूलता का जिक्र भी करते थे तो बड़े खुश होकर। इसमे कोई शक नही कि उनकी जिन्दगी बड़ी दिलचस्प थी।

हम काटेज के गेट मे दाखिल होने वाले थे कि गरीब

नवाज साहब बाहर आ रहे थे। चड्डे ने उनकी तरफ गौर से देखा और अपनी जेब मे हाथ डाल कर नोट निकाले। बिना गिने उसने कुछ गरीबनवाज को दिये और कहा– "चार बोतलें स्कॉच की चाहिये। कमी आप पूरी कर दीजियेगा। ज्यादा हो तो वह मुझे वापिस मिल जाय।"

ग़रीब नवाज के हैदराबादी ओठो पर गहरी सावली मुस्कराहट नमूदार हुई। चड्डा खिलखिला कर हसा और मेरी तरफ देख कर उसने गरीब नवाज से कहा– "ये मिस्टर वन टू है ··· लेकिन इनसे विस्तृत मुलाकात की इजाजत इस वक्त नही मिल सकती। ये रम पिये है। शाम को स्कॉच आ जाय तो · लेकिन आप जाइये।"

गरीब नवाज चला गया। हम अन्दर दाखिल हुये। चड्डे ने एक जोर की जमाई ली और रम की बोतल उठाई जो आधी से ज्यादा खाली थी। उसने रोशनी मे मिकदार का सही अन्दाजा किया और नौकर को आवाज दी– "कजाकिस्तान के शहजादे!" जब वह न आया तो उसने अपने गिलास मे एक बडा पेग डालते हुये कहा– "ज्यादा पी गया हैं कम्बख्त!"

यह गिलास खत्म करके वह कुछ चिन्तित हो गया– "य़ार भाभी को तुम व्यर्थ मे यहाँ लाये। ख़ुदा की कसम मुझे अपने सीने पर एक बोझ सा महसूस हो रहा है।" फिर उसने खुद ही स्वँय को सन्तोष दिलाया-- "मेरा ख्याल है कि बोर नही होगी वहाँ।"

मैंने कहा-- "हा, वहां रह कर वह मेरे कत्ल का शीघ्र ही इरादा नही कर सकती।" और मैंने अपने गिलास में रम डाली जिसका स्वाद भुने हुये गुड की तरह था।

जिस कबाड खाने मे हम लोग बैठे थे, उसमे सिलाखों वाली दो खिडकियां थी जिनसे बाहर का गैरआबाद हिस्सा नजर आता था। इधर से किसीने जोर से चड्डे का नाम लेकर पुकारा। मैं चौक पडा। देखा कि म्यूजिक डायरेक्टर बनकुतरे हैं। समझ मे नही आता था कि वह किस नसल का है। मगोली है, हब्शी है, आर्य है या क्या बला है। कभी कभी उसके किसी अग की आकृति को देखकर आदमी किसी नतीजे पर पहुंचने ही वाला होता था कि उसके विरुद्ध कोई ऐसी आकृति नजर आजाती थी कि फौरन ही नये सिरे से गौर करना पड जाता था। वैसे वह मराठा था। मगर शिवाजी की तीखी नाक के बजाये उसके चेहरे पर बडे आश्चर्य जनक रूप से मुडी हुई चपटी नाक थी, जो उसके ख्याल के अनुसार उन सुरो के लिये बहुत ही जरूरी थी जिनका सम्बन्ध सीधा नाक से होता है। उसने मुझे देखा तो चिल्लाया- "मण्टो" -- मण्टो सेठ?"

चड्डे ने उससे ज्यादा ऊँची आवाज मे कहा- "सेठ की ऐसी तैसी ' चल अन्दर आ।"

वह फौरन अन्दर आगया। अपनी जेब से उसने हसते हुये रम की एक बोतल निकाली और तिपाई पर रखदी-- "मे साला उधर

मम्मी के पास गया। वह बोला—तुम्हारा फ्रेण्ड आयेला" "मै बोला साला ये फ्रेण्ड क़ौन होने को सकता है :" साला मालूम न था, साला मण्टो है।"

चड्डे ने वनकुतरे के कद्दू जैसे सर पर एक धौल जमाई— "अव चुप कर साले के " बस ठीक है। "वनकुतरे ने अपना सिर सहलाया और मेरा खाली गिलास उठा कर अपने लिये पेग तैयार किया— "मण्टो .... यह साला आज मिलते ही कहने लगा-- आज पीने को जी चाहता हैं ... मे एकदम कड़का .... सोचा क्या करूँ .... "

चड्डे ने एक और धप्पा उसके सर पर जमाया-- "बैठ बे, जैसे तूने कुछ सोचा ही होगा।"

"सोचा नही तो साला यह इतनी बडी बाटली कहाँ से आया ... तेरे बाप ने दिया मुझको ?" वनकुतरे ने एक ही घूंट मे रम खत्म कर दी। चड्डे ने उसकी बात सुनी अन सुनी कर दी और उससे पूछा— "अच्छा तू यह तो बता कि मम्मी क्या बोली ? —— पोली थी ? मोजील कब आयेगी ? ... अरे हाँ ... वह प्लेटीनम ब्लोण्ड !"

वनकुतरे नें जवाब मे कुछ कहना चाहा मगर चड्डे ने मेरा बाजू पकड कर कहना शुरू कर दिया-- "मण्टो-- खुदा की कसम क्या चीज है— सुना करते थे कि एक चीज प्लेटीनम ब्लोण्ड भी होती है। मगर देखने का इत्तेफाक कल हुआ। बाल है जैसे चांन्दी के बारीक बारीक तार · ग्रेट --- खुदा की कसम मण्टो, बहुत ग्रेट ...

मम्मी जिन्दाबाद!" फिर उसने भयानक आखो से वनकुतरे की तरफ देखा और कडक कर कहा-"कनकुतरे के बच्चे- नारा क्यो नही लगाता -- मम्मी - जिन्दाबाद!"

चड्ढे और वनकुतरे दोनो ने मिल कर "मम्मी जिन्दाबाद" के कई नारे लगाये। इस के बाद वनकुतरे ने चड्ढे के सवालो का फिर जवाब देना चाहा मगर उसने उसे खामोश कर दिया। "छोड़ो यार मैं भावुक हो गया हूँ ·· इस वक्त यह सोच रहा हूँ कि आम तौर पर माशूक के बाल काले होते है जिन्हे काली घटा से उपमा दी जाती रही है मगर यहाँ कुछ और ही सिलसिला हो गया है ·" फिर वह मुझसे कहने लगा- "मण्टो -- बडी - गडबड हो गई है। उसके बाल चान्दी के तारो जैसे है ·· चान्दी का रग भी नही कहा जा सकता-- मालूम नही प्लेटीनम का रग कैसा होता है, क्योंकि मैने अभी तक यह धातु नही देखी है। कुछ अजीब ही सा रग है फौलाद और चान्दी दोनो को मिला दिया जाय ··"

वनकुतरे ने दूसरा पेग खत्म किया- "और उसमे थोड़ी सी 'थ्री एक्स' रम मिक्स कर दी जाय।"

चड्ढे ने भन्ना कर उसको एक बडी सी गाली दी- "बकवास न कर!" फिर उसने बडी करुण दृष्टि से मेरी तरफ देखा- "यार · मैं वास्तव मे भावुक हो गया हूँ · हाँ ·· वह रग ·· खुदा की कसम लाजवाब

रग है ··· वह तुमनें देखा हे ·· वह जो मछलियो के पेट पर होता है ·· नही नही हर जगह होता है ··· पोमफ्रेट मछली · उसके वह क्या होते हे? ··· नही नही ··· सापो के ·· वह नन्हे नन्हे खपरे ··· हाँ खपरे ··· बस उनका रग ··· खपरे ··· यह शब्द मुझे हिन्दस्तोडे ने बताया था ··· इतनी खूबसूरत चीज और ऐसा वाहियात नाम ··· पजाबी मे हम उन्हे चाने कहते हैं। इस शब्द मे चिन चिनाहट है ·· वही ··· बिल्कुल वही जो उसके बालो मे है ·· लटे नन्ही नन्ही सपोलियाँ मालूम होती है जो लोट लगा रही हो ···" वह एकदम उठा-- "सपोलियो की ऐसी तैसी, मै भावुक हो गया हूँ।"

वनकुतरे ने बडे भोले ढग से पूछा-- "वह क्या होता हे?"

चड्डे ने जवाब जिया-- "सेण्टी मेण्टल ··· लेकिन तू क्या समझेगा। बालाजी बाजीराव और नाना फडणवीस की औलाद ···"

वनकुतरे ने अपने लिये एक और पग बनाया और मुझसे सम्बोधित हो कर कहा-- "यह साला चड्डा समझता है, मै इग्लिश नही समझता हूँ। 'मेटरी कुलेट' हूँ ··· साला मेरा बाप मुझसे बहुत 'मुहब्बत' करता था ··· उसने ···"

चड्डे ने चिढ कर कहा-- "उसने तुझे तानसेन बना दिया ··· तेरी नाक मरोड़ दी कि नकोड़े सुर आसानी

से तेरे अन्दर से निकल सके · बचपन ही में उसने तुझे ध्रुपद गाना सिखा दिया ··· और दूध पीने के लिये तू मियां की तोड़ी मे रोया करता था। और पेशाब करते वक्त उड़ाना मे ··· और तूने पहली बात पट दीपकी मे की थी। और तेरा बाप ·· जगत उस्ताद था। बैजू बावरे के भी कान कटता था ··· और तू आज उसके कान काटता हैं, इसी लिये तेरा नाम कनकुतरे है!" इतना कह कर वह मुझसे सम्बोधित हुआ-- "मण्टो- यह साला जब भी पीता है ··· अपने बाप की तारीफ शुरू कर देता हैं वह इससे 'मुहबत' करता था तो मुझ पर उसने क्या अहसान किया और उसने इसे 'मेटरीकूलेट' बना दिया तो इसका यह मतलब नही कि मै अपनी बी. ए. की डिग्री फाड कर फेंक दू।"

वनकुतरे ने इस बोछार से बचाव करना चाहा मगर चड्डे ने उसको वही दबा दिया-- "चुप रह · मै कह चुका हूँ कि मै सेण्टीमेण्टल हो गया हूँ ··· हाँ, वह रग ·· पोमफ्रेट मच्छली के नही नही ··· साप के नन्हे नन्हे खपरे ·· बस-उन्हो का रग ·· मम्मी ने खुदा जाने अपनी बीन पर कौनसा राग बजा कर उस नागन को बाहर निकाला?"

वनकुतरे सोचने लगा- "पेटी मगाओ, मै बजाता हूँ।"

चड्डा खिलखिला कर हसने लगा- "बैठबे मेटरीकूलेट के चाकूलेट · " उसने रम की बोतल मे से बाकी रम अपने गिलास मे उण्डेली और मुझ से कहा- "मण्टो,

अगर यह प्लेटीनम ब्लोण्ड न पटी तो मिस्टर चड्ढा हिमालय पहाड की किसी ऊँची चोटी पर धूनी रमा कर बैठ जायगा ···" और उसने गिलास खाली कर दिया।

वनकुतरे ने अपनी लाई हुई बोतल खोलनी शुरू की– "मण्टो, मुलगी एकदम चागली है ···।"

मैने कहा-- "देख लेगे।"

"आज ही ··· आज रात मै एक पार्टी दे रहा हूँ। यह बहुत ही अच्छा हुआ कि तुम आगये और श्री १०८ मेहता जी ने तुम्हारी वजह से वह एडवास दे दिया, वरना बडी मुश्किल हो जाती ··· आज की रात ··· आज की रात ···" चड्ढे ने बड़े भोण्डें सुरो मे गाना शुरू कर दिया।

"आज की रात साजे दिले पुर दर्द न छेड़!"

वनकुतरे बेचारा उसकी इस ज्यादती पर विरोध का प्रस्ताव लाने ही वाला था कि गरीब नवाज और रजीत कुमार आ गये। दोनो के पास स्कॉच की दो दो बोतले थी। ये उन्होने मेज पर रखी। रजीत कुमार से मेरे अच्छे खासे सम्बन्ध थे, मगर बेतकल्लुफ नही। इसलिये हम दोनो ने थोडीसी-- आप कब आये, आज ही आया, ऐसी रस्मी बात चीत की और गिलास टकरा कर पीने मे मशगूल हो गये।

चड्ढा वास्तव मे बहुत भावुक हो गया था। हर बात मे उस प्लेटीनम ब्लोण्ड का जिक्र ले आता था। रंजीत कुमार दूसरी बोतल का चौथाई हिस्सा चढ़ा गया था।

गरीबनवाज ने स्कॉच के तीन पैग पिये थे। नशे के मामले मे उन सबका स्तर अब एक जैसा था। मै चूकि ज्यादा पीने का आदी हूँ इस लिये मेरी हालत मध्यम थी। मैने उनकी बात चीत मे अन्दाजा लगाया कि वह चारो उस नई लडकी पर बहुत बुरी तरह फरेफ्ता थे, जो मम्मी ने कही से पैदा की थी। इस नायाब दाने का नाम फीलस था। पूने मे कोई हेयर ड्रेसिंग सेलून था जहाँ वह नौकर थी। उसके साथ आम तौर पर एक हीजडा नुमा लडका रहता था। लडकी की उम्र लगभग चौदह पन्द्रह बरस थी। गरीबनवाज तो यहाँ तक उसपर गरम था कि वह हैदराबाद मे अपने हिस्से की जायदाद बेचकर भी इस दाव पर लगाने के लिये तैयार था। चड्डे के पास तुरुप का सिर्फ एक पत्ता था– अपना सुन्दर होना। वनकुतरे का सगर्व यह ख्याल था कि उसकी पेटी सुन कर वह परी जरूर शीशे मे उतर आयेगी और रंजीत कुमार जबरदस्ती ही को कारगर समझता था ··· लेकिन सब आखिर मे यही सोचते थे कि देखिये मम्मी किस पर मेहरबान होती है। इससे मालूम होता था कि इस प्लेटीनम ब्लोण्ड फीलस को वह औरत जिसे मैने चड्डे के साथ तागे मे देखा था, किसी के भी हवाले कर सकती थी।

फीलस की बाते करते करते चड्डे ने अचानक अपनी घडी देखी, और मुझसे कहा– "जहन्नुम मे जाय यह लौण्डिया– चलो यार ··· भाभी वहाँ कबाब हो रही

होगी– लेकिन मुसीबत यह है कि मै कही वहाँ भी सेण्टामेण्टल न हो जाऊँ   खैर तुम मुझे वहाँ सम्भाल लेना।" अपने गिलास की चन्द आखरी बूदे हलक मे टपका कर उसने नौकर को आवाज दी– "मेमयो के देश मिश्र के शहजादे!"

मेमयो के देश मिश्र का शहजादा आखे मलता हुआ प्रकट हुआ, जैसे किसी ने उसको सदियो के बाद खोद खाद कर बाहर निकाला है। चड्ढे ने उसके चेहरे पर रम के छीटे मारे और कहा-- "दो अदद टागे लाओ-- जो मिश्री रथ मालूम हो।"

टाग आगये। हम सब इन पर लद कर प्रभात नगर रवाना हुये– मेरा पुराना, फिल्मों का साथी हरीश घर पर मौजूद था। इस दूरदराज जगह पर भी उसने मेरी बीवी के स्वागत सत्कार मे कोई बात उठा न रखी थी। चड्ढे ने आख के इशारे से उसको सारा मामला समझा दिया था, चुनाचे यह बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ। मेरी बीवी ने क्रोध प्रकट न किया। उसका समय वहाँ कुछ अच्छा ही कटा था। हरीश ने जो औरतो के मनो विज्ञान का ज्ञाता था, बडी रसीली बाते की, और अन्त मे मेरी बीवी से प्रार्थना की कि वह उसकी शूटिग देखने चले, जो उस दिन होने वाली थी। मेरी बीवी ने पूछा– "कोई गाना फिल्मा रहे हैं आप?"

हरीश ने जवाब दिया– "जी नही– वह कल का प्रोग्राम है ··· मेरा ख्याल है आप कल चलियेगा।"

हरीश की बीवी शूटिंग देख देख कर और दिखा दिखा कर आजिज आई हुई थी। उसने फौरन ही मेरी बीवी से कहा– "हाँ कल ठीक रहेगा– आज तो इन्हे सफर की थकन भी है।"

हम सब ने सन्तोष का सास लिया। हरीश ने फिर कुछ देर तक लच्छेदार बाते की। आखिर मे मुझसे कहा– "चलो यार! तुम चलो मेरे साथ।" और मेरे तीनो साथियो की तरफ देखा– "इनको छोड़ो ... सेठ साहब तुम्हारी कहानी सुनना चाहते है"

मैंने अपनी बीवी की तरफ देखा और हरीश से कहा– "इन से इजाजत ले लो।"

मेरी सीधी सादी बीवी जाल मे फस चुकी थी। उसने हरीश से कहा– "मैंने बोम्बे से चलते वक्त इनसे कहा भी था कि अपना डोक्यूमेण्ट केस साथ ले चलिये, पर इन्होने कहा– कोई जरूरत नही– अब ये कहानी क्या सुनायेंगे।"

हरीश ने कहा– "जबानी सुना देगा" फिर उसने मेरी तरफ यो देखा, जैसे कह रहा हो कि 'हाँ' कहो जल्दी।

मैंने इत्मेनान से कहा– "हाँ, ऐसा हो सकता है।"

चड्ढे ने इस ड्रामे को पूरा करने के लिये आखरी 'टच' दिया– "तो भई हम चलते है।" और वह तीनो उठकर सलाम–नमस्ते करके चले गये। थोडी देर के बाद मै और हरीश निकले– प्रभात नगर के बाहर टागे खडे

थे। चड्डे ने हमे देखा तो जोर का नारा लगाया– "राजा हरिश्चन्द्र– जिन्दाबाद ... "

हरीश के सिवा हम सब मम्मी के घर रवाना हो गये। उसको अपनी एक सहेली से मिलने जाना था।

यह भी एक काटेज थी। आकार प्रकार मे बिल्कुल सईदा काटेज जैसी, मगर बहुत साफ सुथरी। जिससे मम्मी के सुघडापे का पता चलता था। फरनीचर मामूली था, मगर जो चीज जहाँ थी सजी हुई थी। प्रभात नगर से चलते वक्त मैने सोचा था, कोई कोठा होगा। मगर उस घर की किसी चीज से भी ऐसा शक नही होता था। वह वैसा ही शरीफाना था जैसा कि एक औसत दर्जे के ईसाई का होता है। मगर मम्मी की उम्र के मुकाबले मे वह जवान जवान दिखाई देता था। उस पर वह मेकअप नही था जो मैने मम्मो के झुर्रियो वाले चेहरे पर देखा था। जब मम्मी ड्राइग रूम मे आई तो मैनें सोचा कि आस पास की जितनी चीजे है, वह आज की नही, बहुत वर्षो की है। सिर्फ मम्मी आगे निकल कर बूढी हो गई हैं। और वह वैसी की वैसी पडी रही है। उनकी जो उम्र थी वह वही की वही रही है .. लेकिन जब मेने उसके गहरे और शोख रग मेक-अप की तरफ देखा तो मेरे दिल मे न जाने क्यो यह इच्छा पैदा हुई कि वह भी अपने आस पास के वातावरण की तरह गम्भीर रूप से जवान बन जाय।

चड्डे नें उससे मेरा परिचय कराया, जो बहुत सक्षिप्त

था, और सक्षेप मे ही उसने मम्मी के बारे मे मुझसे यह कहा– "यह मम्मी है · दि ग्रेट मम्मी ..."

मम्मी अपनी तारीफ सुन कर मुस्कराई। और मेरी तरफ देख कर उसने चड्ढे से अंग्रेजी में कहा– "तुमने चाय मगवाई थी। सदैव की तरह जल्दी से– मालूम नही इन्हे पसन्द भी आई होगी या नही।" फिर वह मुझसे सम्बोधित हुई- "मिस्टर मण्टो, मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ ·· असल मे सारा कसूर तुम्हारे दोस्त चड्ढे का है– जो मेरा ऐसा लड़का है जिसका सुधार सम्भव नही।"

मैने उचित शब्दो मे चाय की तारीफ की और उसका शुक्रिया अदा किया। मम्मी ने मुझे फिजूल की तारीफ से मना किया। और चड्ढे से कहा– "रात का खाना तैयार है ... यह मैने इस लिये किया कि तुम ऐन वक्त के वक्त मेरे सिर पर सवार हो जाओगे ..."

चड्ढे ने मम्मी को गले से लगा लिया– "यू आर ए ज्वेल मम्मी ··· यह खाना अब हम खायेगे।"

मम्मी ने चौंक कर पूछा– "क्या? नही, हरगिज नही।

चड्ढे ने उसे बताया- "मिसेज मण्टो को हम प्रभात नगर छोड आये है।"

मम्मी चिल्लाई- "खुदा तुम्हे गारत करे। यह तुम ने क्या किया?"

चड्ढा खिलखिला कर हसा- "आज पार्टी जो होने वाली थी।"

"वह तो मैंने मिसेज मण्टो के देखते ही अपने दिल मे कैसल्ल कर्दी थी।" मम्मी नें अपना सिगरेट सुलगाया।

चट्टु का दिल डूब गया- "खुदा अब तुम्हे गारत करे ... और यह सब प्लान हमन सिर्फ उस पार्टी के लिये बनाया था।" वह निराश हो कर कुर्सी पर बैठगया और कमरे की हर चाज को सम्बोधित कर के कहने लगा_ "लो सारे सपन चूर चूर हो गये ... प्लेटीनम ब्लोण्ड ... उल्टे साप के नन्हे नन्हे खपरो जैसे रग वाले बाल ... एक दम उसने उठ कर मम्मी को बाजुओ से पकड़ लिया– "कैसल की थी-- अपने दिल मे कैसल की थी ना? ... लो उस पर 'ओके' किये देता हूँ।" और उसने मम्मी के दिल की जगह उगली से बहुत बड़ा 'ओके' बना दिया और जोर से पुकारा– "हुर्रे!"

मम्मी सम्बन्धित लोगो को सूचना भज चुकी थी कि पार्टी मसूख हो चुकी है, लेकिन मैंने अनुभव किया कि वह चट्टु को दुखी करना नही चाहती थी। चुनाचे उसने बडे वात्सल्य से उसके गाल थप थपाये और कहा– "तुम फिक्र न करो .. मै अभी इन्तजाम करती हूँ।"

वह इन्तेजाम करने बाहर चली गई। चट्टु ने खुशी का एक और नारा लगाया और बनकुतरे से कहा-- "जनरल बनकुतरे! जाओ, हेड क्वार्टर्स से सारी तोपे ले आओ।"

बनकुतरे ने सेल्यूट किया और हुक्म की तामील के लिये चला गया। सईदा काटेज बिल्कुल पास थी। दस

मिनिट के अन्दर अन्दर वह बोतलें लेकर वापिस आ गया। साथ उसके चड्ढे का नौकर था। चड्ढे ने उसको देखा तो उसका स्वागत किया-- "आओ, आओ .. मेरे कोहकाफ के शहजादे ·· वह वह ··· साप के खपरों जैसे रंग के बालो वाली लौण्डिया आ रही हैं। ··· तुम भी किस्मत आजमाई कर लेना।"

रजीत कुमार और गरीबनवाज दोनो को चड्ढे की यह 'सलाये आम है याराने नुकता दा के लिये' वाली बात बहुत बुरी मालूम हुई। दोनो ने मुझसे कहा कि यह चड्ढे की असभ्यता है। इस असभ्यता को उन्हो ने बुरी तरह अनुभव किया था। चड्ढा आदत के अनुसार अपनी हाँकता रहा। और वह खामोश एक कोने मे बैठे, धीरे धीरे रम पी कर एक दूसरे पर अपना दुख प्रकट करते रहे।

मै मम्मी के सम्बन्ध मे सोचता रहा। ड्राइग रूम में गरीबनवाज, रजीत कुमार और चड्ढा बैठे थे। ऐसा लगता था कि ये छोटे छोटे बच्चे हैं। उनकी माँ बाहर खिलौने लेने गई है। ये सब प्रतीक्षा कर रहे है। चड्डा सन्तुष्ट है कि सब से बढिया और अच्छा खिलौना उसे मिलेगा। इसलिये कि वह अपनी माँ का चहीता है। बाकी दो का गम चूकि एक जैसा था इस लिये वह एक दूसरे के सहायक बन गये थे। · शराब इस वातावरण मे दूध मालूम होती थी और वह प्लेटीनम ब्लोण्ड · उसकी कल्पना एक छोटी सी गुडिया की तरह दिमाग मे आती थी। हर फिजा, हर वातावरण का अपना सगीत होता है ·· उस

समय जो संगीत मेरे दिल के कानो तक पहुँच रहा था उसमे कोई सुर भडका देने वाला नही था। हर चीज, माँ और उसके बच्चे और उनके परस्पर सम्बन्ध की तरह विश्वास करने योग्य और यकीनी थी।

मैंने जब उसको तागे मे चड्डे के साथ देखा था तो मेरी सौन्दर्य प्रेम की भावना को दुख पहुँचा था। मुझे अफसोस हुआ कि मेरे दिल मे उन दोनो के सम्बन्ध मे बुरे विचार पैदा हुये। लेकिन यह चीज मुझे बार बार सता रही थी कि वह इतना शोख मेक-अप क्यो करती है जो उसकी झुर्रियो का अपमान है। उसकी ममता की हसी उडाता हैं जो उसके दिल मे चड्डे, गरीबनवाज और वनकुतरे के लिये मौजूद है ··· और खुदा मालूम और किस किस के लिये ···।

बातो बातो मे चड्डे से मैंनें पूछा-- "यार यह तो बताओ, तुम्हारी मम्मी इतना शोख मेक-अप क्यों करती है?"

"इस लिये कि दुनिया हर शोख चीज को पसन्द करती हैं ··· तुम्हारे और मेरे जैसे उल्लू इस दुनिया मे कम बसते है जो मध्यम सुर और मध्यम रग पसन्द करते है। जो जवानी को बचपन के रूप मे नही देखना चाहते और ·· और जो बुढापे पर जवानी का मुलम्मा पसन्द नही करते · हम जो खुद को आर्टिस्ट कहते है, उल्लू के पट्ठे है ·· मै तुम्हे एक दिलचस्प घटना सुनाता हूँ · बैसाखी का मेला था · तुम्हारे अमृतसर म ···

राम बाग के उस बाजार मे जहाँ टकियाइया रहती है · · जाट गुजर रहे थे ·· एक स्वस्थ जवान ने ··· खालिस दूध और मक्खन पर पले हुये जवान ने, जिसकी नई जूती उसकी लाठी पर बाजीगरी कर रही थी, ऊपर एक कोठे की तरफ देखा और बहुत ही वाहियात रगो से लिपी बुती एक काली कलूटी टकियाई की तरफ देखा जिसकी तेल मे चिपकी हुई पट्टियाँ उसके माथे पर बडे बदनुमा तरीके पर जमी हुई थी, और अपने साथी की पसलियो मे टहोका दे कर कहा– ···उये लहना सियाँ ··· वेख, उये ऊपर वेख ··· इसेते पिण्ड विच मजाई ··· " आखरी शब्द वह खुदा मालूम क्यो गोल कर गया, हालाकि वह सभ्यता का बिल्कुल कायल नही था, खिलखिला कर हसने लगा और मेरे गिलास मे रम डाल कर बोला– "उस जाट के लिये वह चुडैल ही उस वक्त कोह–काफ की परी थी ··· और उसके गाँव की सुन्दर सुघड मटियारे– बेडौल भैसे ··· हम सब चुगद है ··· मध्यम श्रणी के ·· इस लिये कि इस दुनिया मे कोई चीज उत्तम श्रणी की नही ··· तृतीय श्रेणी की है या मध्यम श्रणी की ·· लेकिन ·· लेकिन फीलस ··· खास–उल–खास दर्जे की चीज है ··· वह साँप के खपरो ···"

बनकुतरे ने अपना गिलास उठा कर चड्डे के सिर पर उण्डेल दिया– "खपरे · खपरे ··· तुम्हारा मस्तक फिर गया है ···"

चड्डे ने माथे पर से रम की टपकती हुई बूदे जवान

से चाटनी शुरू कर दी और वनकुतरे से कहा-- "ले अब सुना ... तेरा बाप साला तुझ से कितनी 'मुहवत' करता था ... मेरा दिमाग अब काफी ठण्डा हो गया है।"

वनकुतरे बहुत गम्भीर हो कर मुझसे सम्बोधित हुआ— "बाई गाड .... वह मुझ से बहुत मुहबत करता था ... मैं फिफटीन इयर्ज का था कि उसने मेरी शादी बनादी।"

चड्डा जोर से हसा— "तुम्हे कार्टून बना दिया उस साले न ... भगवान उसे स्वर्ग मे कसीरयल की पेटी दे कि वहाँ भी उसे बजा बजा कर तुम्हारी शादी के लिये कोई खूबसूरत हूर ढूण्ढता रहे।"

वनकुतरे और भा गम्भीर हो गया-- "मण्टो ... मैं झूठ नही कहता ... मेरी वाइफ एक दम ब्यूटिफुल है ... हमारी फेमिली मे ..."

"तुम्हारी फेमिली की ऐसी तैसी ... फीलस की बात करो ... उससे ज़्यादा और कोई खूबसूरत नही हो सकता।" चड्डे ने गरीब नवाज और रजीत कुमार की तरफ देखा जो कोने में बैठे फीलस के सौन्दर्य के सम्बन्ध मे अपनी अपनी राय का इजहार एक दूसरे से करने वाले थे। "गन पाउडर प्लाट के बानियो ... सुनलो तुम्हारी कोई साजिश कामयाब नही होगी— मैदान, चड्डे के हाथ रहेगा . क्यो, वेल्ज के शहजादे?"

वेल्ज का शहजादा, रम की खाली होती हुई बोतल की तरफ ललचाई हुई नजरो से देख रहा था। चड्डे ने कहकहा लगाया और उसको आधा गिलास भर के दे दिया।

ग़रीबनवाज और रजीत कुमार एक दूसरे से फीलस

के बारे मे घुल मिल कर बाते तो कर रहे थे मगर अपने दिमाग में वह उसे प्राप्त करने की विभिन्न स्कीमें अलग अलग बना रहे थे। यह उनकी बात चीत के ढग से साफ प्रकट था।

ड्राइग रूम मे अब बिजली के बल्ब रौशन थे, क्योकि शाम अब गहरी हो चली थी। चड्डा मुझसे बाम्बे की फिलम इण्डस्ट्री के ताजा हालात सुन रहा था कि बाहर बराम्दे मे मम्मी की तेज तेज आवाज सुनाई दी। चड्डे ने नारा लगाया और बाहर चला गया। गरीबनवाज ने रजीत कुमार की तरफ और रजीत कुमार ने गरीब नवाज की तरफ अर्थ भरी नजरो से देखा। फिर दोनो दरवाजे की तरफ देखने लगे।

मम्मी चहकती हुई अन्दर दाखिल हुई। उसके साथ चार पांच एग्लो इण्डियन लडकियाँ थी। विभिन्न आकार प्रकार और चेहरों वाली। पोली, डाली, किटी, एल्मा और थेल्मा ·· और वह हीजडा नूमा लडका ·· उसको चड्डा सिसी कहकर पुकारता था। फीलस सबके बाद प्रकट हुई और वह भी चड्डे के साथ। उसका एक बाजू उस प्लेटीनम ब्लोण्ड की पतली कमर मे लिपटा था। मैंने गरीबनवाज और रजीत कुमार की प्रतिक्रिया नोट की। उनको चड्डे की यह दिखावटी विजयी हरकत पसन्द नही आई थी।

लड़कियों के नाजिल होते ही एक शोर बरपा हो गया। एकदम इतनी अंग्रेजी बरसी कि वनकुतरे मेटरीकुलेशन

इम्तेहान मे कई बार फेल हुआ मगर उसने कोई परवाह न की और बराबर बोलता रहा। जब उससे किसी ने अनुराग न बरता तो वह एलमा की बड़ी बहन थेलमा के साथ एक सोफे पर अलग बैठ गया और पूछने लगा कि उसने हिन्दुस्तानी डास के और कितने नये तोडे सीखे है। वह इधर धानी ना कत और ता थई थई की वन टू थ्री बना बना कर उसको तोडे बता रहा था। उधर चड्डा बाकी लडकियो के झुरमुट मे अग्रेजी के नगे नगे चुटकुले सुना रहा था, जो उसको हजारो की सख्या मे जबानी याद थे। मम्मी सोडे की बोतले और गजक का सामान मगवा रही थी। रजीत कुमार सिगरेट के कश लगाकर टकटकी बाधे– फीलस की तरफ देख रहा था, और गरीबनवाज मम्मी से बार बार कहता था कि रुपये कम हो तो वह उससे लेले।

स्कॉच खुली और पहिला दौर शुरु हुआ। फीलस से जब शामिल होने के लिये कहा गया तो उसने अपने प्लेटीनमी बालो को हल्कासा झटका दे कर इन्कार कर दिया कि वह व्हिस्की नहीं पिया करती। सबने आग्रह किया मगर वह न मानी। चड्डे ने बददिली प्रकट की तो मम्मी ने फीलस के लिये हल्का सा मिक्सचर तैयार किया और गिलास उसके ओठो के साथ लगा कर बड़े प्यार से कहा– "बहादुर लड़की बनो और पी जाओ।"

फ़ीलस इन्कार न कर सकी। चड्डा खुश हो गया। और उसने इस खुशी मे बीस पच्चीस और चुटकुले सुनाये।

सब मजा लेते रहे। मैंने सोचा नग्नता से तग आकर इसान ने कपडे पहिनना शुरू किये होगे। यही कारण है कि अब वह कपडो से उकता कर कभी कभी नग्नता की तरफ दौडता है। लगता है सभ्यता की प्रतिक्रिया निश्चय ही असभ्यता है। इस वैराग्य का निश्चित रूप मे एक मोहक पहलू भी है। आदमी को इससे लगातार एक जैसी जिन्दगी की बोरियत से थोडी देर के लिये छुटकारा मिल जाता है · ।

मैंने मम्मी की तरफ देखा जो बहुत खुश, जवान लड़कियो मे घुली मिली, चड्डे के नंगे नगे चुटकुले सुनकर हस रही थी और कहकहे लगा रही थी। उसके चेहरे पर वही वाहियात मेक-अप था। उसके नीचे उसकी झुर्रियाँ साफ नजर आ रही थी, मगर वह भी प्रसन्न थी ··· मैंने सोचा, आखिर लोग वैराग्य को क्यो बुरा समझते है। वह वैराग्य जो मेरी आखो के सामने थे। उनका प्रत्यक्ष यद्यपि भद्दा था, लेकिन परोक्ष बहुत ही सुन्दर था। उस पर कोई बनाव सिगार, कोई रग, कोई उबटना नही था।

पोली थी, वह एक कोने मे रजीत कुमार के साथ खडी, अपने नये फ्रॉक के बारे मे बातचीत कर रही थी। और उसे बता रही थी कि सिर्फ़ अपनी होशियारी से उसने बडे सस्ते दामो पर ऐसी बढिया चीज तैयार करा ली हैं। दो टुकडे थे जो बिल्कुल बेकार मालूम होते थे, मगर अब वह एक खूबसूरत पौशाक के रूप मे परिवर्तित

हो गये थे। और रंजीतकुमार बड़ी निष्ठा के साथ उसको दो नये ड्रेस बनवा देने का वादा कर रहा था। जो भी उसे फिल्म कम्पनी से इतने रुपये एक साथ मिलने की हरगिज उम्मीद न थी।

डॉली थी, वह गरीबनवाज से कुछ कर्ज मागने की कोशिश कर रही थी। और उसको यकीन दिला रही थी कि दफ्तर से तन्ख्वाह मिलने पर वह यह कर्ज जरूर अदा कर देगी। गरीबनवाज को निश्चित रूप से यह मालूम था कि वह यह रुपये हमेशा की तरह कभी वापिस नही देगी। मगर वह उसके वादे पर एतबार किये जा रहा था।

थेलमा, वनकुतरे से ताण्डव नृत्य के बडे मुश्किल तोडे सीखने की कोशिश कर रही थी। वनकुतरे को मालूम था कि सारी उम्र उसके पैर कभी उन के बोल अदा नही कर सकेगे, मगर वह उसको बताये जा रहा था। और थेलमा भी अच्छी तरह जानती थी कि वह बेकार अपना और वनकुतरे का समय नष्ट कर रही है, मगर बडे शौक और लगन से अपना पाठ याद कर रही थी।

एलमा और किटी, दोनो पिये जा रही थी और आपस मे किसी आई बी की बात कर रही थी, जिसने पिछली रेस मे, उन दोनो से खुदा मालूम कबका बदला लेने के लिये, गलत टिप दी थी। और चड्डा, फीलस के साप के खपरे जैसे रग के बालो को पिघले हुये सोने के रग की स्कॉच मे मिला मिला कर पी रहा था। फीलस

का हीजडा नुमा दोस्त बार बार जेब से कघी निकालता था, और अपने बाल सवारता था। मम्मी कभी इससे बात करती थी, कभी उससे। कभी सोडा खुलवाती थी, कभी टूटे हुये गिलास के टुकडे उठवाती थी · · उसकी निगाह सब पर थी। उस बिल्ली की तरह जो देखने मे आखे बन्द किये मुस्ताती है, मगर उसको मालूम होता है कि उसके पाचो बच्चे कहाँ कहाँ है, और क्या क्या शरारत कर रहे है।

इस दिलचस्प 'तस्वीर' मे कौनसा रग, कौनसी लाइन गलत थी? · मम्मी का वह भडकीला और शोख मेक-अप भी ऐसा मालूम होता था कि उस तस्वीर का एक जरूरी अग है। गालिब कहता है–

क़ैदे हयात व बन्देग़म, अस्ल मे दोनो एक है।
मौत से पहिले आदमी, गमसे निजात पाये क्यो ॥

जीवन और दुख जब असलमे एक है तो यह क्या जरूरी है कि आदमी मौत से पहिले थोडी देर के लिये भी निजात हासिल करने की कोशिश न करे– इस निजात के लिये कौन यमराज का इन्तजार करे ·· क्यो आदमी चन्द क्षणो के लिये आत्म–विस्मृति के दिलचस्प खेल मे हिस्सा न ले।

मम्मी सबकी तारीफ मे तर जबान थी। उसके पहलू मे ऐसा दिल था, जिसमे उन सब के लिये ममता थी। मैने सोचा, शायद इस लिये उसने अपने चेहरे पर रग मल लिया है कि लोगो को उसकी असलियत मालूम न

हो .... उसमे शायद इतनी शारीरिक शक्ति नही थी कि वह हर एक की मां बन सकती । उसने अपने वात्सल्य और प्रेम के लिये चन्द आदमी चुन लिये थे, और बाकी सारी दुनिया को छोड़ दिया था।

मम्मी को मालूम नही था। चड्डा एक तगडा पेग फीलस को पिला चुका था। चोरी छुपे नही, सब के सामने! मगर मम्मी उस वक्त अन्दर बावर्चीखाने मे पोटेटो चिप्स तल रही थी। ... फीलस नशे मे थी। हल्के हल्के सुरूर मे। जिस तरह उसके पालिश किये हुये फौलाद के रग के बाल आहिस्ता आहिस्ता लहराते थे, उसी तरह वह खुद भी लहराती थी।

रात के बारह बज चुके थे। बनकुतरे थेल्मा को तोडे सिखा सिखा कर अब उसे बता रहा था कि उसका बाप साला उससे बहुत मुहब्बत करता था। चाइल्डहुड ही मे उसने उसकी शादी बनादी थी। उसकी वाइफ बहुत ब्यूटीफुल है ... और गरीबनवाज डाली को कर्ज दे कर भूल भी चुका था। रजीतकुमार पोली को अपने साथ कही बाहर ले गया था। एलमा और किटी दुनिया भर की बाते करके अब थक गई थी, और आराम करना चाहती थी। तिपाई के आसपास फ़ीलस, उसका हीजड़ानुमा साथी और मम्मी बैठे थे। चड्डा अब भावुक नही था। फीलस उसके पहलू मे बेठी थी, जिसने पहिली बार शराब का सुरूर चखा था। उसको प्राप्त करने की प्रतिज्ञा उसकी आखो मे साफ मौजूद थी। मम्मी उससे बेखबर नही थी।

थोड़ी देर के बाद फीलस का हीजड़ा नुमा दोस्त उठकर सोफे पर लम्बा होगया और अपने बालो में कंघी करते करते सो गया— गरीबनवाज और डाली उठ कर कही चले गये। एल्मा और किटी ने आपस में किसी मारग्रेट के सम्बन्ध मे बाते करते हुये मम्मी से आज्ञा ली और चली गई ··· वनकुतरे ने आखरी बार अपनी बीवी की सुन्दरता की तारीफ़ की और फीलस की तरफ़ ललचाई हुई नजरो से देखा, फिर थेलमा की तरफ, जो उसके पास बैठी थी, और उसको बाजू से पकड़ कर चान्द दिखाने के लिये बाहर मैदान मे ले गया।

एकदम न जाने क्या हुआ कि चड्डे और मम्मी मे गरम गरम बाते शुरू हो गई। चड्डे की जबान लडखड़ा रही थी। वह एक नाखलफ बच्चे की तरह मम्मी से बदजबानी करने लगा। फीलस ने दोनो मे समझौते की बारीक बारीक कोशिश की मगर चड्डा हवा के घोडे पर सवार था। वह फ़ीलस को अपने साथ सईदा काटेज मे ले जाना चाहता था। मम्मी उसके विरुद्ध थी। वह उसको बहुत देर तक समझाती रही कि वह इस इरादे से बाज आये, मगर वह इसके लिये तैयार नही था। वह बार बार मम्मी से कह रहा था— "तुम दिवानी हो गई हो ···· बूढ़ी दल्लाला ···· फीलस मेरी है ··· पूछलो इससे ···।

मम्मी ने बहुत देर तक उसकी गालियाँ सुनी। आखिर में बडे समझाने वाले ढग से उससे कहा— "चड्डा, माई सन ··· तुम क्यो नहीं समझते ··· शीं इज यग ···

शी इज वेरी यंग!"

उसकी आवाज मे कपकपाहट थी। एक निवेदन था। एक झिड़की थी। एक बडी भयानक तस्वीर थी, मगर चड्डा बिल्कुल न समझा। उस समय, उसके सामने सिर्फ फ़ीलस और उसकी प्राप्ति थी। मैंने फीलस की तरफ देखा। और मैंने पहिली वार बडी तीव्रता से अनुभव किया कि वह वहुत छोटी उम्र की थी, मुश्किल से पन्द्रह वर्ष की होगी .... उसका सफेद चेहरा रुपहली बादलो मे घिरी हुई वर्षा की पहिली बूद की तरह काप रहा था।

चड्डे ने उसको बाजू से पकड़ कर अपनी तरफ खीचा और फिल्मो के हीरो के अन्दाज मे उसे अपने सीने के साथ भीच लिया। मम्मी विरोध मे चीखी– "चड्डा ... छोड़दो ... फार गाड सेक ... छोडदो इसे .. "

जव चड्डे ने फीलस को अपने चौड़े सीने से जुदा न किया तो मम्मी ने उसके मुह पर एक चाटा मारा– "गेट आउट ... गेट आउट!"

चड्डा भौचक्का रह गया। फीलस को जुदा करके उसने धक्का दिया और मम्मी की तरफ भयानक नजरो से देखता हुआ बाहर चला गया। मैंने उठकर आज्ञा ली और चड्डे के पीछे चला गया।

सईदा काटेज पहुँच कर मैंनें देखा कि वह पतलून, कमीस और बूट समेत पलग पर औधे मुह लेटा था। मैंने उससे कोई वात न की और दूसरे कमरे मे जा कर बडे मेज पर सो गया।

सुबह देर से उठा। घडी में दस बज रहे थे। चड्डा सुबह ही सुबह उठ कर बाहर चला गया था। कहाँ ? यह किसी को मालूम नही था। मै जब गुसलखाने से बाहर निकल रहा था तो मैंने उसकी आवाज सुनी जो गराज से बाहर आ रही थी। मै रुक गया। वह किसी से कह रहा था-- "वह लाजवाब औरत है ... खुदा की क़सम वह लाजवाब औरत है। ... दुआ करो कि उसकी उम्र को पहुँच कर तुम भी वैसी ही ग्रेट हो जाओ।"

उसके स्वर मे एक अजीब व गरीब कडवाहट थी-- मालूम नही उसका रुख उसकी स्वय की तरफ था या उस व्यक्ति की तरफ जिससे वह सम्बोधित था-- मैंने ज्यादा देर वहाँ रुके रहना उचित न समझा और अन्दर चला गया। आधा घण्टे के करीब मैंने उसका इन्तजार किया। जब वह न आया तो मै प्रभात नगर रवाना हो गया।

मेरी बीवी का मिजाज ठीक था। हरीश घर मे नही था। उसकी बीवी नें उसके सम्बन्ध मे आग्रह किया तो मैंने कह दिया कि वह अभी तक सो रहा है। पूने से काफी तफरीह हो गई थी, इसलिये मैंने हरीश की बीवी से कहा कि हमे इजाजत दी जाय। रिवाज के अनुसार उसने हमे रोकना चाहा, मगर मैं सईदा काटेज ही से फैसला करके चला था कि रात की घटना मेरे लिये मानसिक जुगाली के लिये बहुत काफी हैं।

हम चल दिये ... रास्ते मे मम्मी की बाते हुई।

जो कुछ हुआ था, मैने उसको ज्यो का त्यो सुना दिया। उसको प्रतिक्रिया यह थी कि फीलस उसकी कोई रिश्तेदार होगी। या वह उसे किसी अच्छे आसामी को पेश करना चाहती थी, तभी उसने चड्डे से लडाई की ... मै खामोश रहा। उसका समर्थन किया न प्रतिवाद।

कई दिन गुजरने पर चड्डे का खत आया, जिसमे उस रात की घटना का सरसरी जिक्र था और उसने अपने सम्वन्ध मे यह कहा था– "मै उस दिन पशु वन गया था – धिक्कार है मुझ पर!"

तीन महीने के वाद मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पडा। सीधा सईदा काटेंज पहुँचा। चड्डा मौजूद नही था। गरीबनवाज से उस वक्त मुलाकात हुई जब वह गराज से निकल कर शीरी के छोटे से वच्चे को प्यार कर रहा था। वह वडे तपाक से मिला। थोडी देर के वाद रजीत कुमार आ गया, कछुये की चाल चलता, और खामोश बैठ गया। मै अगर उससे कुछ पूछता तो वह सक्षेप मे जवाब देता। उससे वातो वातो मे मालूम हुआ कि चड्डा, उस रात के वाद मम्मी के पास नही गया। और न वह कभी यहाँ आई है। फीलस को उसने दूसरे दिन ही अपने माँ बाप के पास भिजवा दिया था। वह उस हीजडानुमा लडके के साथ घर से भाग कर आई हुई थी .. रजीत कुमार को यकीन था कि अगर वह कुछ दिन और पूना मे रहती तो वह जरूर उसे ले उड़ता। गरीबनवाज को ऐसा कोई घमण्ड नही था।

उसे सिर्फ यह अफसोस था कि वह चली गई।

चड्डे के बारे मे पता चला कि दो तीन दिन से उसकी तबीयत खराब है। ·· बुखार रहता है मगर वह किसी डाक्टर स मशवरा नही लेता-- सारा दिन इधर उधर घूमता रहता है। गरीबनवाज ने जब मुझे यह बातें बताना शुरू की तो रजीत कुमार उठ कर चला गया। मैने सिलाखो वाली खिडकी में से देखा, उसका रुख गराज की तरफ था।

मै गरीबनवाज से गराज वाली शीरी के सम्बन्ध मे कुछ पूछने के लिये स्वय को तैयार ही कर रहा था कि बनकुतरे सख्त घबराया हुआ कमरे मे दाखिल हुआ। उससे मालूम हुआ कि चड्डे को सख्त बुखार था। वह उसे टॉगे मे यहाँ ला रहा था कि रास्ते मे वह बेहोश हो गया · मै और गरीबनवाज बाहर दौडे। तागेवाले ने बेहोश चड्डे को सम्भाल रखा था। हम सब ने मिलकर उसे उठाया और कमरे मे ले जा कर बिस्तर पर लिटा दिया। मैंने उसके माथे पर हाथ रख कर देखा। वाकई बहुत तेज बुखार था। एक सौ छ डिगरी से किसी हालत मे कम न होगा।

मैंने गरीबनवाज से कहा कि फौरन डाक्टर को बुलाना चाहिये। उसने बनकुतरे से सलाह ली। वह "अभी आता हूँ" कह कर चला गया। जब वापिस आया तो उसके साथ मम्मी थी जो हाप रही थी। अन्दर दाखिल होते ही उसने चड्डे की तरफ देखा और करीब

क़रीब चीख कर पूछा– "क्या हुआ मेरे बेटे को?"

वनकुनरे ने जब उस वताया कि चड्डा कई दिन से बीमार था तो मम्मी ने वडे दुख और गुस्से के साथ कहा– "तु ा कैसे लोग हो– मुझे खबर क्यो नही दी?" फिर उसने गरीबनवाज मुझे और वनकुतरे को विभिन्न हिदायते दी। एक को चड्डे के पॉव सहलाने की दूसरे को वरफ लाने की और तीसरे को पखा करने की। चड्डे की हालत देख कर उसकी अपनी हालत बहुत गैर हो गई थी। लेकिन उसने धैर्य से काम लिया और डाक्टर बुलाने चली गई।

मालूम नही रजीत कुमार को गराज मे कैसे पता चला। मम्मी के जाने के बाद फौरन वह घबराया हुआ आया। जब उसने मालूम किया तो वनकुतरे ने उसके बेहोश होने की घटना बयान करदी, और यह भी वता दिया कि मम्मी डाक्टर के पास गई है। यह सुनकर रजीत कुमार की बेचैनी एक हद तक दूर हो गई।

मैने देखा कि वह तीनों सन्तुष्ट थे, जैसे चड्डे की सेहत की सारी जिम्मेदारी मम्मी ने अपने सर लेली है।

उसकी हिदायत के अनुसार चड्डे के पॉव सहलाये जा रहे थे। सिर पर बरफ की पट्टियाँ रखी जा रही थी। जब मम्मी डाक्टर ले कर आई तो वह कुछ कुछ होश मे आ रहा था। डाक्टर ने मुआयने मे काफी देर लगाई। उस के चेहरे से मालूम होता था कि चड्डे की ज़िन्दगी खतरे मे है। मुआयने के बाद डाक्टर ने मम्मी

को इशारा किया और वे कमरे मे बाहर चले गये। मैंने सिलाखो वाली खिडकी म से देखा गराज का टाटका पर्दा हिल रहा था।

थोडी देर के बाद मम्मी आई। गरीबनवाज, बनकुतरे और रजीत कुमार स उसने अलग अलग कहा कि घबराने की कोई बात नही। चड्डा अब आखे खोल कर सुन रहा था। मम्मी को उसने आश्चर्य चकित निगाहो स नही देखा था। लेकिन वह उलझन सी अनुभव कर रहा था। कुछ देर के बाद जब वह समझ गया कि मम्मी क्यो और कैसे आई है तो उसने मम्मी का हाथ अपने हाथ मे लिया और दबा कर कहा-- "मम्मी! यू आर ग्रेट!"

मम्मी उसके पास पलग पर बैठ गई। वह वात्सल्य की मूर्ति थी। चड्डे के तपते हुये माथे पर हाथ फेर कर, उसने मुस्कराते हुये सिर्फ इतना कहा-- "मेरे बेटे मेरे गरीब बेटे।"

चड्डे की आखो मे आसू आगये लेकिन फौरन ही उसने उनको सुखाने की कोशिश की और कहा-- "नही तुम्हारा बेटा प्रथम श्रेणी का स्काउण्ड्रल है जाओ, अपने स्वर्गवासी पति का पिस्तौल लाओ और उसके सीने पर दाग दो।"

मम्मी ने चड्डे के गाल पर धीरे से तमाचा मारा-- "व्यर्थ बकवास न करो।" फिर वह चुस्त व चालाक नर्स की तरह उठी और हम सबसे कहा-- "लडको। चड्डा बीमार है, और मुझे हस्पताल ले जाना है उसे--समझे?"

सब समझ गये। गरीबनवाज ने फौरन टैक्सी का प्रबन्ध कर दिया। चड्डे को उठा कर उसमे डाला गया। वह बहुत कहता रहा कि ऐसी कौन सी आफत आ गई है कि उसे हस्पताल के सुपुर्द किया जा रहा है। मगर मम्मी यही कहती रही कि बात कुछ भी नही है। हस्पताल मे जरा आराम रहता है। चड्डा बहुत जिद्दी था। मगर मनोवैज्ञानिक रूप मे वह इस समय मम्मी की किसी बात से इन्कार नही कर सकता था।

चड्डा हस्पताल मे दाखिल हो गया। मम्मी ने अकेले मे मुझे बताया कि बीमारी बडी भयानक है, यानी प्लेग। यह सुनकर मेरे होश उडगये। खुद मम्मी बहुत परेशान थी। लेकिन उसको उम्मीद थी कि यह बला टल जायगी और चड्डा बहुत जल्द स्वस्थ हो जायगा।

इलाज होता रहा। प्रायवेट हस्पताल था। डाक्टरो ने चड्डे का इलाज बहुत ध्यान से किया, मगर कई उलझने पैदा हो गई। उसकी चमड़ी जगह जगह से फटनेलगी और बुखार बढता गया। डाक्टरो ने अन्त मे यह राय दी कि उसे बम्बई ले जाओ, मगर मम्मी न मानी। उसने चड्डे को उसी हालत मे उठवाया और अपने घर ले गई।

मैं ज्यादा देर पूने मे नही ठहर सकता था। वापिस बम्बई आया तो मैंने टेलीफोन के द्वारा कई बार उसका हाल मालूम किया। मेरा ख्याल था कि वह प्लेग के हमले से बच नही सकेगा। मगर मुझे मालूम हुआ कि धीरे धीरे उसकी हालत सुधर रही है। एक मुकदमे के

सिलसिल मे मुझे लाहौर जाना पडा। वहाँ से पन्द्रह दिन के बाद लौटा तो मेरी बीवी ने चड्ढे का एक खत दिया, जिसमे सिर्फ यह लिखा था– "महान आत्मा मम्मी ने अपने नाखलफ बेटे को मौत के मुँह से बचा लिया है।"

इन चन्द शब्दो मे बहुत कुछ था। भावनाओ का एक पूरा समुद्र था। मैंने अपनी बीवी से इसका जिक्र किया और अपनी आदत के विरूद्ध भावुक ढग से किया तो उसने प्रभावित होकर सिर्फ इतना कहा– "ऐसी औरते आम तौर पर सेवा करने वाली हुआ करती है।"

मैंने चड्ढे को दो तीन खत लिखे, जिनका जवाब न न आया। बाद मे मालूम हुआ कि मम्मी ने उसे जलवायु बदलने के लिये अपनी एक सहेली के यहाँ लोनावला भेज दिया था। चड्ढा वहाँ मुश्किल से एक महीना रहा और उकता कर वापिस चला आया। जिस दिन वह पूना पहुँचा, संयोग से मै वही था।

प्लेग के भयंकर हमले के कारण वह बहुत कमजोर हो गया था, मगर उसकी हा हू वाली आदत उसी तरह जोरो पर थी। अपनी बीमारी का उसने इस ढग से जिक्र किया जिस तरह आदमी साइकिल की साधारण सी दुर्घटना का करता है। अब, जबकि वह बच गया था, अपनी खतरनाक बीमारी के सम्बन्ध मे विस्तृत बातचीत उसे बेकार मालूम होती थी।

सईदा काटेज मे चड्ढे की गैरहाजिरी के दिनो मे

छोटे छोटे परिवर्तन हुये थे। एल० बन्धु यानी अकील और शकील कही और उठ गये थे, क्योंकि उन्हे अपनी निजी फिल्म कम्पनी कायम करने के लिय सईदा काटेज की फिजा उचित और योग्य मालूम नही होती थी। उनकी जगह एक बगाली म्यूजिक डायरेक्टर आ गया था। उसका नाम सेन था। उसके साथ लाहौर से भागा हुआ एक लडका रामसिग रहता था। सईदा काटेज वाले सब उससे काम लेते थे। तबीयत का बहुत शरीफ और खिदमत गुजार था। चड्डे के पास उस वक्त आया था जब वह मम्मी के कहने पर लोनावला जा रहा था। उसने गरीबनवाज और रजीत कुमार से कह दिया था कि उसे सईदा काटेज मे रख लिया जाय। सेन के कमरे मे जगह खाली थी, इस लिये उसने वही अपना डेरा जमा लिया था।

रजीत कुमार को कम्पनी के नये फिल्म मे हीरो चुन लिया गया था और उसके साथ वायदा किया गया था कि यदि फिल्म कामयाब हुआ तो उसको दूसरा फिल्म डायरेक्ट करने का मौका दिया जायगा। चड्डा अपनी दो साल की जमाशुदा तन्ख्वाह मे से डेढ हजार रुपये एक साथ प्राप्त करने मे सफल हो गया था। उसने रजीत कुमार से कहा था– "मेरी जान! अगर कुछ वसूल करना हैं तो प्लेग से पीडित हो जाओ। हीरो और डायरेक्टर बनने से तो मेरा ख्याल हैं, यही बेहतर है।"

गरीबनवाज ताजा ताजा हैदराबाद से वापिस आया था, इस लिये सईदा काटेज कुछ कुछ खुशहाल थी। मैंने देखा कि गराज के बाहर अलगनी पर ऐसी कमीजे और शलवारें लटक रही थीं, जिनका कपड़ा अच्छा और कीमती था। शीरी के नन्हे से बच्चे के पास नये खिलौने थे।

मुझे पूना मे पन्द्रह रोज रहना पड़ा। मेरा पुराना फिल्मो का साथी अब नये फिल्म की हीरोइन की मोहब्बत मे गिरफ्तार होने की कोशिश मे सलग्न था। मगर डरता था, क्योंकि यह हीरोइन पजाबन थी। और उसका पति बडी बडी मूछो वाला, हट्टा कट्टा मुश्टण्डा था। चड्डा ने उसे हौसला दिया था– "कुछ परवाह न करो साले की जिस पजाबी एक्ट्रेस का पति बडी बडी मूछो वाला पहलवान हो, वह इश्क के मैदान मे जरूर चारो शाने चित गिरा करता है। बस इतना करो कि सौ रुपये फी गाली के हिसाब से मुझसे पजाबी की दस बीस बड़ी 'हवीवेट' किस्म की गालियाँ सीख लो। ये तुम्हारी खास मुश्किलो मे बहुत काम आया करेंगी।"

हरीश, एक बोतल फी गाली के हिसाब से छ गालियाँ पजाब के विशेष उच्चारण मे याद कर चुका था। मगर अभी तक उसे अपने इश्क के रास्ते मे कोई ऐसी खास मुश्किल दरपेश नही आई थी जो वह उनके प्रभाव का इम्तेहान ले सकता।

मम्मी के घर सदैव की भाति महफिले जमती थी।

पोली, डाली, किटी, एल्मा, थेल्मा वगैरा, सब आती थी। वनकुतरे उसी तरह थेल्मा को कथा कली और ताण्डव नृत्य की ता थई और धा नी ना कत की वन टू थ्री बना बना कर बताता था। और वह सच्चे दिल से उसे सीखने की कोशिश करती थी। गरीबनवाज यथा शक्ति कर्ज दे रहा था। और रजीत कुमार, जिसको अब कम्पनी के नये फिल्म मे हीरो का चॉस मिल रहा था, इन मे से किसी एक को बाहर खुली हवा मे लेजाता था। ... चड्डे के नगे चुटकुले सुन कर उसी तरह कहकहे लगते थे .. एक सिर्फ वह नही थी .... वह जिसके बालो के रग के लिये सही उपमा ढूढने के लिये चड्डे ने काफी समय नष्ट किया था। मगर उन महफिलो मे चड्डे की निगाहे उसे ढूढती नहीं थी। फिर भी कभी कभी जब चड्डे की नजरे मम्मी की नजरो से टकरा कर झुक जाती थी तो मै महसूस करता था कि उसको अपनी उस रात की दीवानगी का अफसोस हैं। ऐसा अफसोस जिसकी याद से उसे तकलीफ होती थी। चुनाचे चौथे पैंग के बाद किसी वक्त इस प्रकार का वाक्य उसकी जबान से अनायास ही निकल जाता "चड्डा, यू आर ए डेमिड ब्रूट!"

यह सुन कर मम्मी मुस्करा देती थी, जैसे वह इस मुस्कराहट की मिठास मे लपेट लपेट कर कह रही हो—"डोण्ट लुक ब्रूट!"

वनकुतरे से उसकी चख वैसी ही चलती थी। मुड्र मे आ कर जब भी वह अपने बाप की तारीफ मे या

अपनी बीवी की खूबसूरती के सम्बन्ध में कुछ कहने लगता तो वह उनकी बात बहुत बड़े गडासे से काट डालता। वह गरीब चुप हो जाता और अपना मेट्रीक्युलेशन सर्टिफिकेट तय कर के जेब मे डाल लेता।

मगर, वही मम्मी थी ·· पोली की मम्मी, डॉली की मम्मी, चड्डे की मम्मी, रजीत कुमार की मम्मी ··· सोडे की बोतलो, गजक की चीजो और महफिल जमाने के दूसरे साजो सामान के इन्तजाम मे वह उसी वात्सल्य भरी लगन से भाग लेती थी। उसके चेहरे का मेक अप उसी तरह वाहियात होता था। उसके कपड़े उसी तरह शोख़ और भड़कीले थे। पाउण्डर, पेस्ट और सुर्खी के नीचे से उसकी झुर्रियाँ, उसी तरह झाकती थीं। मगर अब मुझे ये पवित्र दिखाई देती थी। इतनी पवित्र कि प्लेग के कीडे उन तक नही पहुँच सके थे। डर कर, सिमट कर, वह दौड गये थे ·· चड्डे के शरीर से भी निकल भागे थे। क्योकि उस पर इन झुर्रियो का साया था · इन पवित्र झुर्रियो का जो हर वक्त बिल्कुल वाहियात रगो मे लिथडी रहती थी।

वनकुतरे की खूबसूरत बीवी का जब गर्भ पात हुआ था तो मम्मी की ही यथा समय मदद से उसकी जान बची थी। थेल्मा जब हिन्दुस्तानी नृत्य सीखने के शौक मे मारवाड़ के एक कत्थक के हत्थे चढ गई थी, और इस सौदे मे एक दिन जब उसको अचानक मालूम हुआ था कि उसने एक और बीमारी खरीद ली है, तो मम्मी ने

उसको बहुत डाटा था और उसको जहन्नुम सुपुर्द करके हमेशा हमेशा के लिये उससे सम्बन्ध विच्छेद करने का फैसला कर लिया था, मगर उसकी आँखो मे आँसू देख कर उस का दिल पिघल गया था। उसने उसी दिन शाम को अपने बेटों को सारी बात सुना दी थी। और उनसे प्रार्थना की थी कि वह थेलमा का इलाज कराये। किटी को एक वर्ग पहेली हल करने के सिलसिले मे पाच सौ रुपये का इनाम मिला था, तो उसने मजबूर किया था कि वह कम से कम उसके आधे रुपये गरीबनवाज को दे दे। क्योकि उस गरीब का हाथ तग है। उसने किटी से कहा था– "तुम इस वक्त उसे दे दो बाद मे लेती रहना।" और मुझसे उसने पन्द्रह दिन के कयाम के दौरान मे कई बार मेरी मिसेज के बारे पूछा था और चिन्ता प्रकट की थी कि पहिले बच्चे की मौत को इतने बरस हो गये है, दूसरा बच्चा क्यो नही हुआ। रजीत कुमार के साथ ज्यादा लगाव के साथ बात नही करती थी। ऐसा मालूम होता था कि उसकी दिखावट पसन्द तबीयत उसको अच्छी नही लगती थी। मेरे सामने इसका इजहार वह एक दो बार शब्दो मे भी कर चुकी थी। म्युजिक डायरेक्टर, सैन से वह नफरत करती थी। चड्डा उसको अपने साथ लाता था तो वह उससे कहती थी– "ऐसे कमीन आदमी का यहाँ मत लाया करो।" चड्डा उससे कारण पूछता तो वह बडी गम्भीरता से यह जवाब देती थी कि "मुझे यह आदमी उखड़ा उखडा सा

मालूम होता है। फिट नही बैठता मेरी नजरो मे।" यह सुन कर चड्डा हस देता था।

सम्मी के घर की महफिलो की निष्ठा से भरी गरमी लिये मै वापिस बम्बई चला गया। उन महफिलो मे रिन्दी थी, शराबखोरी थी, विलासिता थी, मगर कोई उल्भाव नही था। हर चीज गर्भवती औरत के पेट की तरह समझ मे आने वाली थी। उसी तरह उभरी हुई। देखने मे उसी तरह कुढब, बैण्डी और देखने वाले को अचम्भे मे डालने वाली, मगर असल मे बडी सही, व्यवस्थित और अपनी जगह पर कायम।

दूसरे दिन सुबह के अखबारो मे यह पढा कि सईदा काटेज मे बगाली म्युजिक डायरेक्टर सेन मारा गया है। उसको कत्ल करने वाला कोई रामसिह है, जिसकी उम्र चौदह पन्द्रह वर्ष के लगभग बताई जाती है। मैने फौरन पूना टेलीफोन किया मगर कोई न मिल सका।

एक हफ्ते के बाद चड्डे का खत आया, जिसमे कत्ल की घटना का विस्तृत वर्णन था। रात को सब सोये थे कि चड्डे के पलग पर अचानक कोई गिरा। वह हडबडा कर उठा। रोशनी की तो देखा सेन है। खून मे लथपथ चड्डा, अच्छी तरह अपने होश व हवास सम्भालने भी न पाया था कि दरवाजे मे रामसिह प्रगट हुआ। उसके हाथ मे छुरी थी। फौरन ही गरीबनवाज और रजीत कुमार भी आ गये। सारी सईदा काटेज जाग उठी। रजीत कुमार और गरीबनवाज ने रामसिह को पकड लिया और छुरी

उसके हाथ से छीन ली। चड्डे ने सेन को अपने पलंग पर लिटाया और उससे ज़ख्मो के सम्बन्ध मे कुछ पूछने ही वाला था कि उसने आखरी हिचकी ली और ठण्डा हो गया।

रामसिह, गरीबनवाज और रंजीतकुमार की पकड़ मे था, मगर वह दोनो काप रहे थे। सेन मर गया तो रामसिह ने चड्डे से पूछा– "भापाजी– मर गया?"

चड्डे ने हाँ मे उत्तर दिया तो रामसिह ने रंजीतकुमार और गरीबनवाज से कहा-- "मुझे छोड़ दीजिये, मै भागूंगा नही।"

चड्डे की समझ मे नही आता था कि वह क्या करे। उसनें फौरन नौकर को भेज कर मम्मी को बुलवाया। मम्मी आई तो सबनें सन्तोष की सास ली कि मामला सुलझ जायेगा। उसने रामसिह को आजाद कर दिया और थोडी देर के वाद अपने साथ पुलिस स्टेशन लेगई, जहाँ उसका बयान दर्ज करा दिया गया। इसके वाद चड्डा और उसके साथी कई दिन तक सख्त परेशान रहे। पुलिस की पूछ-ताछ, बयानात, फिर अदालत मे मुकदमे की पैरवी। मम्मी इन दिनो बहुत दौड़ धूप करती रही थी। चड्डा को यकीन था कि रामसिह बरी हो जायगा और ऐसा ही हुआ। मातहत अदालत ही ने उसे साफ बरी कर दिया। अदालत में उसका वही बयान था, जो उसने थाने मे दिया था। मम्मी ने उससे कहा था– "वेटा, घबराओ नही। जो कुछ हुआ है सच सच

बतादो।" और उसने सारी घटना ज्यो की त्यो बयान कर दी थी कि सेन ने उसको प्ले-बैक सिगर बना देने का लालच दिया था। उसको खुद को भी संगीत से बड़ा लगाव था और सेन बहुत अच्छा गाने वाला था। वह इस चक्कर में आकर उसकी वासना को पूरी करता रहा, मगर उसको इससे सख्त नफ़रत थी। उसका दिल बार बार उसे धिक्कारा करता था। अन्त मे वह इतना तग आगया था कि उसने सेन से कह भी दिया था कि यदि उसने फिर उसे मजबूर किया तो वह उसे जान से मार डालेगा। और दुर्घटना वाली रात को यही हुआ।

अदालत मे उसने यही बयान दिया। मम्मी मौजूद थी। आँखो ही आँखो मे वह रामसिह को धीरज देती रही कि घबराओ नही, जो सच है, कह दो। सच की हमेशा विजय होती है। इसमे कोई शक नही कि तुम्हारे हाथो ने खून किया है। मगर एक बडी गन्दी चीज का। एक पलीदी का। एक अप्राकृतिक सौदे का।

रामसिह ने बडी सादगी, बडे भोलपन और बडे मासूमाना ढग से सारी घटनाये बयान की कि मजिस्ट्रेट इतना प्रभावित हुआ कि उसने रामसिह को बरी कर दिया। चड्डे ने कहा– "इस झूठे जमाने मे सचाई की यह आश्चर्य जनक विजय है और इसका सेहरा मेरा बूढी मम्मी के सिर है।"

चड्डे ने मुझे उस जलसे मे बुलाया था जो रामसिह की रिहाई की खुशी मे सईदा–काटेज वालो ने किया था। मगर मै फुरसत न मिलने के कारण उसमे शरीक नही

हो सका। एल० बन्धु, शकील और अक़ील, दोनो वापिस सईदा काटेज आगये थे। बाहर की फिजा भी उनकी निजी फिल्म कम्पनी की स्थापना के लिये रास न आई थी। अब वे फिर अपनी पुरानी फिल्म कम्पनी मे किसी असिस्टैण्ट के असिस्टैण्ट हो गये थे। उन दोनो के पास उस पूँजी मे से चन्द सौ बाकी बचे हुये थे जो उन्होने अपनी फिल्म कम्पनी की नीव के लिये प्राप्त किया था। चड्डे के मशवरे पर उन्होने यह सब रुपया, जल्से को कामयाब बनाने के लिये दे दिया। चड्डे ने उनसे कहा था—"अब मैं चार पैग पी कर दुआ करूँगा कि वह तुम्हारी निजी फिल्म कम्पनी फौरन खडी कर दे।"

चड्डे का बयान था कि इस जल्से मे बनकुतरे ने शराब पी कर नियम विरुद्ध, अपने साले बाप की तारीफ न की और न अपनी खूबसूरत बीवी का जिक्र किया। गरीबनवाज ने किटी की आवश्यकताओं पर विचार करते हुये उसको दो सौ रुपये कर्ज दिये और रंजीत कुमार से उसने कहा था— "तुम इन बिचारी लडकियो को यो ही झासे न दिया करो · हो सकता है कि तुम्हारी नियत साफ हो, मगर लेने के मामले मे इनकी नियत इतनी साफ़ नही होती ··· कुछ न कुछ दे दिया करो!"

मम्मी ने इस जल्से मे रामसिह को बहुत प्यार किया और सब को यह मशवरा दिया कि उसे घर वापिस जाने के लिये कहा जाय। चुनाचे वही फैसला हुआ और दूसरे दिन गरीबनवाज ने उसके टिकिट का

प्रबन्ध कर दिया-- शीरी ने सफर के लिये उसको खाना पका कर दिया। स्टेशन पर सब उसको छोड़ने गये। ट्रेन चली तो वे देर तक हाथ हिलाते रहे।

ये छोटी छोटी बाते मुझे उस जल्से के दस दिन बाद मालूम हुई जब मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पडा। सईदा काटेज मे कोई परिवर्तन नही हुआ था। ऐसा मालूम होता था कि वह ऐसा पडाव है जिसकी शक्ल व सूरत हजारो काफिलो के ठहरने से भी तब्दील नहो होती। वह कुछ ऐसी जगह थी जो अपनी कमी खुद ही पूरी कर देती थी। मै जिस दिन वहाँ पहुँचा, मिठाई बट रही थी। शीरी के घर एक और लड़का पैदा हुआ था। बनकुतरे के हाथ मे ग्लैक्सो का डब्बा था। उन दिनों यह बडी मुश्किल से मिलता था। उसने अपने बच्चे के लिये कही से दो प्राप्त किये थे। उनमे से एक वह शीरी के बच्चे के लिये ले आया था। चड्डे ने आखरी दो लड्डू उसके मुह मे ठूसे और कहा-- "तू यह ग्लैक्सो का डब्बा ले आया-- बड़ा कमाल किया हैं तूने ·· अपने साले बाप और अपनी साली बीवी को, देखना, हरगिज कोई बात न करना।"

बनकुतरे ने बडे भोलेपन के साथ कहा– "साले, मै अब कोई पियेला हूँ ·· वह तो दारू बोला करती है ·· वैसे बाईगाड ···· मेरी बीवी बड़ी हैण्डसम है ··।"

चड्डे ने इतने जोर से कहकहा लगाया कि बनकुतरे को और कुछ कहने का मौका न मिला। उसके बाद चड्डा

ग़रीबनवाज और रजीत कुमार मेरी तरफ मुडे और उस कहानी की बाते शुरू हो गई जो मै अपने पुराने फिल्मो के साथी के द्वारा वहाँ के एक प्रोडयूसर के लिये लिख रहा था। फिर कुछ देर शीरी के नये बच्चे के लिये नाम तय होता रहा। सैकडो नाम पेश किये गये मगर चड्डे को पसन्द न आये। अन्त मे मैने कहा कि जन्म स्थान यानी सईदा काटेज की दृष्टि से लडका मसऊद है। इस लिये मसऊद नाम बेहतर रहेगा। चड्डे को पसन्द नही था, लेकिन उसने अस्थायी रूप से मान लिया।

इस दौरान मे मैने अनुभव किया कि चड्डा, गरीबनवाज और रजीत कुमार तीनो की तबीयत कुछ कुछ बुझी बुझी सी थी। मैने सोचा यह शायद पतझड़ के मौसम की वजह से है। जब आदमी व्यर्थ मे थकावट अनुभव करता है। शीरी का नया बच्चा भी इस उदासी का कारण हो सकता था लेकिन यह शका भी तर्क की कसौटी पर पूरी नही उतरती थी। सेन के कत्ल की ट्रेजेडी? ··· मालूम नही क्या कारण था ·· लेकिन मैंने यह निश्चित रूप से अनुभव किया था कि वह सब उदासीन थे। प्रकट हंसते थे, बोलते थे, मगर अन्दर से दुखी थे।

मै प्रभात नगर मे अपने पुराने फिल्मो के साथी के घर मे कहानी लिखता रहा। यह मसरूफियत पूरे सात दिन जारी रही। मुझे बार बार ख्याल आता था कि इस दौरान मे चड्डे ने मुझे छेडा क्यो नही। वनकुतरे भी कही गायब था। रजीत कुमार से मेरे कोई इतने

अच्छे सम्बन्ध नहीं थे कि वह मेरे पास इतनी दूर आता। गरीबनवाज के सम्बन्ध में मैंने सोचा था कि शायद हैदराबाद चला गया हो। और मेरा पुराना फिल्मों का साथी, अपने नये, फिल्म की हीरोइन से उसके घर में, उसके बड़ी बड़ी मूछों वाले पति की मौजूदगी में इश्क लड़ाने का पक्का इरादा कर रहा था।

मैं अपनी कहानी के एक बड़े दिलचस्प भाग का सीनेरियो तैयार कर रहा था कि चड्ढा दैवी कोप की तरह आया। कमरे में दाखिल होते ही उसने मुझसे पूछा–"इस बकवास का तुमने कुछ वसूल किया है?"

उसका इशारा मेरी कहानी की तरफ था, जिसके मुआवजे की दूसरी किस्त मैंने दो दिन हुये वसूल की थी–"हाँ ··दूसरा हजार परसों लिया है।"

"कहाँ है यह हजार?" यह कहता चड्ढा मेरे कोट की तरफ बढा।

"मेरी जेब में।"

चड्ढे ने मेरी जेब मे हाथ डाला। सौ सौ के चार नोट निकाले और मुझसे कहा– "आज शाम को मम्मी के यहाँ पहुँच जाना– एक पार्टी है।"

मैं इस पार्टी के सम्बन्ध मे उससे कुछ पूछने ही वाला था कि वह चला गया। वह उदासीनता, जो मैंने चन्द रोज पहिले उसमे अनुभव की थी, अभी तक वर्तमान थी। वह कुछ दुखी भी था···मैंने उसके सम्बन्ध मे सोचना चाहा मगर दिमाग तैयार न हुआ। कहानी के

दिलचस्प भाग का सिनेरियो ‌इसमे बुरी तरह फसा था।

अपने पुराने फिल्मो के साथी की बीवी से अपनी बीवी की बातें करके शाम को साढे पाच बजे के लगभग मैं वहाँ से रवाना होकर सात बजे सईदा कॉटेज पहुँचा। गराज के बाहर अलगनी पर गीले पोतड़े लटक रहे थे। और नल के पास एल. बन्धु शीरी के बड़े लडके के साथ खेल रहे थे। गराज का टाट का पर्दा हटा हुआ था और शीरी उनसे शायद मम्मी की बाते कर रही थी। मुझे देख कर वह चुप हो गये। मैंने चड्डे के बारे मे पूछा तो अकील ने कहा कि वह मम्मी के घर मिल जायगा।

मै वहाँ पहुँचा तो एक शोर बरपा था। सब नाच रहे थे। गरीबनवाज, पोली के साथ, रजीत कुमार, किटी और एल्मा के साथ और वनकुतरे थेल्मा के साथ। वह उसको कथा कली के मुदरे बता रहा था। चड्डा मम्मी को गोद मे उठाये, इधर उधर कूद रहा था– सब नशे मे थे। एक तूफान मचा हुआ था। मै अन्दर दाखिल हुआ तो सबसे पहिले चड्डे ने नारा लगाया। उसके बाद देशी और अर्ध विदेशी आवाजो का एक गोला सा फटा, जिसकी गूंज देर तक कानो मे सरसराती रही। मम्मी बडे तपाक से मिली– ऐसे तपाक से जो बेतकल्लुफी की हद तक बढा हुआ था। मेरा हाथ अपने हाथ मे लेकर उसने कहा– "किस मी डियर!"

लेकिन उसने खुद ही मेरा एक गाल चूम लिया

और घसीट कर नाचने वालों के झुरमुट में लेगई। चड्ढा एक दम चीखा-- "बन्द करो! अब शराब का दौर चलेगा!" फिर उसने नौकर को आवाज दी– "स्कॉटलैण्ड के शहजादे– व्हिस्की की नई बोतल लाओ।" स्काटलैण्ड का शहजादा नई बोतल ले आया। नशे में धुत्त था। बोतल खोलने लगा तो हाथ से गिरी और चकनाचूर हो गई। मम्मी ने उसको डाँटना चाहा तो चड्ढे ने रोक दिया और कहा-- "एक बोतल टूटी है मम्मी जाने दो, यहाँ दिल टूटे हुये हैं।"

महफिल एक दम सूनी हो गई। लेकिन फौरन ही चड्ढे ने इस क्षणिक उदासीनता को अपने कहकहों से दरहम बरहम कर दिया। नई बोतल आई। हर गिलास में ग्राण्डील पेग डाला गया। चड्ढे ने प्रवाह रहित तकरीर शुरू की– "लेडीज एण्ड जण्टिलमेन · आप सब जहन्नुम में जाय मण्टो हमारे दरमियान मौजूद है, जो बहुत बड़ा कहानी लेखक बनता है · इंसानी नफसियात की ·· वह क्या कहते है ·· अमीक़ तरीन गहराइयों मे उतर जाता है ·· मगर मै कहता हूँ कि बकवास है · कुये मे उतरने वाले · कुये मे उतरने वाले .." उसने इधर उधर देखा– "अफसोस है कि यहाँ कोई हिन्दस्तोड नही। एक हैदरावादी है जो क को ख़ कहता है। और जिससे दस बरस पीछे मुलाकात हुई हो तो कहेगा-- परसों आप से मिला था– धिक्कार है उसके निजाम हैदराबाद पर जिसके पास कई लाख टन सोना

हैं। करोडो जवाहरात है, लेकिन एक मम्मी नही ··· हाँ ··· वह कुये मे उतरने वाले ··· मैंने क्या कहा था कि सब बकवास हैं ··· पजाबी मे जिन्हे टोभे कहते है ··· वह गोता लगाने वाले ··· वह इसके मुकाबले मे इसानी नफसियात को कही ज्यादा समझते है ··· इस लिये मै कहता हूँ ··· ।"

सब ने जिन्दाबाद का नारा लगाया। चड्डा चीखा—"यह सब साज़िश हैं ··· इस मण्टो की साजिश है। वरना मैने हर हिटलर की तरह तुम लोगों को मुर्दाबाद के नारे का इशारा किया था ·· तुम सब मुर्दाबाद ··· लकिन पहिले मै ··· मै ··· ।" वह भावुक हो गया—"मै ··· जिसने उस रात, उस ··· साप के पेट के खपरो जैसे रग वाले ··· बालो की एक लडकी के लिये अपनी मम्मी को नाराज कर दिया ··· मै खुद को खुदा मालूम कहाँ का 'डोन जुआन' समझता था ··· लेकिन नही ··· उसको प्राप्त करना कोई मुश्किल काम नही था। मुझे अपनी जवानी की क़सम, एक ही चुम्बन मे उस प्लेटीनम ब्लोण्ड के कुवारपने का सारा रस मै अपने इन मोटे मोटे ओठो से चूस सकता था ··· लेकिन यह एक ··· यह एक अनुचित हरकत थी ·· वह कम उम्र थी ··· इतनी कम उम्र, इतनी कमजोर, इतनी करेक्टरलेस ··· इतनी ··" उसने मेरी तरफ सवालिया नजरो से देखा—"बताओ यार, उसे उर्दू, फारसी या अरबी मे क्या कहेगें ··· करेक्टरलेस ··· लेडीज एण्ड जण्टिल्मेन ··· वह इतनी

छोटी, इतनी कमजोर और इतनी चरित्र हीन थी कि उस रात गुनाह में शरीक होकर, या तो वह सारी उम्र पछताती रहती, या उसे बिल्कुल भूल जाती ... उन चन्द घड़ियों की याद के सहारे जीने का ढग उसको बिल्कुल न आता था ... मुझे उसका दुख होता —— अच्छा हुआ कि मम्मी ने उसी वक्त मेरा हुक्का-पानी बन्द कर दिया ... अब अपनी बकवास बन्द करता हूँ। मैंने असल में एक बहुत लम्बी चौडी तकरीर करने का इरादा किया था, मगर मुझसे कुछ बोला नही जाता ... मैं एक पैग और पीता हूँ।"

उसने एक पैग और पिया। तकरीर के दौरान मे सब खामोश थे। उसके बाद भी खामोश रहे। मम्मी न मालूम क्या सोच रही थी। पाउडर और सुर्खी के नीचे उसकी झुर्रियाँ भी, ऐसा दिखाई देता था कि गौर व फिक्र में डूबी हुई है। बोलने के बाद चड्डा जैसे खाली सा हो गया था। इधर उधर घूम रहा था। जैसे कोई चीज खोने के लिये ऐसा कोना ढूण्ढ रहा है जो उसके मस्तिष्क मे अच्छी तरह सुरक्षित रहे। मैंने उससे एक बार पूछा- "क्या बात है चड्डे?"

उसने कहकहा लगा कर जवाब दिया-- "कुछ नहीं .. बात यह है कि आज व्हिस्की मेरे दिमाग पर जमा कर लात नही मार रही।"

उसका क़हकहा खोखला था।

बनकुतरे ने थेलमा को उठाकर मुझे अपने पास

बिठा लिया, और इधर उधर की बाते करनें के बाद, अपने बाप की तारीफ शुरू कर दी कि वह बडा गुनी आदमी था। ऐसा हारमोनियम बजाता था कि लोग दमबखुद हो जाते थे। फिर उसने अपनी बीवी की खूबसूरती का जिक्र किया और बताया कि बचपन ही मे उसके बाप ने यह लड़की चुनकर उससे व्याह दी थी। बगाली म्युजिक डायरेक्टर सेन की बात निकली तो उसने कहा- "मिस्टर मण्टो वह एक दम हल्कट आदमी था ··· कहता था मै खान साहब अब्दुलकरीम खॉ का शागिर्द हूँ ···· झूठ, बिल्कुल झूठ ··· वह तो बगाल के किसी भड़वे का शागिर्द था।"

घड़ी ने दो बजाये। चड्ढे ने जटर बैग बन्द किया, किटी को धक्का दे कर एक तरफ गिराया और बढकर बनकुतरे के कद्दू जैसे सिर पर धप्पा मार कर कहा- "बकवास बन्द कर बे ···· उठ ··· और कुछ गा ··· लेकिन खबरदार, अगर तूने कोई पक्का राग गया।"

बनकुतरे नें फौरन गाना शुरू कर दिया। आवाज अच्छी नही थी। मुरकियो की नोक पलक साफ रूप मे उसके गले से नही निकलती थी। लेकिन जो कुछ गाता था पूरी निष्ठा से गाता था। मालकोस मे उसने ऊपर नीचे दो तीन फिल्मी गाने सुनाये, जिनसे फिजा बहुत उदास हो गई। मम्मी और चड्ढा एक दूसरे की तरफ देखते थे और नजरे किसी दूसरी दिशा मे हटा लेते थे। ··· ग़रीबनवाज इतना प्रभावित हुआ कि उसकी आँखो मे आँसू आगये।

चड्डे ने जोर का कहकहा लगाया और कहा– "हैदराबाद वालों की आंख का मसाना बहुत कमजोर होता है ... मौका बेमौका टपकने लगता है।"

गरीबनवाज ने अपने आंसू पोंछे और एलमा के साथ नाचना शुरू कर दिया। बनकुतरे ने ग्रामोफोन के तवे पर रेकार्ड रख कर सुई लगादी। घिसी हुई टयून बजने लगी। चड्डे ने मम्मी को फिर गोद में उठा लिया और कूद कूद कर शोर मचाने लगा। उसका गला बैठ गया था। उन मिरासनों की तरह जो शादी ब्याह के मौके पर ऊँचे सुरों में गा गा कर अपनी आवाज का नास मार लेती हैं।

इस उछल कूद और चीखम दहाड़ में चार बज गये। मम्मी एक दम खामोश हो गई। फिर उसने चड्डे से कहा– "बस, अब खतम!"

चड्डे ने बोतल से मुंह लगाया। उसे खाली करके एक तरफ फेंक दिया और मुझ से कहा "चलो, मण्टो चलें!"

मैंने उठकर मम्मी से आज्ञा लेनी चाही तो चड्डे ने मुझे अपनी तरफ खेंच लिया-- "आज कोई अलविदा नहीं कहेगा।"

हम दोनों बाहर निकल रहे थे कि मैंने बनकुतरे के रोने की आवाज सुनी। मैंने चड्डे से कहा-- "ठहरो, देखें क्या बात है।" मगर वह मुझे धकेल कर आगे ले गया-- "इस साले की आंखों का मसाना भी खराब है।"

मम्मी के घर से सईदा काटेज बिल्कुल करीब थी।

रास्ते मे चड्डे ने कोई बात न की। सोने से पहिले मैंने उससे इस विचित्र पार्टी के सम्बन्ध मे पूछना चाहा तो उसने कहा– "मुझे सख्त नीन्द आ रही है।" और बिस्तर पर लेट गया।

सुबह उठकर मै गुस्लखानें मे गया। बाहर निकला तो देखा कि गरीबनवाज, गराज के टाट के साथ लगकर खड़ा है और रो रहा है। मुझे देख कर वह आंसू पोछता हुआ वहाँ से हट गया। मैंने पास जा कर उससे रोने का कारण पूछा तो उसने कहा– "मम्मी चली गई।"

"कहाँ ?"

"मालूम नही।" यह कह कर गरीबनवाज सडक की तरफ चला गया।

चड्डा बिस्तर पर लेटा था। ऐसा मालूम होता था कि वह एक क्षण के लिये भी नही सोया था। मैंने उससे मम्मी के बारे मे पूछा तो उसने मुस्कराकर कहा– "चली गई · · सुबह की गाड़ी से उसे पूना छोड़ना था।"

मैंने पूछा-- "मगर क्यो ?"

चड्डे के स्वर मे तल्खी आ गई-- "हुकूमत को उसकी अदाये पसन्द नही थी। उसका रहन सहन पसन्द नही था। उसके घर की महफिले उसकी नजर मे आपत्ति जनक थी। इस लिये कि पुलिस उसका वात्सल्य और प्रेम ··· जमानत के रूप में लेना चाहती थी · वह उसे माँ कहकर एक दल्लाला का काम लेना चाहते थे। एक अरसे से उसका एक केस जाच मे था। आखिर हुकूमत, पुलिस की तहकीकात से

सन्तुष्ट हो गई और उसको तडी पार कर दिया ... शहरबदर कर दिया ... वह अगर कुटनी थी, दल्लाला थी – उसका अस्तित्व सोसायटी से लिये घातक था तो उसका खात्मा करदेना चाहिये था-- पूना की गन्दगी से यह क्यो कहा गया कि तुम यहाँ से चली जाओ और जहाँ चाहो ढेर हो सकती हो।" चड्डे ने वडे जोर का क़हक़हा लगाया और थोडी देर खामोश रहा। फिर उसने वड़े भावुक स्वर मे कहा– "मुझे अफसोस है, मण्टो कि उस गन्दगी के साथ एक ऐसी पवित्रता चली गई है जिसने उस रात मेरी एक बडी गलत और शपवित्र तरंग को मेरे दिल व दिमाग से धो डाला – लेकिन मुझे अफसोम नही होना चाहिये ... वह पूना से चली गई है। .. मुझ जैसे जवानो मे ऐसी गलत और अपवित्र तरगे वहाँ भी पैदा होगी जहाँ वह अपना घर बनायेगी ... मै अपनी मम्मी उनके सुपुर्द करता हूँ – जिन्दावाद, मम्मी .. जिन्दावाद। चलो गरीवनवाज को ढूढे। रो रो कर उसने अपनी जान हलकान करली होगी -- इन हैदराबादियो की आँखो का मसाना वहुत कमजोर होता है -- वक्त वेवक्त टपकने लगता है।

मैने देखा, चड्डे की आखो मे आँसू इस तरह तैर रहे थे, जिस तरह मकतूलो की लाशे।